एस . वाय . बी . ए .

सामान्य हिंदी

इकाई – 1
उसने कहा था
चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'

अनुक्रम

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 विषय – विवरण
कहानी – उसने कहा था
1.2.1 – उसने कहा था : के पात्र एवं चरित्र चित्रण
1.2.2 – कथोपकथन
1.2.3 – वातावरण
1.2.4 – भाषा–शैली
1.2.5 – उद्देश्य
1.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न
1.4 सारांश
1.5 शब्दार्थ
1.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य
1.7 अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

* कहानीकार गुलेरी की मनोवैज्ञानिक विचारधारा को समझेंगे ।
* इस कहानी में व्याप्त उदात्त प्रेम और त्याग की भावना से परिचित होंगे ।
* मानवीय उदात्त मूल्यों के आदर्शों से परिचित होंगे।

1.1 प्रस्तावना

चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म जयपुर में एक प्रसिद्ध पंडित घराने में हुआ था । वे संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे । अंग्रेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले इस विद्वान् को देशी–विदेशी अनेक भाषाओं का ज्ञान था ।

उनकी शिक्षा जयपुर में हुई । काशी– विश्वविद्यालय के ओरटियल कॉलेज में सन् 1920 में वे प्रिन्सिपल रहे । काशी में ही नागरी – प्रचारिणी सभा के वे सभापति थे । सन्

1977 में उनका स्वर्गवास हुआ । इस लघु जीवन काल में उन्होंने कम साहित्य का सृजन किया किंतु उससे ही वे हिंदी साहित्य में अपना अमर स्थान बना सके । उसने कथा था, सुखमय जीवन, बुध्दू का कांटा ही उनकी कहानियाँ हैं । प्रेम और त्याग भावना पर आधारित 'उसने कहा था' कहानी लोकप्रिय है । इस कहानी के संदर्भ में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है – ''प्रेम के बारीक तारों से बुनी, बेहद संजीदा और कलात्मक कहानी जिसे उचित ही कई लेखक और आलोचक अपने समय से बीस साल आगे की कहानी मानते हैं, आज भी जिसका आस्वाद फीका नहीं पड़ा । इसी उस्तादानफ़न के कारण गुलेरी सिर्फ तीन कहानियाँ ('उसने कहा था', 'सुखमय जीवन' और 'बुध्दू का कांटा') लिखकर हिंदी के अमर कथाकार हो गये ।'' स्पष्टतः 'गुलेरी की उसने कहा था' कहानी हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का परिचय देती है ।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित 'उसने कहा था' कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन न होकर उदात्त प्रेम का प्रस्तुतिकरण है । सुप्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार इस 'कहानी में स्वर्गीय प्रेम झाँक रहा है । निर्लज्य होकर पुकार नहीं रहा ।' तात्पर्य है कि, कहानी में अभिव्यक्त प्रेम त्याग से पुष्ट हुआ है । संपूर्ण कहानी मानव के उदात्त स्वभाव का दिग्दर्शन कर प्रेम की सर्वश्रेष्ठता की ओर संकेत करती है ।

कहानी का नायक लहना सिंह अपने बचपन में कभी एक बालिका से मन ही मन प्रेम करता था । कालांतर में वह लड़की उसके सूबेदार की पत्नी बनी । जिसने लाम् पर जाते हुए लहना सिंह से यह निवेदन किया कि वह उसके पति और पुत्र की रक्षा करें । लहना सिंह युद्ध के मैदान में अपने प्राणो का उत्सर्ग कर सूबेदार और उसके पुत्र बोधा को बचाता है । इस प्रकार सूबेदारनी ने जो कुछ कहा था लहना ने पूरा किया है । कहानी का उद्देश्य प्रेम और कर्तव्य की उदात्तता सिद्ध करना है ।

1.2 विषय – विवरण

कहानी – उसने कहा था

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसे कहा था' का प्रारंभ अमृतसर के बम्बूकार्ट बाजार के वर्णन के साथ होता है । गुलेरी के समय अमृतसर की शान अलग थी । यहाँ बाजार में ताँगे चलते थे, ताँगेवाले अत्यंत मधुर स्वर में 'बचो खालसा जी', 'हटो माइजी', 'ठहरना माई', 'आने दो लालाजी', और 'हटो बादशाह', की पुकार लगाते हुए ताँगे चलाते थे । 'जी' और 'साहब' उनके संबोधन थे । ऐसे अमृतसर के बाजार में एक लड़का और एक लड़की चौक की एक दुकान पर आ मिलते हैं । दोनों सिख है, लड़का मामा के बाल धोने के लिए दही और लड़की रसोई के लिए बड़िया लेने आई थी । वही दोनों का परिचय होता है। सौदा लेने के बाद दोनों साथ- साथ चलते हैं । कुछ दूर जाने पर लड़का मुस्कुराकर पूछता है 'तेरी कुडमई हो गई?' इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत्' कहकर भाग जाती है । इसके बाद हर दूसरे-तीसरे दिन बाजार में दोनों मिलते हैं । लड़का प्रश्न पूछता

है और लड़की 'धत्' कहकर भाग जाती । एक दिन लड़के ने हँसी में चिढाते, हुए पूछा तो लड़की ने लड़के की संभावना के विरूद्ध कहा –''हॉ, हो गई । देखते नहीं यह रेसम से गढ़ा हुआ सालू ।'' जिसे सुनते ही लड़का उदास हो गया ।

कुछ दिनों बाद लड़का – लहना सिंह मिलट्री में भर्ती हो गया है । लाम पर जाते समय सूबेदार उसे संदेश भेजते है कि मेरे गाँव से होकर जाना । साथ–साथ चलेंगे । इसलिए लहना सिंह सूबेदार के घर पहुँचता है । तब सूबेदार उसे बताता है कि सूबेदारनी उसे पहचानती है । इसलिए वह जाकर उससे मिल ले । लहना सिंह आश्चर्य में पड़ गया। उसने दरवाजे पर पहुँचकर मथ्था टेका । सूबेदारनी ने पूछा मुझे पहचना?'' लहना सिंह के नहीं कहने पर वह इतना ही बोली कि– ''तेरी कुडमई हो गई । धत् कल हो गई --- देखते नहीं रेशमी बूटों वाला सालू, अमृतसर में ।'' सूबेादारनी ने यह भी कहा कि मैंने तेरे को आते ही पहचना लिया था । एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गये । सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, एक बेटा है, जो एक वर्ष पूर्व फौज में भर्ती हुआ है उसके पीछे चार बच्चें और हुए पर एक भी नहीं जिया । पति और बेटा बोधा सिंह दोनों युद्ध के लिए जा रहे हैं । एक दिन तुमने मुझे ताँगे के नीचे आते–आते बचाया था । ऐसे ही मेरे पति और बेटे बोधा दोनों को बचाना । यह मेरी भिक्षा है , तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ । युद्ध के मैदान में लहना सिंह का अंत तक यह प्रयत्न रहा कि वह सूबेदार और बोधा को बचाये ।

जर्मन फौज अंग्रेजों पर भारी पड़ रही है । भारतीय सैनिक अंग्रेजों के सैनिक है । खंदक में पानी भरा है, बेहद ठंड है, लहना सिंह अपने दोनों कंबल बोधा सिंह को ओढ़ा देता है और स्वयं सिगरी के पास बैठा रहता है । जाड़ा क्या है, मानो मौत । बोधासिंह को फिर भी ठंड लग रही है इसलिए लहना सिंह अपनी जर्सी उसे पहना देता है । तभी सूबेदार हजारा सिंह को कोई खंदक के बाहर से पुकारता है और आदेश देता है कि इसी समय धावा करना होगा । मील भर की दूर पर पूरब में एक जर्मन खाई है । जिसमें पचास से ज्यादा जर्मन नहीं हैं । तुम यहाँ इस आदमी छोड़कर वहाँ जाकर आक्रमण करों । बोधासिंह चलने को तैयार हुआ परंतु उसे रोक दिया गया और सूबेदार ने बाकी लोगों के साथ मार्च किया । उस आने वाले ऑफिसर ने लहना सिंह की ओर हाथ बढ़ाकर उसे सिगरेट देते हुए कहा कि ''तुम भी पीओ, सिंगडी के उजाले में लहना सिंह ने साहब का चेहरा देखा, उसका माथा ठनका और वह समझ गया कि यह उसके साहब नहीं है । जर्मन ऑफिसर है ।''

उसने उसे छेड़ते हुए पूछा कि क्यों साहब, हम हिंदुस्तान कब जायेंगे? क्योंकि वहाँ शिकार के मजे हैं । उन्हें याद होगा कि गये वर्ष नकली लड़ाई लड़ते हुए हम जगाधारी के जिले में शिकार करने गये थे । वही पर खानसामा अब्दुल्ला मंदिर में जल चढ़ाने के लिए रह गया तभी सामने से नील गाय निकली और आपने उसे गोली मारी । ऐसे अफसर के साथ शिकार खेलने में मजा है । उस गाय के सिंग तो दो–दो फिट के होंगे । लहना सिंग सिगरेट पीने के बहाने खंदक में घुसा और अंदर वजीरा सिंह से कहा कि ''होश में आओ कयामत आई है और लपटन साहब की वर्दी पहनकर आई है।'' लपटन साहब या तो मारे गये हैं या

फिर कैद हो गये हैं । उनकी वर्दी पहनकर कोई जर्मन आया हैं । तुम एक काम करो लपटन साहब के पैरों के निशान देखते - देखते दौड़ जाओ और खंदक की ओर गई हुई सेना को आगाह करो ।''

वजीरा सिंह ने कहा कि- ''यहाँ तो तुम आठ हो'' तब लहना सिंह ने कहा- ''आठ नहीं दस लाख, एक-एक अकालिया सिक्ख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ ।'' लौटकर लहना सिंह ने देखा कि वह नकली लपटन साहब जेब से गोले निकालकर खंदकों की दीवारों पर लगा रहा है और एक तार-सा बांध रहा है । तभी लहना सिंह ने बंदूक उठाकर साहब की कोहनी पर मारा । लहना ने तीनों गोले निकालकर खंदक के बाहर फेंके और साहब के जेबों की तलाशी ली । तीन - चार लिफाफे और एक डायरी निकालकर अपनी जेब में रखी । साहब की मूर्छा हटी तब लहना सिंह हँसकर बोला ''क्यों लपटन साहब मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत-सी बातें सीखी । यह कि ''सिक्ख सिगरेट पीते हैं, यह सीखा कि जगाधारी के जिले में नील गायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सिंग होते हैं । यह सीखा कि मुसलमान खानसामा, मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं।'' तभी लपटन साहब ने जेब से पिस्तौल निकाली और गोली चलायी और जो लहना सिंह के जाँघ में लगी । लहना सिंह ने भी दो फायर किए और साहब की कपाल-क्रिया करी दी।

खंदक में से सभी दौड़कर आए, लहना सिंह ने इतना ही कहा कि -''कुछ नहीं एक हड़का हुआ, कुत्ता आया था मार दिया ।'' लहना सिंह ने साफा फाड़कर घाव के दोनों तरफ पट्टियाँ कसकर बाँध ली, तभी सत्तर जर्मन सैनिकों ने खंदक पर आक्रमण किया । उनके पीछे साहब के आदेश पर बाहर गए हुए भारतीय सैनिक भी लौट आए और उन्होंने भी पीछे से जर्मन सैनिकों पर आक्रमण किया । इस लड़ाई में तिरसठ जर्मन मारे गए । सिक्खों में पंद्रह के प्राण गए । सूबेदार के कंधे में धसी गोली आर-पार निकल गई थी । लहना सिंह को भी पसली में एक गोली लगी । उसने घाँव को खंदक की मिट्टी से पूर दिया । किसी को खबर नहीं हुई कि लहना का दूसरा घाव-भारी घाव हैं ।

डॉक्टर और ऍम्बुलन्स आ गई । लहना सिंह ने सूबेदार और उनके पुत्र बोधासिंह को गाड़ी में चढ़ा दिया और कहा कि -''उसे कुछ नहीं हुआ है परंतु लहना सिंह को छोड़कर सूबेदार जाना नहीं चाहते थे।'' तब लहना सिंह ने कहा कि ''तुम्हें बोधा की कसम है और सूबेदारनी की सौंगध, इस गाड़ी से चले जाओ । मेरे लिए दूसरी गाड़ी आ जाएगी । सुनिए सूबेदारनी हीरा को चिट्ठी लिखों तो मेरा मत्था टेकना लिख देना । जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे उन्होंने जो कहा था वह मैंने पूरा कर दिया ।'' सूबेदार ने चलते हुए लहना सिंह का हाथ पकड़कर कहा कि - ''तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाए, पत्र लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे अपनी सूबेदारनी से तुम ही कह देना उसने क्या कहा था।'' गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया और उसने वजीरा को कहा कि -''मुझे पानी पिला दो ।''

वह मरणासन्न है । मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है । जन्म भर

की घटनाएँ और प्रसंग एक-एक करके चलचित्र के रूप में साकार होने लगते हैं । सारे दृश्यों के रंग साफ होने लगते हैं । समय की धुंद उन से हट जाती है । लहना सिंह को स्मरण हो आया कि बचपन में उसे बाजार में एक आठ वर्ष की लड़की मिली थी और वह उसे चिढ़ाता था । फिर देखते ही देखते वर्ष के बाद वर्ष बीतते गए । लहना सिंह नं. 77 राइफल्स में जमींदार होकर सैनिकी कर्तव्य मे लीन हो गया । उसे उस आठ वर्षीय कन्या का ध्यान न रहा जो अब सूबेदारनी है । लहना सिंह ने वजीरा सिंह से फिर पानी माँगा । मरते समय उसे लगा कि उसका सिर वजीरा सिंह की गोद में नहीं अपने भाई करतार सिंह की गोद में है । वह उससे कहने लगा ''-अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा, चाचा-भतीजा यही बैठकर आम खाना । जिस महीने उसका जन्म हुआ था उसी महीने मैंने इसे लगाया था ।'' कुछ दिनों बाद लोगों ने अखबारों में पढ़ा - फ्रान्स, और बेल्जियम-अड़सठवीं सूची-मैदान में धावों से मरा - नं. 77 सिख राइफल्स जमींदार लहना सिंह ।

यह कहानी प्रेम की श्रेष्ठता और उसके लिए किसी बचपन के प्रेमी के त्याग और बलिदान को व्यक्त करती है । आठ वर्ष की बालिका के बाल-सुलभ प्रेम में लहना सिंह जो कुछ कर गुजरता है, वह बेमिसाल है ।

1.2.1 उसने कहा था के पात्र एवं चरित्र चित्रण

चंद्रधर शर्मा गुलेरी में चरित्र चित्रण की अपूर्व क्षमता थी । सूक्ष्म रेखाओं और सरल विवरणों से चरित्र का बाह्य और आंतरिक सौंदर्य स्पष्ट करने में गुलेरी बड़े सिद्धहस्त थे । उनकी कहानियों के चरित्र मानवीय यथार्थ में पूर्ण थे, उनमें आदर्श भी था । उनके पात्र प्रेम, त्याग, कर्तव्य जैसे सामाजिक, नैतिक दायित्वों को निभानें में सक्षम हैं । उसने कहा था' का लहना सिंह और सूबेदारनी ऐसे ही विशिष्ट चरित्र हैं । प्रेम के उत्सर्ग में प्राण-त्याग करने वाला लहना हिंदी कहानी साहित्य का प्रेरणादायी अमर पात्र बन गया है ।

*** लहना सिंह**

'उसने कहा था कहानी में प्रमुख पात्र या नायक लहनासिंह है । जिसे गुलेरीजी ने यथार्थ और आदर्श के धरातल पर कुछ ऐसा गढ़ा है कि वह हिंदी कहानी साहित्य का अमर पात्र बन गया है । किशोर लहना एक बालिका के प्रति आकर्षित हो जाता है । इस आकर्षण में सहजता और मधुरता है। लहना सिंह के प्रेम, कर्तव्य, वीरता और चातुर्य का उभरा रूप उसके चरित्र में दृष्टिगत होता है । लहना तगड़ा जवान-सिपाही है जो ब्रिटिश सेना में नं. 77 सिक्स राइफल में जमादार है । संपूर्ण कहानी उसके ईर्द-गिर्द बुनी है । लहना बचपन से ही साहसी है इसलिए ताँगे के नीचे आनेवाली एक लड़की को बचाता है । जिसको वह तेरी कुड़माई हो गयी'? जैसा प्रश्न पूछ-पूछकर सताता है । इस लड़की के प्रति उसके मन में कोमल भावना उत्पन्न होती है । प्रौढ़ावस्था में इसी लड़की को वह सूबेदारनी के रूप में देखता है। सूबेदारनी प्रार्थनायुक्त करुण स्वर में लहना को कहती है - ''तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे । आप घोड़े की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकार तख्ते पर खड़ा कर दिया था । ऐसे ही इन दोनों को बचाना, यही मेरी भिक्षा है ।'' सूबेदारनी की इस भिक्षा में प्रेम का

आग्रह है । सूबेदारनी की स्वप्न पूर्ति के लिए लहना उसके पति और पुत्र की युद्ध में रक्षा करता है और स्वयं का बलिदान कर देता है ।

फ्रान्स में दलदल और ठंड में जब बोधासिंह बीमार हो जाता है तब लहना उसकी ड्युटी देता है। अपने दोनों कम्बल, बरानकोट, जरसी बोधा को देकर स्वयं खाकी कोट और जिन का कुर्ता पहनकर पहरे पर खड़ा रहता है । जर्मनों के साथ संघर्ष में लहना सिंह बुरी तरह जख्मी हो जाता है परंतु बोधा को पहली खेत में अस्पताल पहुँचाता है । इसी प्रकार वह हजारा सिंह की रक्षा करता हुआ प्रेम और कर्तव्य का निर्वाह करता है ।

लहनासिंह युद्ध कला में कुशल है । आदमी को परखने की कला उसमें है । निर्णय क्षमता है, इसी कारण वह अपने शत्रु-जर्मन लेफ्टनंट की चाल को तुरंत पहचान लेता है और एक-दो प्रश्न के द्वारा उसके असली रूप को जान लेता है । लहना साहसी और वीर है । वह मानता है कि एक-एक अकालिया सिक्ख सवा लाख के बराबर होता है । उसके चरित्र में एक वीर सैनिक की दृढ़ता है। इसीलिए लहना सिंह के कर्तव्यप्रधान प्रेम मे यथार्थ का पुट दिखाई देता है । वह नं. 77 राइफल्स् में जमादार है । फ्रान्स की भूमि पर जर्मनों से युद्ध करता है । युद्ध क्षेत्र में वह कहता है - ''एक घाव हो जाए तो गरमी आ जाए'' क्योंकि उसकी मान्यता है कि ''बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही' उसका यह कथन उसमें निहित वीरता का आत्मगौरव ही है ।

लहना सिंह भावुक व्यक्ति है । मृत्यु से पहले की स्मृति में उसकी भावुकता का परिचय मिलता है । वह अपने घर से, बच्चों से प्यार करता है । वह फ्रान्स की भूमि पर मरा, परंतु उसकी संवेदनाशीलता और भावुक कल्पना ने उसे अपने घर पहुँचा दिया ''चाचा भतीजा दोनों यही बैठकर आम खाना'' वाक्य से ही उसकी भावुकता स्पष्ट है ।

यथार्थ की परिधि को न काटते हुए लहना सिंह कई युगों तक प्रेरणा के रूप में हिंदी कहानी साहित्य का अमर पात्र बना रहेगा ।

सूबेदारनी

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' में सूबेदारनी परंपरागत भारतीय नारी के रूप में उभारी है । जो अपने पति और पुत्र के प्राण रक्षा के लिए अपने बचपन के साथी लहना से भीख माँगती है । अमृतसर के कोलाहल से भरे बाजार चौक की दुकान पर एक आठ वर्षीय सिक्ख बालिका सिख लड़के से मिलती है । बारह वर्ष का लहना सिंह उस लड़की से विनोद में पूछता है - ''तेरे कुड़माई हो गई ?'' लड़की स्वाभाविक लज्जा से 'धत्' कहकर भाग जाती है । इस प्रसंग से स्त्री-सुलभ लज्जा-भाव उभर आता है । बालिका के कथन में विनोद के साथ-साथ आकर्षण भी है । एक दिन वह लड़के के प्रश्न के उत्तर में कहती है - ''हाँ, हो गई ... कल, देखते नहीं रेशम के बूटोवाला सालू ।''

एक चंचल बालिका के रूप में सूबेदारनी सामने आती है । प्रौढावस्था में एक अच्छी पत्नी के रुप में, ममतामयी माँ के रूप में पति और पुत्र की प्राणरक्षा के लिए लहना सिंह के सामने उनके प्राणों की भीख मांगती है और बचपन वाले प्रसंग की याद दिलाती है कि - ''मैंने

तो तेरे को आते ही पहचान लिया । एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गए । सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है । लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक हलाली का मौका आया है पर सरकार ने हम तीमियों की घँघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती? एक बेटा है । फौज में भर्ती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ । उसके पीछे चार हुए पर एक भी न जीया ।'' वह रोते हुए कहती रही –

''अब दोनों जाते हैं । मेरे भाग । तुम्हें याद है, एक दिन तांगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था । तुमने उस दिन मेरे प्राण बँचाए थे । आप घोडों की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तक्खे पर खड़ा कर दिया था । ऐसे ही इन दोनों को बचाना । यह मेरी भिक्षा है । तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ ।'' आखें पोछती हुई सूबेदारनी ओबरी में चली गई ।

एक वात्सल्यमयी माता एवं पतिपरायण पत्नी के रूप में सूबेदारनी सामने आती है ।

कहानी में इसके अलावा वजीरा सिंह सूबेदार, बोधी सिंह, लपटनसाहेब, और हजारा सिंह आदि पात्रों का प्रसंगानुसार उपयोग किया गया है । भले ही अन्य पात्र गौण रूप में आए हैं किंतु कथा के विकास में सभी सहायक बने हैं ।

1.2.2 'उसने कहा था' में कथोपकथन

संवाद या कथोपकथन से कहानी मे सजीवता या नाटकियता का समावेश होता है । 'उसने कहा था' कहानी के संवाद, पात्र ओर परिवेश के अनुकूल हैं । उनमें सरसता, संक्षिप्तता, चरित्रोद्घाटन, कथानक प्रसारण क्षमता एवं रोचकता है । संवादों में क्षिप्रगति और भाषा की प्राजंलता दृष्टिगत होती है । सुमधुर हास्य, सहज विनोद, मार्मिक व्यंग्य गुलेरीजी के संवादों की अपनी विशेषता है । पात्रों की सजीवता और स्वाभाविकता का दायित्व गुलेरीजी की संवाद कला पर ही है । अधिकांश संवाद संक्षिप्त और साभिप्रायिक है । लहन सिंह के लड़की के साथ संवाद कौतुहल पूर्ण हैं । रणक्षेत्र के संवाद परिस्थिति की अवधारणा करते हैं । 'उसने कहा था' के अधिकांश संवाद मूल संवेदना को प्रेक्षणीय बनानें मे सहायक सिद्ध हुए हैं जैसे –

'तेरे घर कहाँ है?'

'नगरे में – और तेरे?'

'माँझे में'– 'यहाँ कहाँ रहती है?'.....

''अतरसिंह' की बैठक में, वे मेरे मामा होते है ।''

''मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ । उनका घर गुरू बजार में है ।''

दुकानदार ने इन दोनों का सौदा निबटाया । दोनों साथ–साथ चले । कुछ दूर जाकर लड़के ने पूछा – ''तेरी कुड़माई हो गई ।'' इस पर लड़की ने आँखें चढकार ''धत्'' कह कर दौड़ गई ।

महीने भर दोनों ऐसे ही बातें करते रहे । एक दिन जब लड़के नें हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो वह बोली – ''हाँ, हो गई ।''

''कब?''

''कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढा हुआ सालू ।'' और वह भाग गई ।

सर्दी के दिनों में लहना सिंह, बोधासिंह खाई में बैठकर पहरा देते समय के संवादों में लहना की हमदर्दी, मदद करने की भावना स्पष्ट है - ठंड से बोधा सिंह कराहा ।

''क्यों बोधा भाई क्या है?''

''पानी पिला दो ।''

''कहो कैसे हो ।''

''कँपकँपी छूट रही है । .... दाँत बज रहे है ।'' बोधा ने कहा ।

''अच्छा, मेरी जरसी पहलो ।''

''और तुम ?''

''मेरे पास सिगड़ी है मुझे गरमी लगती है, पसीना आ रहा है ।''

''ना, मैं नहीं पहनता चार दिन से तुम मेरे लिए ...''

''हाँ याद आई । मेरे पास दूसरी गरम जरसी है । आज सबेरे ही आई है । विलायत में मेमें बुन- बुनकर भेज रही हैं । गुरू उनका भला करें ।''

सिगड़ी के उजाले में लहना ने साहब का चेहरा देखा । उसका माथा ठनका । लपटन साहब को वह जाँचना चाहता है । लहना सिंह कहता है - ''क्यों साहब, हम लोग हिंदुस्तान कब जाएंगे ।''

'लड़ाई खत्म होने पर! क्यों, क्यों, यह देश पसंत नही?' वजीरासिंह से टकराते हुऐ लहना न कहा - ''होश में आओ! कयामत आई और लपटन साहब की वर्दी पहनकर आई है? '' ''क्या?''

शायद यह जर्मन है किंतु उर्दू में बात कर रहा है । लहना ने तीन गोले खंदक के बाहर फेंके । साहेब के जेब से पिस्तौल चला, लहना की जांघ मे गोली लगी, सूबेरदार के कंधे में से गोली आई-पार निकल गई। सूबेदार ने लहना को पट्टी बांधी । उसे छोड़कर वह नहीं जाता, कहता है - ''तुम्हें बोधा की कसम है और सूबेदारनी की सौगंध है इस गाड़ी में चले जाओ ।'' ''नहीं जर्मन मुर्दों के लिए गाडियाँ आती होंगी, मेरे पास वजीरासिंह है । सूबेदारनी हीराँ को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना'' और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उन्होंने कहा था, वह मैंने कर दिया ।''

बोधा ने कहा - ''तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाएँ है । लिखना कैसा ? साथ ही घर चलेंगे । अपनी सूबेदारनी से तुम ही कह देना उसने क्या कहा था ?''

लहना ने बोधासिंह के गाड़ी पर चढ़ जाने के लिए कहा और स्वयं लेट गया । ''वजीरा पानी पिला दे और मेरा कमरबंद खोल दे । तर हो रहा ।'' उसके घाव से खून बह रहा था । जीवन भर की सारी घटनाएँ दृश्य उसकी आँखों के सामन स्मृति के रूप में उभरने लगे ''तेरी

कुड़माई हो गई ।'' ''धत्'' वाला प्रसंग याद आया । स्वप्न चल रहा था । सूबेदारनी कह रही थी ''उसके एक बेटा है जो एक साल पहले ही फौज में भर्ती हुआ है । उसके बाद चार हुए पर एक भी नहीं जीया, अब दोनों जाते हैं । मेरे भाग! तुम्हें याद है ... तुमने मेरे प्राण बचाये थे । आप घोडों की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था । ऐसे ही इन दोनों को बचाना । यह मेरी भिक्षा है । तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ ।''

लहना ने मूर्छा खत्म होते ही कहा – ''वजीरा, पानी पिला दे ! बस ।'' कुछ दिनों बाद अखबारों में पढ़ा – फ्रान्स और बेलजियम– मैदान में घावों से मरा सिक्ख राइफल्स जमादार लहनासिंह ।

कहानी के संवाद, संक्षिप्त, मर्मस्पर्शी, प्रभावोत्पादक हैं । इनसे पात्रों के स्वभाव, मनःस्थिति का पता चलता है और कथा विकास में सहायक बने हैं ।

1.2.3 **कहानी का वातावरण**

देश–कल और स्थितिओं की जानकारी से ही स्वाभाविक यथार्थ वातावरण की निर्मिति होती है । गुलेरीजी ने 'उसने कहा था' कहानी के द्वारा अमृतसर के बाजार का हूबहूब वर्णन किया है ।

अमृतसर के बम्बू कार्टवाले चौक की सड़को पर इक्के गाड़ी वालों की बोली, घोड़ों की पीठ कोडों के कारण छिल गई है । चाबुक से घोड़ों की पीठ पर कोड़े जमाते हुए घोड़े की नानी से अपने संबंध स्थिर करते हैं । पैदल चलने वालों पर तरस खाते हुए – ''बचो खालसा जी, हटो माई जी, ठहरना भाई, आने दो लाला जी, हटो बाछा कहते हुए सफेद फेंटों, खच्चरों और बतकों, गन्ने, खोमचे और भारे वालों के जंगल में रहा लेते हैं क्या मजाल कि 'जी' और 'साहेब' बिना सुने किसी को हटना पड़े ।'' अगर कोई बुढिया हटती नहीं तो उसे बार–बार चेतावनी देते हुए कहते हैं – ''हट जा जीणे जोगिये, हट जा करमा वालिए, हट जा पुत्तां प्यारिए, हट जा लम्बी उमर वालिए । अर्थात् तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी अमरवाली है, तू क्या मेरें पहिओं के नीचे आना चाहती है ।'' तांगेवालों का बर्ताव और बाजार की चहल–पहल का यह वर्णन है ।

युद्ध भूमि का वर्णन कल्पानातीत है । बोधासिंह और लहनासिंह खंदक में पहरा दे रहे थे । नकली लपटन साहब को लहना ने पहचान लिया और साहब पर उल्टी बंदूक जमा दी । उसकी हाथों से दिया सलाई गिर पड़ी । लहना ने उसकी जेब से तीन गोले निकालकर खंदक के बाहर फेंक दिए । जेबों की तलाशी ली । तीन–चार लिफाफे और एक डायरी निकाल कर रख ली । साहब के पिस्तौल की गोली लहाना को लगी ।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े । सिक्खों की बंदूकों की बाढ़ ने पहले धावे को रोका पर यहाँ वे आठ और वे सत्तर अपने मुर्दा भाइयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुसे ।

अचानक आवाज आयी ''वाह गुरूजी दी फतह ।'' और धड़ा–धड़ बंदूकों की फायरिंग जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे । पीछे से सूबेदार हजारा सिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने

लहना के साथियों के संगीन चल रह थे । सूबेदार के कंधे में और लहना की पसली में गोली लगी – यह दूसरा घाव भारी था ।

लड़ाई के समय चांद निकल आया । ऐसे चांद के प्रकाश से संस्कृत के कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसे कि बाणभट्ट की भाषा में ''दन्तवीणोपदेशाचार्य'' कहलाती । वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन–मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा–दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था ।

लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर की खाई वालों ने सुन ली थी । उन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था । वहाँ झटपट सें गाड़ियाँ और डाक्टर डेढ़ घंटे के अंदर आ पहुँचे । फील्ड अस्पताल नजदीक था । सुबह होते ही पहुँच जायेंगे, इसलिए मामूली पट्टी बांधकर एक गाड़ी में घायलों को तो दूसरी गाड़ी में लाशें रखी गई । बोधासिंह ज्वर में बर्रा रहा था । उसने लहना को भी गाड़ी में आने का आग्रह किया । क्योंकि उसके और उसके बेटे की जान लहना ने बचाई थी ।

इस प्रकार फ्रान्स की युद्ध भूमि पर हो रही लड़ाई का जीता जागता वर्णन लेखक की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक है । सिक्ख सभ्यता और भाषाशैली का अनेक स्थानों पर प्रयोग करके कहानी का वातावरण यथार्थ एवं स्वाभाविक बन गया है । प्राकृतिक दृश्यों के साथ ही मानवीय भावनाओं–संवेदनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के कारण घटनाएँ साक्षात् आँखों के सामने खड़ी हो जाती हैं । संवाद–कथनादि में कहानीकार की लेखनी जबर्दस्त रही है ।

1.2.4 **कहानी की भाषाशैली**

''उसने कहा था'' की भाषा में ओजव प्रसाद गुणों के साथ–साथ सरलता, व्यंजकता, सरसता, सुबोधता, सहजता एवं प्रवाहत्मकता दृष्टिगत होती है । भाषा की दृष्टि से गुलेरीजी का अद्वितिय स्थान हिंदी कहानी साहित्य में स्वीकार किया जाता है । गुलेरीजी कई भाषाओं के ज्ञाता, भाषा विज्ञान के विद्वान, और संस्कृत के प्रकांड पण्डित थे । उन्होंने 'उसने कहा था' कहानी में पात्रों के अनुकूल भाषा की सृष्टि की है । उनकी भाषा में सरलता है, पात्रों एवं स्थितियों का साक्षात्कार करने की क्षमता है।

अमृतसर के वर्णन में फ्रान्स की युद्धभूमि में भाषा चित्रात्मक बन पड़ी है । उर्दू, हिंदी, संस्कृत के अतिरिक्त स्थानीय शब्द भी प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं जैसे – बचो खालसाजी, हठो बादशाह, आदि शब्दों का प्रयोग, इसी प्रकार हठ जा जीति जोगिए, हठ जा कर्मावालियो, हठ जा पुत्ताप्यारिये, हठ जा लंबी उमरवालिएं, जैसे पंजाबी शब्द के प्रयोग से भाषा जानदारी बनी है । 'कुड़मई', 'मत्था टेकना', 'हड्डियों में जाड़ा धँस गया' आदि भाषा प्रयोग से कहानी का वातावरण स्वाभाविक बना है । कहानी की भाषा में व्यंगात्मक एवं हास्य का पुट भी दिखाई देता हैं । 'उसने कहा था' की भाषा का स्वरुप सर्व जनसुलभ एवं सर्वग्राह्य है । शब्दावली में हिंदी और उर्दू आँचलिकता का प्रभाव भी है । आवश्यकतानुसार अंग्रेजी, तथा तत्सम, तद्भव शब्दों के प्रयोग से भाषा में निखार भी आया है । समग्रतः 'उसने कहा था' की भाषा में भाव व्यंजना और लाक्षणिकता का सुंदर समन्वय परिलक्षित होता है ।

कहानी के शिल्प विधान की दृष्टि से गुलेरी को नूतनता का 'जनक' कहा जा सकता है । 'उसने कहा था' की शैली में भाषा प्रवाह एवं व्यंजकता के साथ हास्य विनोद तो है साथ ही उसमे अविलक्षण अद्‌भुत शिल्प-विधान भी है, जो गुलेरी की सिद्धहस्त क्षमता का उद्‌घाटन करता है । शैली की दृष्टि से उनकी यह तीसरी कहानी पूर्ण विकसित मानी जा सकती है । उनकी समग्र शैली में सरसता है, रोचकता है । 'उसने कहा था' का शिल्प विधान इतनी उत्कृष्ट कोटि का बन पड़ा है कि यह कहानी बहुत आगे तक हिंदी की श्रेष्ठतम कहानियों में अपना कालजयी स्थान सिद्ध करती रहेगी ।

1.2.5 'उसने कहा था' का उद्देश्य

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' लक्ष्यपरक कहानी है । जीवन के नैतिक मानदंडों के माध्यम से प्रेम की उदात्त अभिव्यंजना पर बल देना, आदर्श प्रेम और कर्तव्य को सामाजिक धरातल पर प्रतिष्ठित करना 'उसने कहा था' का मूल उद्देश्य है । कहानी में अभिव्यक्त प्रेम में नैतिकता है ? जिसकी पावनता, उच्चता स्वयं सिद्ध है क्योंकि संपूर्ण कहानी विशुद्ध निस्वार्थ प्रेम पर आधारित है । यहाँ प्रेम की स्वीकारोक्ति मौन में है जो 25 वर्ष बाद मुखर हुआ है जो प्रति दिन नहीं चाहता ।

गुलेरीजी ने लहना सिंह के माध्यम से प्रेम और कर्तव्य की उच्च भूमि पर आदर्श की प्रतिष्ठा की है । उसमें समाज, व्यक्ति, व वर्ग तीनों का सम्मिलित रूप है । कर्तव्य की वेदी पर प्राणोत्सर्ग करने वाले और अपने प्रेम को चढ़ा देने वाले लोग विरले होते हैं । अधिकांश लोग प्रेम को अधिकार वश करने के आग्रही होते हैं । गुलेरीजी का लहना सिंह प्रेम को पाने में नहीं, अपितु प्रेम को शुद्ध-पवित्र समझकर कर्तव्य का निर्वाह करता हुआ दिखाई देता है। अपने प्राणों का उत्सर्ग करते हुए उसने अपने प्रेम को उज्वल रुप प्रदान किया है । गुलेरी ने प्रेम की उदात्त अनुभूति को कर्तव्यपूर्ति में बाधक न मानते हुए सहायक ही माना है । गुलेरीजी ने लहना सिंह के माध्यम से प्रेम और कर्तव्य के प्रति त्याग की उदात्त भावना को व्यक्त किया है ।

1.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* अमृतसर के बाजार का वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

* लहनासिंह ने नकली लपटन साहब को कैसे पहचाना है?

.....

.....

.....

* 'उसने कहा था' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* लहनासिंह ने अपने प्रेम की परीक्षा किस प्रकार दी?

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* लहनासिंह

.....

.....

.....

* कहानी का वातावरण

.....

.....

.....

* सूबेदारनी

.....

.....

.....

* कहानी का उद्देश्य

.....

.....

.....

(ग) एक–दो वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* लहनासिंह और लड़की की मुलाकात कहाँ हुई?

.....

.....

.....

* ''कयामत आई और लपटन साहेब की वर्दी पहनकर आई'' – यह किसने कहा था?

.....

.....

.....

* सूबेदारनी ने भीख में क्या मांगा ?

.....

.....

.....

* तेरी कुड़मई हो गई ! बार-बार पूछने पर लड़की ने क्या उत्तर दिया?

.....

.....

.....

* वजीरा, पानी पिला .... किसने कहा था?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टकरण –

* ''मेरे पास सिगड़ी है, मुझे गरमी लगती है, पसीना आ रहा है ।''

.....

.....

.....

* ''हाँ , याद आई । मेरे पास दूसरी गरम जरसी है । आज सबेरे ही आई है। विलायत में मेमें बुन-बुनकर भेज रही है ..... ।''

.....

.....

.....

* ''कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढा हुआ सालू ?''

.....

.....

.....

* ''मैंने तो तेरे को आते ही पहचना लिया ..... ।''

.....

.....

.....

1.4 सारांश

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी उदात्त भावनात्मक संबंधों की कथा है । जो मानवीय मूल्य के पुनर्निमाण की ओर संकेत करती है । अमृतसर के बम्बूकार्ट बाजार से शुरु होती यह कहानी लम्बे अन्तराल के पश्चात् सीधे फ्रान्स की युद्धभूमि में पहुँच जाती है । प्रेम और त्याग की मिसाल स्थापित करती इस कहानी में आठ वर्ष की बालिका के बाल सुलभ प्रेम में एक बालक अपनी प्रौढ़ावस्था में उसके कहने पर क्या कुछ कर जाता है इसका हृदयग्राही वर्णन हुआ है । लहना उसके कहने पर (सूबेदारनी) युद्ध में मरणासन्न अवस्था में भी उसके पति और बेटे की रक्षा करता है ।

पाँच खंडों में विभक्त यह कहानी नाटकीय स्तर पर प्रस्तुत हुई है । मानवीय संबंधों की इस सहज कथा में सहज जीवन का विकास हुआ है । युद्ध क्षेत्र में साहस, वीरता एवं त्याग का उत्सर्ग है, निस्वार्थ भाव से वचन बद्धता का निर्वाह भी करती है ।

कहानी में प्रयुक्त लोकभाषा का प्रयोग आकर्षित करता है । फ्लेश-बॅक के रूप में एक विशाल वातावरण के कैनवास पर गुलेरी की सधी तुलीका से कथा सहजता से साकार हुई है ।

अमृतसर के बाजार की दौड धूप का हु-ब-हू वर्णन, लोगों की आपसी बातचीत, उसके माध्यम से उनका आत्मीयतापूर्ण व्यवहार अत्यंत रोचक, सरल, सहज शैली में साकार हुआ हैं। गुलेरी ने नैतिक मानदण्डों के सहारे प्रेम की अभिव्यंजना पर बल दिया है । केवल कोरा उपदेश देना कहानी का उद्देश्य नहीं है । वरन् व्यापक उद्देश्य को प्रस्तुत करती उनकी कहानी मानव जीवन का तथा मानवी स्वभाव का बहुत निकटता से परिचय कराती है, और मानव जीवन के उत्सर्ग को चित्रित करती है । गुलेरीजी ने प्रेम बलिदान और कर्तव्य की महत्ता को कहानी में अभिव्यक्त किया है । संपूर्ण कहानी अपनी मार्मिक संवेदना के कारण अद्वितीय बनी है । हिंदी कहानी के उज्वल भविष्य का परिचय देती है ।

1.5 शब्दार्थ

कुड़मई	-	सगाई
लाम	-	शुद्ध
सालू	-	कीमती साड़ी
जलजला	-	भूकंप, भूचाल
माँद पड़ना	-	बिमार होना

कयामत – प्रलय
खंदक – सेनाद्वारा छिपने के लिए जमीन में खोदी गई खाई
मत्था टेकना – प्रणाम, नमस्कार करना
ओबरा – हवा, रोशनी का भी रास्ता न हो ऐसी कोठरी
सोता – नदी, झरने का उगम स्थान

1.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* ''उसने कहा था'' कहानी का मूल्यांकन कीजिए ।
* प्रेम और कर्तव्य का पालन करने वाले लहनासिंह की विशेषताएँ लिखिए ।
* प्रसाद की 'पुरस्कार' कहानी के साथ 'उसने कहा था' की तुलना कीजिए ।
* किसी सैनिक का साक्षात्कार लीजिए ।

1.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* प्रतिनिधि कहानियाँ – संपा. एस.एन.डी.टी. वुमेन्स यूनिर्वसिटी, मुंबई, जयभारती प्रकाश इलाहाबाद
* मानसरोवर भाग – 1, 2 – प्रेमचंद
* प्रेमचंद की हास्य कहानियाँ – प्रेमचंद – भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली
* मेरी प्रेम कहानियाँ – राजेंद्र यादव, लिपि प्रका. दिल्ली

इकाई – 2

गुण्डा

जयशंकर प्रसाद

अनुक्रम

2.0 **उद्देश्य**

2.1 **प्रस्तावना**

2.2 **विषय – विवरण**

कहानी – गुण्डा

2.2.1 **'गुण्डा' : के पात्र**

2.2.2 **'गुण्डा' का वातावरण**

2.2.3 **'गुण्डा' कथोपकथन**

2.2.4 **'गुण्डा' : उद्देश्य**

2.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

2.4 **सारांश**

2.5 **शब्दार्थ**

2.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

2.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

2.0 उद्देश्य

- कहानी के द्वारा काशी के वातावरण को समझ सकेंगे ।
- भारतीय रियासतों पर अंग्रेजों के नियंत्रण के परिणामों को समझ सकेंगे ।
- 'गुण्डा' की मानवीय संवेदनाओं से परिचित होंगे ।

2.1 प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1890 में वाराणसी–काशी में हुआ । उनकी शिक्षा उसी स्थान पर हुई । भारतीय इतिहास दर्शन एवं संस्कृति के प्रति उनका अधिक लगाव था । वे कहानीकार थे, किंतु उससे पहले वे एक कवि थे।

उनकी कहानियों में भावुकता कल्पना, काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं । उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्य, इतिहास के स्वर्णिम प्रसंगों को

बड़ी स्वाभाविकता से प्रस्तुत किया हैं । देशप्रेम, आत्मगौरव, कर्तव्यपरायणता की इनमें अभिव्यक्ति की है साथ ही कहानियों में सामाजिक तथ्य, राजनीतिक, आर्थिक यथार्थ को केंद्र में रखकर मानवीय संवेदनाओं और सहानुभूति निर्माण करने का प्रयास किया है । उनके अनेक पात्रों में मानसिक द्वंद्व एवं संघर्ष दिखाई देता है । परिणामतः मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के द्वारा अनेक पात्र अपने-अपने कर्तव्य-पालन में सफल रहे हैं ।

उनके कहानी संग्रह हैं - प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी औंर इंद्रजाल आदि । आकाश दीप, पुरस्कार, गुण्डा उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ रही हैं ।

प्रस्तुत 'गुण्डा' कहानी नन्हकूसिंह की वीरता, उदारता त्याग-बलिदान जैसे मानवीय मूल्यों को अंकित करती है । गुण्डा गर्दी से आतंक, दहशत बनाएँ रखने वाला भी एक मनुष्य ही है । अन्याय, अत्याचार, पीडितों की वह हर पल मदद करता है । राजमाता पन्ना और राजकुमार चेतसिंह को वह अंग्रेजों के चंगुल से छुडाकर देश के लिए अपनी जान जोखिम में डालता है । भले ही वह काशी का 'गुण्डा' क्यों न हो । प्रसाद ने नन्हकू के द्वारा देशप्रेम, त्याग और बलिदान जैसे मूल्यों को प्रस्थापित किया है ।

2.2 विषय - विवरण

कहानी - गुण्डा

ईसा की अठारहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में काशी के वातावरण में परिवर्तन हुआ । जहाँ न्याय और बुद्धिवाद व्याप्त था वहाँ शस्त्रबल प्रमुख हो उठा । वीरता को महत्त्व प्राप्त हुआ । अपनी बात पर मर मिटना, सिंहवृत्ति से जीविका ग्रहण करना, प्राण की भीख माँगने वाले कायरों को तथा चोट खाए प्रतिद्वंद्वी पर शस्त्र न उठाना, सताए हुए निर्बलों की सहायता करना, प्राणों को हथेली पर लेकर धूमना जिनका बाना था, उन्हें लोग काशी में 'गुण्डा' कहते थे । नन्हकूसिंह इसी प्रकार गुण्डा हो गया था । यद्यपि वह प्रतिष्ठित जमींदार का पुत्र था, परंतु किसी मानसिक चोट से घायल होकर अपनी संपत्ति लूटा दी थी । वह प्रायः बनारस के बाहर की हरियाली में धूमता रहता था । गंगा की धार में मचलती डोंगी पर वह दिखाई पडता था । जुआँ खाने से निकलकर जब वह चौक में आता था तब काशी की वेश्याएं मुस्कुराकर उसका स्वागत करती और उसके सुदृढ़ शरीर को ललचायी नजरों से देखती थी । वह तमोली की दुकान पर बैठकर उनके गीत सुनता पर कभी वेश्या के यहाँ नहीं जाता था । जुएँ में जीते हुए रूपए वेश्याओं में बाँट देता था ।

एक दिन जुएँ खाने में कौड़िओं ने उसका साथ नहीं दिया, उसका एक सिद्धान्त था वह किसी से उधार लेकर कभी जुआँ नहीं खेलता था । उसके पास पाँच रुपए थे । एक रुपया उसने पान के लिए तमोली को दिया और चार के दो-दो मलूकी कत्थक को, और कहा कि दुलारी से कहे कि वह 'विलमी विदेस रहे' गीत सुनाए । तभी सामने से बारात आती हुई दिखाई दी । नन्हकू को पता चला कि यह ठाकुर बोधी सिंह के लड़के की बारात है । नन्हकू की बोधी सिंह से दुश्मनी थी अतः उसने बोधी सिंह को चुनौती दी । उसने नन्हकू को संदेश

भेजा कि बारात में दो समाधियों को जाने की क्या जरुरत है ? और नन्हकू सिंह बारात में चला गया । ब्याह में जो कुछ लगा सब कुछ खर्च किया । दूसरे दिन स्वयं तमोली की दुकान पर आकार रूक गया और बारात को घर भेज दिया ।

नन्हकू सिंह ने दुलारी को गाने के लिए संदेश भेजा तभी मौलवी साहब दो सिपाहियों को लेकर आज धमके और दुलारी को संदेश भिजवाया कि– ''आज रेजिडेंट साहब की कोठरी पर मुजरा करना होगा अभी चले '' नन्हकू ने दुलारी के ललकार कर गाने के लिए कहा परंतु मौलवी साहब दुलारी को ले जाने के लिए कटिबद्ध थे । मौलवी साहब दुलारी को चलने के लिए आग्रह करने लगे तो नन्हकू सिंह ने एक बनारसी झापड़ उन्हें टिकाया, इसे देखकर सिपाही भाग गए । जान अलि ने मौलवी साहब से कहा– ''मौलवी साहब! भला आप गुण्डे के मुँह लगने लगे । यह कहिए कि उसने गंडासा नहीं तौल दिया ।'' थोड़ी देर बाद एक डोली रेशमी कपड़ों से ढँकी हुई आयी । साथ में एक चोबदार था । उसने दुलारी को राजमाता की आज्ञा सुनायी । दुलारी चुपचाप डोली पर जा बैठी और शिवालय घाट की ओर बढ़ी ।

श्रावण का अंतिम सोमवार होने के कारण राजमाता शिवालय में पूजन कर रही थी । दुलारी कुछ अन्य गाने वालियों के साथ भजन गा रही थी । आरती हो जाने पर राजमाता पन्ना ने फुलों की अंजेरी बिखेरकर भक्ति भाव से देवता के चरणों में प्रणाम किया । प्रसाद लेकर आते ही उन्हें दुलारी दिखाई दी ।

दुलारी ने हाथ जोड़कर कहा कि – ''मैं पहले ही पहुँच जाती क्या करू, कुबरा मौलवी निगोड़ा आकर रेसीडेन्सी की कोठी पर ले जाने लगा, घंटों इसी झंझट में बीत गया सरकार !''उधर से बाबू नन्हकूसिंह निकले जिन्होंने मौलवी को झापड़ लगाया और तब जाकर मुझे यहाँ आना संभव हो सका ।'' राजमाता ने जानना चाहा कि यह बाबू नन्हकूसिंह कौन है? दुलारी ने सिर नीचा कर कहा– ''यह बाबू निरंजन सिंह के लड़के है । जब हम बचपन में झूला झूल रहे थे और अचानक नबाब का हाथी बिगडकर आ गया था तब इसी नन्हकू सिंह ने हम लोगों की रक्षा की थी ।''

राजमाता का मुख उस प्राचीन घटना को स्मरण करके न जाने क्यों विवर्ण हो गया । दुलारी राजमाता पन्ना के पिता की जमींदारी में रहने वाली वेश्या की लड़की थी । उसके साथ कितनी ही बार पन्ना झूले–हिंडोले पर झूल चुकी थी । पन्ना जब काशीराज की माता थी तब दुलारी काशी की प्रसिद्ध गाने वाली थी । राजमाता महाराज बलवंत सिंह के समय से संगीत में रुचि लेती थी । उस समय प्रेम, दुःख और दर्द भरी विरह कल्पना के गीत उमें अधिक रुचि थी । अब सात्विक भावपूर्ण भजन होता है ।

राजमाता पन्ना की एक मुँह लगी गेंदा नामक दासी थी । उसी ने महारानी को कहा कि – ''नन्हकू सिंह जमींदारी छोड़कर अब डाकू हो गया है । जितने भी खून होते हैं उसमें उसी का हाथ रहता है ।'' तभी दुलारी ने उसे रोककर कहा – ''यह झूठ है । बाबूसाहब जैसा धर्मात्मा तो कोई है ही नहीं । कितनी विधावाएँ उनकी दी हुई धोती से अपना तन ढँकती

हैं । कितनी लड़कियों की शादी होती है, कितने सताएँ हुए लोगों की उनके द्वारा रक्षा होती है।''

रानी पन्ना के हृदय में एक तरलता उद्वेलित हुई । उन्होंने हँसकर कहा – ''दुलारी, वे तेरे यहाँ आते हैं न? इसीसे तू उनकी बड़ाई ....।''

''नहीं सरकार! शपथ खाकर कह सकती हूँ कि बाबू नन्हकू सिंह ने आज तक कभी मेरे कोठे पर पैर भी नहीं रखा।''

राजमाता न जाने क्यों इस अद्‌भुत व्यक्ति को समझने के लिए चंचल हो उठी थी । तभी गेंदा ने शहर की बुरी दशा के संदर्भ में बात कही ।

दूसरे दिन काशी की अव्यवस्था के संदर्भ में राजा चेतसिंह के पास रेजिडेण्ट मार्कहेम की चिट्ठी आई जिसमें गुण्डों को पकड़ने के लिए कड़ा नियंत्रण रखने की सम्मति भी थी । काशी में हलचल मच गयी । कोतवाल हिम्मतसिंह ने काशी के गुण्डों के पकड़ना आरंभ कर दिया ।

एक दिन नन्हकू ऊँचे टीले पर अपने साथियों के साथ दूधियाँ छान रहा था। कथकों का गाना हो रहा था । नन्हकू को आनंद नहीं आया । आज उसका मन उखड़ा हुआ था । एक घण्टे में दुलारी सामने आयी । मुस्काराकर उसने कहा – ''क्या हुकम है बाबू साहब?''

''दुलारी ! आज गाना सुनने का मन कर रहा है ।'' गाना-बजाना समाप्त हो गया । नन्हकू चिंता में मंदिर के समीप ही छोटे से कमरे में बैठा । दुलारी भी जाग रही थी । अपनी भावना को संभालना उसके लिए कठिन हो गया था । वह धीरे-धीरे उसके पास आई । चौंककर नन्हूक ने पास रखी तलवार उठा ली । हँसकर दुलारी कहने लगी – ''बाबू साहेब, यह क्या? स्त्रियों पर भी तलावार चलाई जाती है?''

वासना भरा उस रमणी का मुख देख कर नन्हकू हँस पड़ा कहने लगा-''क्यों इसी समय जाने की पड़ी है?...'' वह उसके पास बैठी। नन्हकू ने कहा – ''क्या तुमको डर लग रहा हैं?''

''नहीं कुछ पूछने आयी हूँ ।''

''क्या?''

''क्या .... यही कि .... कभी तुम्हारे हृदय में ....''

''उसे न पूछो दुलारी! हृदय को मैं बेकार ही समझकर तो उसे हाथ में लिए फिर रहा हूँ । कोई कुछ कर देता- कुचलता – चीरता- उछलता मर जाने के लिए सब कुछ तो करता हूँ, पर मरने नहीं पाता ।''

दुलारी के द्वार मालूम होता है कि हेस्टिंग्स साहब आया है । शिवालय घाट पर तिलंगों की कम्पनी का पहरा बैठा दिया है । राजा चेतसिंह और राजमाता पन्ना को पकड़कर शायद कलकत्ता भेजने वाले हैं ...। यह सुनते ही नन्हकू अधीर हो उठा । तभी दुलारी ने

कहा – ''क्यों बाबू साहब, आज रानी पन्ना का नाम सुनकर आपकी आँखों में आँसू क्यों आ गये?''

''चुप रहो, तुम उसको जानकर क्या करोगी?''

उद्विग्न होकर कहते लगा – ''दुलारी! जीवन में आज यह पहला ही दिन है कि एकांत रात में एक स्त्री मेरे पलंग पर आकर बैठ गयी है। मैं चिरकुमार अपनी एक प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के लिए सैकडों असत्य, अपराध करता फिर रहा हूँ, क्यों? तुम जानती हो ?मैं स्त्रियों का घोर विद्रोही हूँ और पन्ना !... किंतु उसका क्या अपराध ? अत्याचारी बलवंत सिंह के कलेजे में बिंछुआ मैं न उतार सका । किंतु पन्ना ! उसे पकडकर कर गोरे कलकत्ते भेज देंगे, नहीं ...।''

नन्हकू उन्मत्त हो उठा और गंगा की उमड़ती हुई धारा में डोंगी डाल कर राजमाता और राजकुमार को छुड़ाने के लिए निकला । कोतवाल हिम्मतसिंह को पुकारा ।

उसने पूछा– ''कौन?''

''बाबू नन्हकूसिंह ।''

''अच्छा, तुम अब तक बाहर ही रहे ।'' और हिम्मतसिंह ने सिपाहियों को आज्ञा दी । किंतु नन्हकू की चमकती तलवार को देखकर वे भीतर भागे – ''नमक हरामो! चूड़िया पहन लो । ''

शिवालय की खिड़की के नीचे डोंगी की बांधकर बंदर जैसा उछालकर खिड़की के भीतर गया । सब को सचेत करते हुए कहा – ''महारानी कहाँ है ?''

चेतसिंह ने पूछा – ''तुम कौन हो?''

''राज–परिवार का एक बिना दाम का सेवक ।''

पन्ना ने पहचान लिया ... वही नन्हकूसिंह

उसे देखकर मनियारसिंह ने पूछा – ''तुम क्या कर सकते हो ?'' ''मैं मर सकता हूँ । पहले महारानी को डोंगी पर बिठाइए । नीचे दूसरी डोंगी पर अच्छे मल्लहा हैं फिर बात कीजिए ।''... उसने पन्ना से कहा – ''चलिए, मैं साथ चलता हूँ ।''

राजा चेतसिंह को कहा – ''मेरे मालिक आप नाव पर बैठें । जब तक राजा भी नाव पर बैठ जायेंगे, तब तक सत्रह गोली खाकर भी नन्हकूसिंह जीवित रहने की प्रतिज्ञा करता है ।'' वह अंग्रेजों के साथ युद्ध करता रहा । बीसों तिलंगों की संगीनों से वह अकेला लड़ रहा था । उसके घावों से रक्त के फुहारे फूट पड़े थे । उसके चट्टान जैसे शरीर से गैरिक की तरह रक्त की धारा बह रही थी । 'गुण्डे' का एक–एक अंग कटकर गिर रहा था । वह काशी का 'गुण्डा' नन्हकूसिंह था ।

2.2.1 'गुण्डा' : पात्र

'गुण्डा' कहानी चरित्रप्रधान है । इसमें नायक नन्हकू सिंह के व्यक्तित्व और उसके त्याग को अभिव्यक्ति किया है । नन्हकू की आयु 50 वर्ष से ऊपर है फिर भी वह युवकों

से अधिक बलिष्ठ और दृढ़ है । कडकती जेठ की धूप में, वर्षा की झड़ी में और पूस की रात में भी वह नंगे शरीर धूमता है । उसका साँवला रंग सॉप की तरह चिकना और चमकीला है । उसकी धोती का लाल रेशमी किनारा दूर से भी ध्यान आकर्षित करता है । कमर में बनारसी फेटा जिसमें सींप की मूठ का बिछुवा घूँसा रहता है उसके घूंघराले बालों पर सुनहरे पल्ले के साफे का छोर, उसकी चौड़ी पीठ पर फैला रहता है । उसके कंधे पर टीका हुआ चौड़ी धार वाला गण्डा सा है । वह गुण्डा है किंतु वीरता उसका धर्म है । वह बेवजह किसी को आहत ना ही करता, निर्बलों की सहायता करता है, विधवाओं का रक्षक है, गरीब लड़कियों की शादी के लिए सहायता करता है, सताएँ हुए लोगों की रक्षा करना वह अपना धर्म मानता है । अपने प्राणों का बलिदान देकर महारानी पन्ना और चेतसिंह की रक्षा करता है । प्रसाद ने गुण्डा नन्हकू सिंह के माध्यम से त्याग का आदर्श स्थापित किया है । नन्हकू नारी अस्मिता का रक्षक है । वह अपने प्राणों की बाजी लगाकर स्त्री रक्षा का दायित्व पूर्ण करता है ।

'गुण्डा' कहानी का नायक नन्हकू आदर्श की प्रतिष्ठा करता है । स्वयं आजीवन कष्ट, संघर्ष एवं दून्द्व से जुझता है । आंतरिक संघर्ष का सामना करते हुए वह अंततः कारूणिक प्रभाव पाठक पर छोड़ जाता है । प्रसाद ने नन्हकू के आंतरिक द्वंद्व को उभारने के लिए कतिपय घटना प्रसंगों का निरुपण किया है । परिणामस्वरुप नन्हकू का चरित्र मात्र मनोभावात्मक न रहकर मनोवैज्ञानिक हो गया है । जो प्रेम में त्याग समपर्ण एवं प्राणों का उत्सर्ग जैसे सत्य का उद्‌घाटन करता है ।

2.2.2 **राजमाता पन्ना**

राजमाता पन्ना धार्मिक प्रवृत्ति की महिला है, वह नित्य नियम से शिवालय में जाती है । जहाँ पूजन-भजन और आरती में ध्यान मग्न हो जाती है । वैधव्य से दीप्त शांत मुखमंडल किसी को भी आकर्षित कर लेता है । बचपन में हाथी द्वारा आक्रमण के प्रसंग में नन्हकू ने उसे बचाया था तभी से नन्हकू की वीरता एवं शौर्य से राजमाता पन्ना आवगत है । राजमाता पन्ना में ममता एवं माधुर्यपूर्ण अनुभूतियों का एहसास होता है । दया, त्याग, स्नेह, प्रेमादि तत्वों से उसका व्यक्तित्व उभर कर आया है ।

2.2.3 **दुलारी**

दुलारी काशी की गाने वाली एक वेश्या है । बचपन में वह राजमाता पन्ना की सहायिका रही है । पन्ना जब काशीराज की माता थी तब दुलारी काशी की प्रसिद्ध गाने वाली थी । राजमहल में उसका गाना-बजाना हुआ करता था । राजमाता उसके गाने से प्रभावित थी और यदा-कदा दुलारी को भजन गाने के लिए कहा करती थी ।

स्पष्टतः प्रसाद की 'गुण्डा' कहानी के पात्र राष्ट्रप्रेम, त्याग, करुणा, ममता, दया जैसे उदात्त मूल्यों से ओतज्ञप्रोत हैं । नन्हकू के माध्यम से तो मनुष्यता के उत्सर्ग का अंकन हुआ है । प्रसादजी ने पात्रों के माध्यम से व्यापक मानवीय संवेदना उभारने में सफलता प्राप्त की है । 'गुण्डा' कहानी अपनी मार्मिक संवेदना, मानव हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति और मनोवैज्ञानिक

चरित्र-चित्रण के कारण पाठकों के हृदय पर अमिट छाप छोड चुकी है । प्रसादजी ने एक गुण्डे को सूक्ष्म, संघटित, उदात्त व्यक्तित्व प्रदान किया है ।

2.2.2 **वातावरण**

'गुण्डा' कहानी का कथानाक ईसा की अठरहवीं शताब्दी के अंतिम भाग को दृष्टि में रखकर लिखा गया है । उस समय मंदिर एवं मठों को आक्रमणकारियों द्वारा उद्ध्वस्त किया जा रहा था । काशी में अराजकता व्याप्त थी । शास्त्र के स्थान पर शस्त्र बल प्रभावी हो चुका था । नागरिक जीवन में एक नवीन सम्प्रदाय की सृष्टी हुई थी जिसका धर्म था 'वीरता'। ये वीर निर्बलों की सहायता करते सिंहवृत्ति से जीविका ग्रहण करते थे। ये वीर सिद्धान्तप्रिय थे और इन्हीं वीरों को काशी के लोग 'गुण्डा' कहते थे । उस समय राजशाही थी, महाराज चेतसिंह का राज था । अंग्रेज देशी रियासतों पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रहे थे । छोटे राजाओं पर आरोप-प्रत्यारोप लगाकर उन्हें नजरबंद किया करते थे । ऐसे वातावरण में प्रस्तुत कहानी का कथानक सृजित हुआ है । लेखक के शब्दों में -

''सोलह अगस्त सन् 1781 को काशी डाँवा-डौल हो रही थी। शिवालय घाट में राजा चेतसिंह लेफ्टिनेंट ''इस्टाकर के पहरे में थे । नगर में आतंक था । दुकाने बंद थी, सडकें सूनी पड़ी थी, भय और सन्नाटे का राज्य था ।''

देश काल वातावरण की निर्मिति में प्रसादजी की लेखनी जादू का काम करती थी । ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रकृतीचित्रण, पात्र-एवं घटनाओं के मार्मिक वर्णन से इस प्रकार उभारकर प्रस्तुत करते है कि पाठक क्षणभर युगों की सीमा को लाँधकर कथानक के काल में प्रविष्ट हो जाता है ।

2.3.3 **कथोपकथन**

'गुण्डा' कहानी के संवादों या कथोपकथनों की सजीवता, पात्रानुकूलता, प्रसंगानुकूलता दर्शनीय हैं । पात्रों के मानसिक संघर्ष - द्वंद्व को प्रसादजी ने बड़े प्रभावपूर्ण एवं संक्षिप्त ढंग से अभिव्यक्ति दी है । उनके संवादों में नाटकियता एवं कलात्मकता दिखाई देती है ...

दुलारी नन्हकू के पास बैठ गयी । नन्हकू ने कहा - ''क्या तुमको डर लग रहा है?''

''नहीं कुछ पूछने आयी हूँ ।''

''क्या?''

''क्या ... यही कि ... कभी तुम्हारे हृदय में....''

''उसे न पूछो दुलारी! हृदय को मैं बेकार ही समझकर तो हाथ में लिए फिर रहा हूँ ... मर जाने के लिए सब कुछ तो करता हूँ, पर मरने नहीं पाता ।''

मरने के लिए भी कहीं खोजने जाना पड़ता है?.... जब राजमाता पन्ना और चेतसिंह को शिवालय के घाट पर पकड़ा गाया । दुलारी से पता-चलते ही नन्हकू डोंगी लेकर उन्हें छुड़ाने गंगा की धारा में से अंधरे मैं ही वहाँ पहुँचता है। कोतवाल हिम्मत सिंह को सचेत

करते हुए कहता है – ''हम एक बार इनको लेकर शिवालय घाट पर जाएँ ।''

शिवायल की खिड़की के नीचे एक पत्थर में रस्सी अटका कर नन्हकू खिड़की के अंदर चला जाता है । शेष साथी फाटक पर हलचल मचाने के लिए भेज देता है ।

शस्त्रों से लदे हुए नन्हकू को देखकर चेतसिंह पूछता हैं – ''तुम कौन हो?''

''राज परिवार का एक बिना दाम का सेवक ।''

''मनियार सिंह ने पूछा– तुम क्या कर सकते हो?''

''मैं मर सकता हूँ । पहले महारानी को डोंगी पर बिठाइए ।'' जब राजमाता को ले जाने की बात की गई तब राजा चेतासिंह को नन्हकू कहता है – ''मेरे मालिक, आप नाव पर बैंठे । जब तक राजा भी नाव पर न बैठ जायेंगे, तब तक सत्रह गोली खाकर नन्हकू सिंह जीवित रहने की प्रतिज्ञा करता है ।''

दोनों को डोंगी पर बैठाकर नन्हकू ने फाटक पर सिपाहियों की गोलियों का सामना किया । इस्टाकर, उसके साथियों और मौलवी साहब से समाना करता रहा । मौलवी को वह कहता है– ''क्यों, उस दिन के झाड़प ने तुमको समझाया नहीं? ले पाजी ।'' और जनेवा मारा कि कुबरा डेर हो गया ।

चेतसिंह को ललकार कर कहता है – ''आप देखते क्या है? उतरिए डोंगी पर ।'' चट्टान–सा खड़ा बीसो तिलंगों की संगीनों की मार खाता रहा उसके शरीर का एक–एक अंग कटकर गिरने लगा था । वही नन्हकू काशी का 'गुण्डा' था ।

स्पष्ट है कि प्रसाद के संवाद नन्हकू के दिल का द्वंद्व, दुलारी की वासना भरी सूक्ष्म अभिव्यक्ति, राजमाता पन्ना की आतुरता आदि भावनाओं को व्यक्त करने में सफल रहे हैं

2.2.4 उद्देश्य

प्रसाद की कहानी 'गुण्डा' का उद्देश्य है अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित काशी के वातावरण को चित्रित करना । उस समय काशी का पूर्ववर्ती वैभव नष्ट हो चुका था । न्याय और बुद्धिवाद को शस्त्रबल के सामने झुकना पड़ा था । काशी के नागरिक विच्छिन्न और निराशापूर्ण जीवन जी रहे थे । एक नया संप्रदाय निर्माण हुआ और वह था वीर । जिसका लक्ष्य था, अपनी बात पर मर मिटना सिंह वृत्ति से जीविका ग्रहण करना प्राण–भिक्षा मांगने वाले कायरों तथा चोट खाकर गिरे हुए प्रतिद्वंद्वी पर शस्त्र न उठाने, निर्बलों की सहायता करना, प्रत्येक क्षण में जान हथेली पर लेकर चलने वाले इन वीरों को काशी में 'गुण्डा' कहते थे ।

मनसिक चोट से घायलं जमींदार का पुत्र नन्हकू गुण्डा हो गया था । जुआ खेलता था । गाना सुनता था पर कोठे पर कभी नहीं जाता था । वीर, साहसी, उदार, त्यागी नन्हकू के बलिदान को अंकित करके प्रसादजी ने अद्‌भुत व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है ।

नन्हकू पात्र के द्वारा उसकी मानवीय संवदेना के दर्शन कराए हैं । अनेक विधवाएँ

उनकी दी हुई धोती से अपना तन ढकती है । कितनी लड़कियों की शादी की गई, कितने सताए गये लोगों की रक्षा की गई । नन्हकू धर्मात्मा है । दुलारी कहती है कि उन्होंने आज तक कभी मेरे कोठे पर कदम नहीं रखा । नन्हकू को दुलारी ने कहा था –''... कभी तुमारे हृदय में ...''

''उसे न पूछो दुलारी । हृदय को मैं बेकार ही समझकर तो उसे हाथ में लिए फिर रहा हूँ । कोई कुछ कर देता – कुचलता–चीरता–उछालता । मर जाने के लिए सब कुछ तो करता हूँ , पर मरने नहीं पाता ।'' जब उसे पता चला कि राजमाता पन्ना और राजकुमार चेतसिंह शिवालय की घाट में लेफ्टिनेण्ट इस्टाकर के पहरे में हैं । तब नन्हकू रात के घने अंधकार में गंगा की उमड़ती धारा में डोंगी डालकर उन दोनों को अपनी जान की बाजी लगाकार बचा लिया । इस्टाकार, कुबरा मौलवी तथा उनके साथियों का खात्मा करके देशप्रेम की मिसाल कायम की ।

कहानी के द्वारा प्रसाद ने दिल के सच्चे भावों और अनुभूति की गहराई को ऊँचाई तक ले जाने का प्रयास किया है । मानसिक द्वंद्व एवं संघर्ष, प्रेम, त्याग, समर्पण, बलिदान जैसे मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का भी लक्ष्य रहा है ।

2.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* कहानी कला की दृष्टि से 'गुण्डा' की समीक्षा कीजिए ।

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' कहानी के आधार पर उदात्त प्रेम और त्याग–समर्पण के प्रसंगों का वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

* नन्हकू सिंह का चरित्र आज के युवकों के लिए प्रेरणादायी है – विवेचन कीजिए ।

.....

.....

.....

* दुलारी की कथा गौण होते हुए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है – स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* राजमाता पन्ना

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' नन्हकूहसंह का चरित्र–चित्रण

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' के कथोपकथन

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' का वातावरण

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' शीर्षक

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* 'गुण्डा' का अर्थ क्या हैं?

.....

.....

.....

* दुलारी कौन थी?

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' कहानी किसने लिखी है ?

.....

.....

.....

* 'गुण्डा' में कार्यरत कोतवाल का नाम क्या है?

.....

.....

.....

* काशी की दुर्व्यवस्था के संदर्भ में राजा चेतसिंह को किसने चिट्ठी भेजी?

.....

.....

.....

* तिलंगों ने कम्पनी का पहरा कहाँ पर बैठा दिया है?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टकरण –

* ''दुलारी, वे तेरे यहाँ आते है न? इसी से तू उनकी बड़ाई... ''

.....

.....

.....

* ''क्यो बाईजी ! क्या इसी समय जाने की पड़ी है? मौलनवी ने फिर बुलाया है क्या ?''

.....

.....

.....

* ''राज-परिवार का एक बिना दाम का सेवक ।''

.....

.....

.....

* ''मेरे मालिक, आप नाव पर बैठें । जब तक राजा भी नाव पर न बैठे जायेंगे, तब तक सत्रह गोली खाकर भी नन्हकूसिंह जीवित रहने की प्रतिज्ञा करता है ।''

.....

.....

.....

2.4 सारांश

जयशंकर प्रसाद की 'गुण्डा' कहानी का प्रमुख पात्र है नन्हकूसिंह, जिसे काशी का 'गुण्डा' कहा जाता था । वीरता उसका धर्म था । नन्हकू एक जमींदार का बेटा था किंतु मानसिक चोट खाने के कारण वह गुण्डा हो गया था । अपनी संपत्ति उसने लूटा दी थी । रुपया-पैसा खर्च करके प्रहसनपूर्ण अभिनय किया था । बनारस के बाहर, कभी कुओं पर कभी गंगा की मचलती हुई डोंगी पर, जुआखाने से जब निकलता तब काशी की वेश्याएँ उसका मुस्कराकर स्वागत करती । तमोली की दुकान पर बैठकर उनके गीत सुनता, ऊपर कभी न जाता था जीते हुए पैसे उनकी खिड़की में उछालता था ।

मौलवी ने सिपाही दुलारी को बुलाने भेजे हैं - ''रेजिडेण्ट साहब की कोठी पर मुजरा करने बुलाया है ।'' दुलारी हम कब तक यहाँ बैठे रहे, नन्हकू ने कहते ही मौलवी कुछ बकता रहा - ''कौन है यह पाजी ।'' ''तुम्हारा चाचा'' कहकर एक पूरा बनारसी झापड़ मारा, बाजार में हलचल मच गई । मौलवी और सिपाही वहाँ से भाग निकले ।

गाना पूरा हुआ और दुलारी राजमाता की आज्ञा पाकर शिवालय घाट की ओर चल पड़ी । दुलारी ने राजमाता को घटित प्रसंग बतलाया और याद दिलाई कि नबाब का हाथी बिगड़कर आया था, आप झूला-झूल रही थी तब बाबू निरंजनसिंह के बेटे नन्हकू ने हम लोगों की रक्षा की थी । राजा बलवंत सिंह के द्वारा रानी पन्ना के चेतसिंह बेटा है, अब रानी वैधव्य के काल में पूजा-पाठ में रुचि लेती है । दुलारी से सात्विक भजन सुनती है । राजमाता के चेहरे का रंग नन्हकू का नाम सुनते ही उड़ गया, उसे अतीत की घटना का स्मरण हो आया । एक घण्टे के बाद दुलारी भजन सुनाकर वापस आयी । राजमाता पन्ना का नाम सुनते ही नन्हकू आँखों मैं आँसू आ जाते हैं । दुलारी के पूछने पर वह कहता है - ''चुप रहो, तुम जानकर क्या करोगी ।''

दुलारी ! जीवन में आज यह पहला दिन है कि एकांत रात में एक स्त्री मेरे पलंग पर

आकर बैठ गयी है । मैं चिरकुमार अपनी एक प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के लिए सैकड़ों असत्य, अपराध करता फिर रहा हूँ । क्यों? तुम जानती हो? मैं स्त्रियों का घोर विद्रोही हूँ । और पन्ना! .. किंतु उसका क्या आपराध? अत्याचारी बलवन्त सिंह के कलेजे में बिछुआ मैं न उतार सका। किंतु पन्ना! उसे पकड़कर गोरे कलकत्ते भेज देंगे नहीं ...।

दुलारी से पता चला कि कोई हेस्टिंग्ज साहब आया है, शिवालय घाट पर सैनिक पहरा दे रहे है राजमाता पन्ना और चेतसिंह वहीं अटके हैं । यह सुनकर नन्हकू गंगा की उमड़ती धारा में अंधेरी रात में, डोंगी में बैठकर वहाँ पहुँचता है और बड़ी हिम्मत के साथ राजमाता पन्ना और चेतसिंह को डोंगी में बैठाकर भेजता है और खुद बीसों तिलंगो की संगीनों के सामने चट्टान सा खड़ा तलवार चलाता है । उसके शरीर से रक्त की धारा बहती है, उसका एक-एक अंग कटकर वहीं गिरने लगता है, उसी काशी के गुण्डे का यह त्याग-बलिदान था। व्यक्तिगत प्रेम से देश-प्रेम के लिए अपना सब कुछ समर्पित करने वाला 'गुण्डा' नन्हकू निश्चित ही उच्च आदर्श का प्रतीक है ।

2.5 शब्दार्थ

तमोली	–	पानवाला
करौली	–	मूठदार छुरी
बिछुआ	–	एक प्रकार हथियार
ठठाकर	–	जोर से हँसना-पीटना
सायत	–	शुभ घड़ी, क्षण
तोड़ा	–	पैसे रखने की थैली, कलाई में पहनने का गहना
चौंधियाना	–	आश्चर्यचकित होना
नाल	–	डंठल, नली

2.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* ''गुण्डा'' कहानी का कथानक अपने शब्दों में लिखिए ।
* प्रेम और त्याग से संबंधित जयशंकर प्रसाद की अन्य कहानियों को पढकर उनके महत्त्वपूर्ण पात्रों के सरस कथोपकथनों को लिखिए ।

इकाई – 3

पत्नी–जैनेंद्रकुमार

अनुक्रम

* उनके गाँव में उपलब्ध मंदिरों को भेंट देकर जानकारी प्राप्त कीजिए ।
* प्रसाद की 'आकश–दीप' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

2.7 अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें

* इकाई I – में देखिए

3.0 **उद्देश्य**

3.1 **प्रस्तावना**

3.2 **विषय – विवरण**

3.2.1 **कहानी – पत्नी**

3.3.2 **'पत्नी' का सामाजिक पहलू**

3.2.3 **'पत्नी' शीर्षक**

3.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

3.4 **सारांश**

3.5 **शब्दार्थ**

3.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीयकार्य**

3.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

3.0 उद्देश्य

* इस कहानी के द्वारा जैनेंद्रकुमार के विचारों से परिचित होंगे ।
* कहानी के द्वारा सामजिक स्थिति का आकलन होगा ।
* जैनेंद्र की कहानी कला की विशेषता को समझ सकेंगे ।

3.2. प्रस्तावना

हिंदी कहानी साहित्य में जैनेंद्रकुमार का विशेष स्थान रहा है । दृष्टिकोण एवं शैली के कारण उनकी कहानियाँ लोकप्रिय रही हैं । प्रेमचंद के काल में जैनेंद्र की पहली कहानी प्रकाशित हो चुकी थी । मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र के आधार पर उनका साहित्य निर्माण हुआ है। इसलिए उनकी स्वतंत्र पहचान बन चुकी है । जैनेंद्र पर गांधीजी का काफी प्रभाव था । इसी वजह से जैनेंद्र गांधीवादी चिंतक के रुप से जाने जाते है ।

जैनेंद्र की अधिकांश कहानियाँ मनोवैज्ञानिक कहानियाँ हैं । वे चिंतनशील, अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले लेखक रही है । जैंनेंद्र के काल में फ्रायड के मनोविज्ञान का बोलबाला था । फ्रायड का प्रभाव सभी क्षेत्रों पर पड़ा । जैनेंद्र ने मानव मन की कुंठाओं, अतृप्तियों, पीड़ाओं का चित्रण किया । अपने विचारों को सभी प्रकार के पारंपारिक, सामाजिक प्रभावों से मुक्त रखा हैं । इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वे सामाजिक प्रश्नों से सर्वथा दूर रहे हैं । 'पत्नी' कहानी में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है किंतु उसका आधार समाजिक है। इस कहानी में सुनंदा ने अपने बच्चे को खो दिया है इसीलिए हमेशा विचारों में मग्न रहती है किंतु जैसे ही उसका ध्यान विचारों से अलग होता है । उसे पति पर, अपने आप पर झुंझलाहट होती है । ऐसी अवस्था में वह किसी से भी बोलती नहीं है । मकान शहर से बाहर अलग-अलग है । घर पर पति और उनके मित्रों के अतिरिक्त किसी का आना-जाना नहीं और उनकी बातों का विषय भी स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर रहता है । सुनंदा को ये बातें समझ में नहीं आती, फिर भी वह चाहती है कि इस विषय में पति उससे कुछ बातें करें। लेकिन ऐसा नहीं होता तब उसे अपने पति पर गुस्सा आता है । उसे लगता है कि पति उससे पराये लोगों का तरह व्यवहार क्यों करते हैं । वह उसे अधिकार से भी तो कही सकते हैं ऐसी अवस्था में वह कठोर हो जाती है । उसके मन में तरह-तरह के विचार आते हैं किंतु कुछ ही समय में उसे अपने व्यवहार के प्रति दुःख भी होता है । वह पुनः भारतीय नारी की तरह आज्ञाकारी 'पत्नी' बन जाती है ।

3.2 विषय – विवरण

3.2.1 कहानी – 'पत्नी'

शहर से एक ओर तिरस्कृत मकान । वहाँ चौके में एक स्त्री अँगीठी के सामने लिये बैठी है । अँगीठी की आग राख होती जा रही है जाने क्या सोच रही है । उसकी अवस्था बीस-बाईस के लगभग होगी । देह से कुछ दुबली है । संम्भ्रांत कुल की मालूम होती है ।

इस घर में दो प्राणी रहते हैं – पति और पत्नी । पति सबेरे से चले जाते है । पत्नी दिन भर घर में अकेले रहती है और उसी अकेलेपन में दिनभर सोचती रहती है । कुछ ही दिन पहले उसका बच्चा चला गया । । उसका मन कितना भी इछर-उधर रहे पर जब अकेले जब होती है, तब भटक कर अंत में उसी बच्चे के अभाव पर आ पहुँचता है । तब उसे बच्चे की वही बातें याद आती हैं । वे बड़ी-बड़ी प्यारी आँखें, छोटी-छोटी उँगलियाँ और नन्हें-नन्हें ओठ । अठखेलियाँ याद आती हैं । उसका मरना याद आता है । बस इसी विचार में सुनंदा कुढ़ती रहती है । कभी वह अपने आप पर और कभी अपने पति पर झुंझलाहट व्यक्त करती है । पति कालिन्दीचरण स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेता है और दिनभर घर से बाहर रहता है । वह दिनभर घर में अकेले रहते हुए विचारों में खोई रहती है । इसी वजह से कालिन्दचरण जब भोजन के लिए अपने मित्रों के साथ आते हैं । सुनंदा से कहता है खानेवाले हम चार हैं । खाना हो गया? सुनंदा थाली,चकला-बेलन और बटलोई बगैरह खाली बर्तन उठाकर चल

देती है, कुछ भी बोली नहीं ।

कालिन्द ने कहा – ''सुनती हो, तीन आदमी मेरे साथ और हैं । खाना बन सकें तो कहो, नहीं तो इतने में ही काम चला लेंगे ।''

सुनंदा कुछ भी नहीं बोली । उसके मन में बेहद गुस्सा आया । उससे क्षमाप्रार्थी जैसे क्यों बात कर रहे हैं, हँसकर क्यों नहीं कह देते – ''कुछ और खाना बना दो। जैसे मैं गैर हूँ । अच्छी बात है, तो मैं भी गुलाम नहीं हूँ कि उनके ही काम में लगी रहूँ । मैं नहीं जानती खाना–वान और चुप रही ।''

कालिन्दीचरण ने जरा जोर से कहा – 'सुनंदा' । सुनंदा के मन में आया कि यह बटलोई खूब जोर से फेंक दे । किसी का गुस्सा सहने के लिए वह नहीं है । उसे यह भी सुध नहीं कि अभी बैठे–बैठे अपने पति के बारे में कैसी प्रेमपूर्ण और भलाई की बातें सोच रही थी ।

''क्यों? बोल भी नहीं सकती? (वह कुछ नहीं बोली ।'')

''तो अच्छी बात है । खाना कोई भी नहीं खायेगा ।'' यह कहकर कालिंदी पैर पटकते चला गया ।

कालिंदीचरण विवाहित है, वह एक बच्चा खो चुका है । उसकी बात का दल में आदर है । दोस्तों के साथ आतंक, स्वातंत्रता संग्राम को लेकर कुछ बातें हो रही थी । तभी उसने कहा – ''आप लोगों को भूख नहीं लगी है क्या? उनकी तबीयत खराब है, इससे यहाँ तो खाना बना नहीं । बताओ क्या किया जाय? होलट चलें?''

एक ने कहा कि कुछ बाजार से यही मंगा लेना चाहिए । दूसरे की राय होटल चलने की थी । इस तरह की बातों में लगे थे कि सुनंदा ने एक बड़ी थाली में खाना परोसकर उनके बीच ला रखा, पानी के ग्लास रखं दिए और चुपचाप चली गई । कालिंदी को जैसे किसी ने काट लिया । दोस्तों ने समझ लिया कि इन दोनों के बीच तनाव पड़ा है । एक ने कहा – ''कालिंदी तुम तो कहते थे खाना नहीं है ।''

''मेरा मतलब काफी नहीं है ।''

दूसरे ने कहा – ''बहुत काफी है । सब चल जायेगा ।'' अंदर जाकर कालिंदी ने सुनंदा से कहा – ''यह तुमसे किसने कहा था कि खाना वहाँ ले आओ? मैंने क्या कहा था? चलो, उठा लाओ थाली हमे किसी को यहाँ नहीं खाना हैं होटल जायेंगे ।''

सुनंदा कुछ नहीं बोली । कालिंदी भी गुमसुम खड़ा रहा । तरह–तरह की बातें उसके मन में आती भी । उसे अपना अपमान मालूम हो रहा था और अपमान असहाय था ।

''सुनती नही हो कि कोई क्या कह रहा है ? क्यों ?''

सुनंदा ने मुँह फेर लिया, वह भीतर–ही–भीतर घुट रही थी । धीमे स्वर में कहा – खाओगे नहीं? एक तो बज गया है ।

कालिंदी ने धमकी के साथ पूछा – ''खाना और है ? अच्छा अचार लाओ । उसने

अचार ला दिया । अपने लिए उसने कुछ भी बचाकर नहीं रखा था । वह अपने से रुष्ट हो गई । उसका मन कठोर हुआ, स्वाभिमान का भाव जाग उठा, कडवाहट पैदा हुई । उसे लगा देखों, उन्होंने एक बार भी नहीं पूछा कि तुम क्या खाओगी? क्या वह यह सह सकती थी कि मैं तो खाऊ और उनके मित्र भूखे रहें पर पूछ लेते तो क्या था । इस बात पर उसका तनिक-सम्मान था वह भी कुचल गया । स्वयं को अपमानित कर लेती हुई अपने आपको कोसती है- ''तुझे तो खुश होना चाहिए कि उनके लिए एक रोज भूखे रहने का तुझे पुण्य मिला । मैं क्यों उन्हें नाराज करती हूँ अब से नाराज नहीं करूँगी । पर वे अपने तन की सुध भी तो नहीं रखते ।'' और बर्तन मांजने में लग जाती है ।

मित्र ने अचार मँगने की बात कि ''अचार लाना भाई, अचार । थोड़ा पानी लाना ।''

उसकी वाणी में स्निग्धता थी । सुनंदा ने पानी दिया और द्वार की ओट में खड़ी रही ताकि पति को कुछ और जरुरत हो तो चुपचाप दिया जा सकें ।

3.2.2 'पत्नी' का सामाजिक पहलू

'पत्नी' जैनेंद्र कुमार की प्रभावशाली कहानी है किंतु उसका उद्देश्य किसी सामाजिक समस्या को व्यक्त करना कभी नहीं रहा है । वे कहानियों के जो विषय चुनते हैं, वह प्रत्यक्ष जीवन से ही चुनते हैं । किसी सामाजिक समस्या को प्रस्तुत करने हेतु उन्होंने शायद ही कोई कहानी लिखी है । 'पत्नी' कहानी में सुनंदा का बच्चा जब से गुजरा है तब से उसके मन में उथल-पुथल मची रहती है । वह रसोई बनाते-बनाते भी विचार करने लगती है । कुछ देर बाद उसकी विचार श्रृंखला टूटती है । तब वह कहती है- ''अरे! यह क्या मैं कुछ भी सोचती रहती हूँ ।'' उसे ऐसा लगता है कि पति स्वयं की ओर ध्यान नहीं देते, मेरी और भी । शायद उनकी लापरवाही की वजह से ही मेरा बच्चा भी चला गया । इसी वजह से उसे अकेलापन महसूस होता है और वह उखड़ी-उखड़ीसी रहती है बाद में अपनी ही सोच पर उसे पश्चाताप होता है । इसीलिए वह आज्ञानाकारी पत्नी बनकर दरवाजे के पास खड़ी रहती है ताकि पति को किसी चीज की जरुरत हो तो उसे दिया जा सके । जैनेंद्रकुमार ने सुनंदा की मानसिक स्थिति का और सामाजिक समस्या का वर्णन किया है ।

3.2.3 'पत्नी शीर्षक'

शीर्षक कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है । शीर्षक के माध्यम से कहानी के अंत तक पहुँचा जा सकता है । जैनेंद्र की कहानियों के शीर्षक दो से लेकर छः शब्दों वाले रहे हैं । लेकिन छह शब्दों वाले शीर्षक की कहानियाँ कम हैं । गदर के बाद, तमाशा, सज़ा आदि उर्दू भाषा प्रधान भी शीर्षक प्राप्त होते हैं ।

'पत्नी' कहानी का शीर्षक तीन शब्दों का हैं । जो कहानी के मुख्य विषय से जुड़ा हुआ है । इस कहानी का मुख्य पात्र ''सुनंदा'' है जो बच्चे के गम में और अकेलेपन की वजह से हमेशा विचारों में डूबी रहती है । सोचते-सोचते उसे अचानक ध्यान आता है कि दो बजने आये हैं किंतु पति अभी तक भोजन करने के लिए नहीं आये । उन्हें न खाने की फिक्र न मेरी फिक्र । मेरी

तो खैर कुछ नहीं पर अपने तन का तो ध्यान रखना चाहिए । ऐसी ही बेपरवाही से तो वह बच्चा चला गया । उसका मन कितना भी इधर-उधर डोले पर अकेले जब होती है, तब भटक कर वह मन अंत में उसी बच्चे के अभाव पर आ पहुँचती है । इस कहानी के माध्यम से जैनेंद्र ने मन के एकाकीपन से उसमें उठनेवाले विचारों को और उनसे मुक्त होने की भावना को व्यक्त किया है । इस संक्षिप्त शीर्षक में विषय की व्यापकता और व्यंजकता स्थित है अंततः। यह स्पष्ट होता है कि यह शीर्षक जैनेंद्र की अन्य रचनाओं के शीर्षको के समान सार्थक और समुचित भी है ।

3.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* 'पत्नी'कहानी के सामाजिक पहजू का वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

* 'पत्नी'कहानी की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए ।

.....

.....

.....

* कहानी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

.....

.....

.....

* सुनंदा की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* सुनंदा का चरित्र-चित्रण

.....

.....

.....

* 'पत्नी' कहानी का शीर्षक

.....

.....

.....

* कालिंदीचरण

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तर वाले प्रश्न

* सुनंदा के पति का नाम क्या है?

.....

.....

.....

* सुनंदा को किस बात का सदमा पहुँचा था?

.....

.....

.....

* 'पत्नि' कहानी के लेखक का नाम लिखिए ?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''खाने वाले हम चार लोग हैं, खाना हो गया?''

.....

.....

.....

* ''देखों, अब दो बजेंगे । उन्हें न खाने की फिक्र है न मेरी फिक्र । ....''

.....

.....

.....

* ''चलो, उठा लाओ थाली । हमे किसी को यहाँ नहीं खाना है ।''

.....

.....

.....

* ''तरह-तरह की बातें उसके मन में और कंठ में आती थी । उसे ....''

.....

.....

.....

3.4 सारांश

'पत्नी' जैनेंद्र द्वारा रचित कहानी है । इस कहानी में सुनंदा और कालिंदीचरण पति-पत्नी हैं । कालिंदीचरण उग्र दल की ओर से स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करते हैं । इसी वजह से न तो पत्नी और न स्वयं की और ध्यान दे पाते हैं । पत्नी को लगता है इसी वजह से उसका बच्चा भी जाता रहा । बच्चे के जाने के बाद सुनंदा बिल्कुल अकेले पड़ जाती है । हर काम को करते समय बीच में ही सोचने लग जाती है । बच्चे की वही बातें याद आती हैं । वे बड़ी प्यारी आँखें, छोटी-छोटी उंगलियाँ और नन्हें नन्हें ओंठ याद आते हैं । अखेलियाँ याद आती हैं । सबसे ज्यादा उसका मरना याद आता है ।

बच्चे की याद से वह मचल उठती है । तब वह विह्वल होकर आँख पोंछती है और तुरंत इधर-उधर के किसी काम में अपने को उलझा लेना चाहती है । उसी समय कालिंदीचरण अपने दोस्तों के साथ भोजन करने के लिए आते हैं ।

कालिन्दी ने कहा - ''सुनती हो तीन आदमी मेरे साथ और हैं । खाना बन सकें तो कहो नही तो इतने में ही काम चला लेंगे ।'' सुनंदा कुछ भी नहीं बोली । उसके मन में बेहद गुस्सा उठने लगा । ये मुझसे क्षमाप्रार्थी से क्यों बात कर रहे हैं, हँसकार क्यों नहीं कह देते- ''कुछ और खाना बना दो । जैसे में गैर हूँ । अच्छी बात है, तो मैं भी गुलाम नहीं हूँ कि इनके ही काम में लगी रहूँ । मैं नहीं जानती खाना-वाना और चुप रही ।''

बाद में सुनंदा को क्या लगा ? कि बनाया हुआ सारा खाना एक थाली में परोसकर आगे के कमरे में ले जाकर रख दिया है फिर आचार ले जाती है । पानी के ग्लास रखती है और साथ ही दरवाजे की ओट में जाकर खड़ी हो जाती है ताकि पति को किसी चीज की जरुरत हो तो उसे तुरंत दे सकें ।

जैनेंद्र ने इस कहानी के माध्यम से 'पत्नी' के मन में उठने वाली खीज, उसके अकेलेपन को व्यक्त किया है । साथ ही सुनंदा को अपने पत्नी धर्म का भी स्मरण दिला दिया ।

3.5 शब्दार्थ

अँगीठी – चूल्हे की आग
विह्वल – परेशान
आवेश – जल्दबाजी, क्रोध, उत्तेजित होना
मॉजना – बर्तन साफ करना
कहकहा लगना – जोर से हँसना

3.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* जैनेंद्र की स्त्री पात्र प्रधान अन्य कहानियों का परिचय दीजिए ।
* सुनंदा की मनःस्थिति का अंकन कीजिए।
* जैनेंद्र की कहानियों की सूची तैयार कीजिए ।

3.7 अतिरक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* इकाई I – में देखिए

इकाई – 4

पूस की रात – प्रेमचंद

अनुक्रम

4.0 **उद्देश्य**

4.1 **प्रस्तावना**

4.2 **विषय – विवरण**

कहानी – पूस की रात

4.2.1 **पूस की रात का यथार्थवादी दृष्टिकोण**

4.2.2 **'पूस की रात' – शीर्षक**

4.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

4.4 **सारांश**

4.5 **शब्दार्थ**

4.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीयकार्य**

4.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

4.0 उद्देश्य

- प्रेमचंद के ग्रामीण जीवन से संबंधित दृष्टिकोण से परिचित होंगे ।
- सामंतवादी जीवन की वास्तविकता को समझेंगे ।
- इस कहानी के द्वारा सामाजिक–यथार्थ को समझेंगे ।

4.1 प्रस्तावना

कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का नाम अग्रणी रहा है । कथा साहित्य के द्वारा जीवन, समाज, मानवीय संवेदना आदि को अभिव्यक्ति देकर वे केवल उपन्यास सम्राट ही नहीं कहानी सम्राट भी माने जाते है । हिंदी कथा साहित्य की चर्चा प्रेमचंद को टालकर संभव ही नहीं है । वास्तविकता यह है कि प्रेमचंद पूर्व काल में न कहानी कला से लोगों का साक्षात्कार हुआ था, न विषय और कथा की विविधताओं से परिचय हुआ था । इस काल में सस्ते मनोरंजनकारी जासूसी, तिलस्मी तथा ऐयारी कथा साहित्य का प्रचलन था । प्रेमचंद ने जब से कहानी लिखना प्रारंभ किया तब से कहानी के क्षेत्र में एक नई क्रांति हुई ।

जीवनभर अथक संघर्ष का सामना करते रहने के बाबजूद उन्होंने एक दर्जन उपन्यास, उर्दू और हिंदी में मिलाकर साढे चार सौ से अधिक कहानियाँ, निबंध, हंस नामक पत्रिका

का संपादन आदि विपुल एवं श्रेष्ठ लेखन किया है । सन 1915 के बाद 'प्रेमचंद' नाम से कहानियाँ लिखते रहे । सप्त सरोज, प्रेम पचीसी, प्रेम पूर्णिमा, प्रेम पंचमी आदि 25 से अधिक कहानी संग्रह प्रसिद्ध है । इन्हें 'मानसरावर' के आठ खंडो में संग्रहित किया गया हैं । उनकी उर्दू और हिंदी की कहानियों की संख्या अधिक हैं ।

4.2 विषय विवरण

कहानी– 'पूस की रात'

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा – ''सहना आया है । लाओ, जो रुपये रखे हैं; उसे दे दूँ किसी तरह गला तो छूटे । भुन्नी झाड़ू लगा रही थी । पीछे फिरकर बोली – ''तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्बल कहाँ से आवेगा । माघ पूस की रात हार में कैसे कटेगी उससे कह दो, फसल पर दे देंगे । अभी नहीं ।''

हल्कू एक क्षण खड़ा रहकर विचार करने लगा । पूस सिर पर आ गया कम्बल के बिना पूस की रात कैसे कटेगी? मगर सहना की घुड़कियों और तालियों से डरकर हल्कू ने मुन्नी की खुशामद करते हुए कहा – ''ला दे, दे किसी तरह ताला छूटे । कम्बल के लिये दूसरा उपाय सोचूँगा ।''

मुन्नी गुस्से में बोली– ''जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे ? न जाने कितना बाकी है, जो किसी तरह चुकने में ही नहीं आता । तुम खेती छोड़ क्यों नहीं देते ? मैं रुपये न दूँगी – न दूँगी ।''

हल्कू ने उदास होकर कहा – ''तो क्या गाली खाऊ?'' मुन्नी ने जाकर ताक पर रखे पैसे लाकर हल्कू को दिए। हल्कू ने रुपये लिये और इस तरह बाहर चला गया मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो । उसने एक–एक पैसा काट–काटकर तीन रुपये कम्बल के लिये जमा किए थे । वह आज निकले जा रहे थे । उसका एक–एक पग दीनता के भार से दबा जा रहा था । आखिर पूस की रात आ ही गई ।''

आकाश पर तारे ठिठुरते मालूम होते थे । हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था । खाट के नीचे उसका कुत्ता जबरा पेट में मुँह डालें कूँ–कूँ कर रहा था । दोनों भी सो नहीं सके ।

हल्कू – ''क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेटा रह तो यहाँ क्या लेने आये थे । अब खाओ ठण्ड, मैं क्या करु ?''

कूँ–कूँ करते हुए दीर्घ जम्हाई लेकर वह चुप हो गया । हल्कू अब तक आठ चिलम पी चुका, किसी तरह रात तो कट सके । एक –एक भाग्यवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गर्मी से घलबरा कर भागें । मोटे–मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्बल! मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाय । तकदीर की खूबी है । मजूरी हम करें मजा दूसरे लूटें ।

हल्कू चिलम भर कर पीता तो जबरा भी बार–बार उठ बैठता । हल्कू कहता– ''आज और जाड़ा खा ले । कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा...'' उसे थपथपाता रहा

उसके देह से दुर्गंध आ रही थी । गोद में जबरा आनंद ले रहा था । किसी आहट को सुनकर वह भौंकने लगा । कर्तव्य उसके हृदय मे अरमान की भाँति उछाल रहा था ।

रात में ठण्डक बढ़ गई, अभी रात बाकी है सप्तर्षि आसमान में आधे भी नहीं चढ़े है । लग रहा था कि सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है । नींद कैसे आती ?

हल्कू के खेत के एक टप्पे में आमों का बाग था । पतझड़ से ढ़ेर जम गया था । सोचता है पत्तियों को जलाकर गरमी पैदा करूँ । कोई जानवर छिपा बैठने का उसे डर है इसलिए अरहर के खेत से पौधे उठाकर बगीचे की तरफ उन्हें सुलगाता हुआ लेकर आया, पास आया जबरा दुम हिलाने लगा ।

हल्कू ने आग जमीन पर रखी दी पत्तियाँ बटोर ली, हाथ-पैर ठण्ड से गले जा रहे थे । अलावा के सामने बैठा वह ठण्ड को ललकार रहा था - ''क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है! उसने पूछ हिलाई, तेरे जी में आये सो कर ।''

पत्तियाँ जल चुकी थी । बगीचे में अंधेरा छा गया था । हल्कू ने चादर ओढ ली और गीत गुनगुनाने लगा । जबरा भौंकते हुए खेत की ओर भागा, नील गायों का झुण्ड था, वे खेत में चर रही थी । फिर हल्कू सोचता है - जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सक्ता.... जबरा, जबरा को आवाज लगायी । जबरा उसकेपास न आया । जानवर खेत चर रहे थे । फसल तैयार है, सर्वनाश कर डालेंगे अतः हल्कू पक्का इरादा करके उठा किंतु ठण्डी बिच्छू के डंक-सी लगी । जबरा गला फाड़ता रहा, नील गायों ने खेत का सफाया कर दिया था । चद्दर ओढ़े सो गया । धूप फैली थी, नींद खुली हल्कू ने कहा - ''मरते-मरते मैं बचा तुझे अपने खेत की पड़ी है । पेट में ऐसा दर्द हुआ कि मैं ही जानता हूँ ।'' दोनों फिर खेत की मेड पर आये । देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा है और जबरा मड़ैया के नीचे चित्तलेटा है मानो प्राण ही न हों ।

मुन्नी और हल्कू दोनों खेत की दशा देख रहे थे । मुन्नी के मुख पर उदासी छायी थी पर हल्कू प्रसन्न था ।

चिंतित होकर मुन्नी ने कहा - ''अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी ।''

हल्कू ने प्रसन्न होकर कहा - ''रात की ठण्ड में सोना तो न पड़ेगा ।''

4.2.1 'पूस की रात' यथार्थवादी कहानी

प्रेमचंद को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार कहा जाता है । प्रेमचंद युगीन सुधारवादी आंदोलनों नव जागरणकाल के विचारों, स्वतंत्रता के आंदोलन की त्यागमयता ने उन्हें आदर्शवादी बनाया था । असल में प्रेमचंद समाज के यथार्थ को जितनी सूक्ष्मता से जानते थे, उतनी खूबी से शायद ही कोई जानता हो । प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थ के साथ आदर्श एवं समस्या के साथ-साथ उससे मुक्ति के सुझाव भी है ।

प्रेमचंद की 'पूस की रात' कहानी में यथार्थ का जिस तटस्थता के साथ चित्रण हुआ है, वह उन के रचना कौशल का अनुपम नमूना है । हल्कू का मेहनत-मजदूरी कर पेट काट-काटकर एक-एक पेसा इकट्ठा करना ताकि पूस की ठंण्ड से बचने के लिए एक कम्बल

खरीदा जा सके । किंतु सहना के आते ही जैसे सब कुछ खत्म हो जाता है । हल्कू उसकी धुडकियों से छर जाता है और चुपचाप तीन रुपये लाकर उसके हाथ में रख देता है । रुपये देने के बाद जैसे हल्कू के शरीर में प्राण ही नहीं रहते है । मुन्नी क्रोध में कहती है– ''न जाने कितना बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती ।'' इस कहानी में प्रेमचंद ने जमींदारी एवं शोषण का चित्रण किया है । किसान एक बार किसी से सूद पर पैसा उधार ले लेता तो सात पुश्ते भी उस पेसे को अदा नहीं कर पाता थी क्योंकि जितना दिया जाता था, वह तो केवल ब्याज हुआ करता था । मुद्दल तो वैसे ही रहा जाती थी । इसी वजह से किसानों की स्थिति में सुधार नहीं होता था ।

पूस की रात में हल्कू जबरा को लेकर खेत की रखवाली करने के लिये जाता है । ठंड से बचने के लिए उसके पास एक चादर के सिवा कुछ नहीं है । कभी वह जबरा को अपनी गोदी में उठा लेता है, कभी पेड़ों की पत्तियों को इकट्ठा कर उससे आग तापने की कोशिश करता है । कुछ समय के लिये उसे अच्छा लगता है परंतु फिर ठंडी हवा के झोके शरीर में कँप–कँपी पैदा करते हैं। हल्कू–जबरा से कहता है । यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है । उठूँ, फिर एक चिलम भरुँ । किसी तरह रात तो कटे । आठ चिलम तो पी चुका हूँ । यह खेती का मजा । हल्कू के साथ जबरु भी खेत की रखवाली के लिए जाता है । लेकिन खेत में जाते ही दोनों को इतनी ठंड लगती है कि हल्कू घुटनों में गरदन डालकर बैठता है । फिर भी उसकी ठंड नहीं जाती । जबरा हल्कू के पास अपना मुँह ले आकर आता है । जबरा की गर्म साँसें हल्कू को ठंड में राहत देती है । जबरा ने हल्कू की ओर प्रेम से छलकती हुई ऑखों से देखा ।

हल्कू– ''आज और जाडा खा ले । कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा उसी में घुसकर बैंठना, तब जाड़ा न लगेगा । किंतु जोड़े में न तो हल्कू को नींद आती है न जबरा को । कभी इस करवट लेता तो कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाएँ हुए था ।''

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया । उसे कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी किंतु इस ठण्ड में उसे इतना सुख का अनुभव हो रहा था जो इधर महीनों से उसे न मिला था । जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उसे कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी । जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई । ठंड के बावजूद उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा हुई । वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर आकार भौंकने लगा । हल्कू ने उसे कई बार पुचकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया । खेत में चारों तरफ दौड़–दौड़कर वह भौंकता रहा । हल्कू को पत्तों के खडखडाहट की आवाज आती है । वह समझ जाता है खेत में नीलगाय घुस आयी हैं । उनके कूदने–दौडने की आवाजें कान मे साफ सुनाई दे रही थी ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही है फिर मन मे सोचा कि जबरा के होते हुए कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता । उसने जोर से आवाज लगाई–जबरा–जबरा जबरा भौंकता रहा। उसके पास न आया । जानवर खेत चर रहे थे ।

फसल तैयार है । पर ये, दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं ।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो–तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा चुभनेवाला, बिच्छू के डंक सा झोका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलावा के पास आ बैठा। जबरा गला फाडकर भौंकता रहा । हल्कू चादर ओढकर सो गया । सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों ओर धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी – ''क्या आज सोते ही रहोंगे, तुम यहाँ आकार सो गए। उधर सारा खेत चौपट हो गया ।''

हल्कू ने कहा – ''क्या तू खेत से होकर आ रही है । मुन्नी बोली – ''सारा खेत चौपट हो गया ।''

दोनों फिर खेत की मेड पर आये, दिखा सारा खेत रौदा पड़ा है । यह खेती का मजा है । और एक भाग्यवान ऐसे पड़े हैं जिनके पास जाडा जाए तो गरमी से घबराकर भागे । मोटे–मोटे गद्दे लिहाफ, कम्बल, मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है । मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटे । प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से भारतीय कृषक जीवन की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया है ।

4.2.2 'पूस की रात' का शीर्षक

शीर्षक कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है । प्रेमचंद की कहानियों के शीर्षक प्रायः संक्षिप्त और व्यंजक होते हैं । शीर्षक पाठक को सीधे कहानी की ओर ले चलते हैं । प्रेमचंद की कहानियों के शीर्षक एक से छःठ शब्दों वाले रहे हैं । उनकी कहानी में उर्दू शब्दों की भी प्रधानता रही है ।

'पूस की रात' कहानी का शीर्षक तीन शब्दों का है । यह शीर्षक कहानी के मुख्य विषय से तो जुड़ा है ही वह अपने अर्थ में व्यंजना का निर्माण करने में भी समर्थ है ।

कहानी के प्रमुख पात्र हैं – हल्कू, मुन्नी, जबरा । कहानी का केंद्र बिंदु हल्कू और जबरा है । क्यों कि पूस की रात का सामना अपने मालिक के साथ जबरा को भी करना पड़ता है । हल्कू पूस की ठंडी रात में खेत में फसल की रखवाली के लिए जाता है । मालिक के साथ उसका वफादार जबरा भी खेत में जाता है किंतु पूस की ठण्ड रात में हल्कू और जबरा दोनों अकड के रह जाते हैं । उन्हें नील गाय खेत में चरने की आवाज आती है । जबरा भौंकता है । हल्कू हिम्मत करके उठता है । लेकिन हवा का झौंका उसके बदन में ऐसी कँप–कँपी फैला देता है कि वह पुनः अपनी जगह पर आकर सो जाता है । सुबह उठकर देखता है सारे खेत की फसल नष्ट हो चुकी थी पर उसे खुशी थी कि उसे 'पूस की रात' में खेत की रखवाली के लिये तो न आना पड़ेगा ।

4.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* प्रेमचंद ने पूस की रात कहानी में यथार्थ का चित्रण किया है?

.....

.....

.....

* इस कहानी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

.....

.....

.....

* पूस की रात का प्रमुख पात्र हल्कू है – विवेचन कीजिए ।

.....

.....

.....

* कहानी की मुख्य समस्या का विवेचन कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* हल्कू की चरित्रगत विशेषता

.....

.....

.....

* 'पूस की रात' शीर्षक

.....

.....

.....

* कहानी की भाषाशैली

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* कम्बल के लिए हल्कू ने कितने रुपये जमा किए थे?

.....

.....

.....

* हल्कू का साथी – कुत्ते का नाम क्या है?

.....

.....

.....

* मुन्नी कौन है ?

.....

.....

.....

* हल्कू और जबरा ने पूस की रात कैसे काटी ?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''तीन ही तो रुपये है, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा?''

.....

.....

.....

* ''क्यों जबरा, जाड़ा लगता है ....''

.....

.....

.....

* मैं ही जानता हूँ।''

.....

.....

.....

* ''रात की ठण्ड में सोना तो न पड़ेगा ।''

.....

.....

.....

4.4 सारांश

'पूस की रात' प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी है । इस कहानी में प्रेमचंद ने पूस की भयंकर जाड़े की रात में बगैर कम्बल के एक किसान की क्या दुरावस्था होती है उसका वर्णन किया है । भारतीय कृषक प्राचीनकाल से जमींदारी प्रथा का शिकार होता आया है । 'पूस की रात' कहानी मे हल्कू नामक किसान के पूर्वजों ने किसी समय कर्ज लिया होगा । जिसे हल्कू आज भी फसल के माध्यम से अदा कर है, किंतु कर्ज है कि कभी चुकने का नाम ही नहीं लेता । हल्कू मजदूरी करके पेट काट-काटकर तीन रुपये इकट्ठा करता है ताकि जब फसल पक जायेगी तब जंगली जानवरों से खेत की रक्षा करने के लिए ठंड से बचने के लिये कम्बल की जरुरत पड़ेगी किंतु सहना दरवाजे पर आकर पैसे के लिए अड़ जाता है । हल्कू को लगता है मुझे ठंड में मरना मंजूर है पर सहना की गालियाँ और घुड़कियाँ मुझे नहीं सुनना है इसीलिए मुन्नी से पैसे लेकर चुपचाप सहना के हाथ में रख देता है । आखिर पूस की रात आ ही जाती है । हल्कू जबरा को लेकर खेत की रखवाली के लिए जाता है । उसके पास केवल एक चादर है जिससे वह ठंड पर काबू नहीं पा सकता । हल्कू जबरा को अपनी गोद में लेकर बैठना है फिर भी ठंड पर काबू नहीं पा सका । इसीलिए पेड़ों की पत्तियों को इकट्ठा कर उसे जलाते हैं । कुछ देर तक गर्मी महसूस होती है । उसके बाद फिर ठंडी हवा के झोंके शरीर में कँप-कँपी पैदा करते हैं । आधी रात बितने के बाद खेत पर नीलगायों का हमला होता है । जबरा जोर जोर से भौंकता है । एक पल के लिए हल्कू भी हिम्मत करके उठता है । कुछ कदम ही चलता है कि हवा का झोंका पूरे शरीर में सिहरन पैदा कर देता है । वह पुनः वापस आकर सो जाता है । सुबह उठकर देखता है तो सारा खेत नष्ट हो चुका है । मुन्नी, हल्कू से कहती है सब कुछ नष्ट हो गया तब हल्कू प्रसन्न था क्योंकि अब उसे इस ठंड में कम से कम खेत की रखवाली तो नहीं करनी पड़ेगी ।

4.5 शब्दार्थ

हार	-	ठंड
घुड़कियाँ जमाना	-	आँखें बड़ी-बड़ी करके बात करना
आला	-	लालटेन रखने की जगह
पछुआ	-	पश्चिम दिशा से चलने वाली हवा
पुआल	-	पत्ते डालकर झोंपडी तैयार करना, घास
अरहर	-	तुवर की दाल

4.6 स्वाध्याय - क्षेत्रीय कार्य

* 'पूस की रात कहानी' का वातावरण अपने शब्दों में लिखिए ।
* प्रेमचंद की इस कहानी का मूल्यांकन कीजिए ।
* प्रेमचंद की आपने पढ़ी हुई कहानियों की सूची बनाइए ।
* किसान के साथ साक्षात्कार कीजिए ।

4.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें -

* इकाई I - में देखिए

इकाई – 5

परदा – यशपाल

अनुक्रम

5.0 **उद्देश्य**

5.1 **प्रस्तावना**

5.2 **विषय – विवरण**

कहानी – परदा

5.2.1 **चरित्र–चित्रण**

5.2.2 **'परदा' का वातावरण**

5.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

5.4 **सारांश**

5.5 **शब्दार्थ**

5.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीयकार्य**

5.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

5.0 उद्देश्य

- स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मध्यवर्ग के जीवन से अवगत होना ।
- कहानीकार की अपने परिवेश के प्रति समझ और जीवनदृष्टि को समझना ।
- इस कहानी की रचना प्रक्रिया से परिचत होना ।

5.1 प्रस्तावना

यशपाल हिंदी कहानी साहित्य के प्रेमचंद युग के अंतिम चरण के कहानीकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते है । वे वस्तुतः सामाजिक यथार्थ को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से प्रस्तृत करने वाले कहानीकार माने जात है । मूल रूप से उपन्यासकार के रूप में चर्चित एवं स्थापित यशपाल ने अनेक श्रेष्ठ और सशक्त कहानियाँ लिखीं । इनका पहला कहानी संग्रह 'पिंजरे की उड़ान' सन् 1939 ई. में प्रकाशित हुआ । इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रहों में ज्ञानदान, अभिशप्त, तर्क का तुफान, वो दुनिया, फूलों का कृर्ता, धर्मयुद्ध, उत्तराधिकारी, उत्तमी की माँ, सच बोलने की भूल, खच्चर और आदमी आदि उल्लेखनीय हैं ।

यशपाल ने अपनी कहानियों में नैतिक मान्यताओं के प्रति प्रतिष्ठा, यथार्थ की स्वीकृति, रुढ़ियों के प्रति विद्रोही, हीन, उपेक्षितों एवं असहाय लोगों के प्रति सहानुभूति

आदि को निःसंकोच व्यक्त किया है । रुढ़ियों एवं परंपरा के प्रति विद्रोह उनकी कहानियों में अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है । मध्यवर्ग कहानियों के केंद्र में है । असंगतियों, विरोधाभासों, आंतरिक विरोधों और दुर्बलताओं के मध्य से गुजर कर इनकी कहानियाँ संतोषजनक लक्ष्य तक पहुँचती है । प्रस्तुत कहानी 'परदा' में उन्होंने ऐसे ही एक मध्यमवर्गीय परिवार के आर्थिक खोखलेपन, सामाजिक संघर्ष और परंपरा से चलती आई झूठी मान-प्रतिष्ठा की मानसिकता का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है । मध्यमवर्गीय परिवार की अपनी रुढ़ि और परंपरा के प्रति भावुकता, यथार्थ जीवन की तमाम कटुताओं और विडंबनाओं से तालमेल बैठाने के असफल प्रयासों का चित्रण इस कहानी में बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है । इस कहानी में जीवन जिने का नहीं बल्कि ढ़ोने का भाव मिलता है जो मुख्यतः स्वातंत्र्योत्तर मध्यमवर्गीय परिवार के मुखिया का जीवन संघर्ष है । जो रोटी, कपडा और मकान के लिए लड़ाई लड़ रहा है । आर्थिक प्रभावों के बीच से गुजरता वह भूख, बेकारी, बीमारी आदि कई समस्याओं से एक साथ लड़ता हुआ अपने परिवार की आबरु को बचाने के असफल प्रयासों में जुटा है । उसकी विवशता और लाचारी को कटु सच्चाई के साथ यशपाल ने प्रस्तुत किया है ।

5.2 विषय विवरण

कहानी- 'परदा'

चौधरी परिबख्श के दादा चुंगी के महकमे में दारोगा थे । आमदनी अच्छ थी । एक छोटा, पर पक्का मकान भी उन्होंने बनवा लिया । दोनों लड़कों को पूरी तालीम दी, दोनों मैट्रेस पार कर रेल्वे और डाकखाने में बाबू हो गए । चौधरी साहब के लड़कों के ब्याह और बाल-बच्चे भी हुए लेकिन ओहदे में खास तरक्की नहीं हुई, वही तीस और चालीस रुपये माहवार का दर्जा ।

अपने जमाने की याद कर चौधरी साहब कहते - "वो भी क्या वक्त थे । लोग मिडिल पास कर डिप्टी-कलक्टरी करते थे और आजकल की तालीम है कि एण्ट्रेस तक अंग्रेजी पढ़कर लड़के तीस-चालीस से आगे नहीं बढ पाते । बेटों को ऊँचे ओहदों पर देखने का अरमान लिए उन्होंने आँखें मूँद ली ।"

इंशाअल्ला, चौधरी साहब के कुनबे में बरकत हुई । चौधरी फजल कुरबान रेलवे में काम करते थे । अल्लाह ने उन्हें चार बेटें और तीन बेटियाँ दी । चौधरी इलाहीबख्श डाकखाते में थे । उन्हें भी अल्लाह ने चार बेटें और दो लड़कियाँ बख्शीं ।

चौधरी खानदान अपने मकान को हवेली पुकारता था । नाम बड़ा देने पर भी जगह की तंगी थी । दारोगा साहेब के जमाने में जनाना भीतर था और बाहर बैठक में वे नैचा गुड़गुड़ाया करते । जगह की तंगी के कारण बैठक भी जनाने में सामील हो गई और घर की ड्योढ़ी पर पर्दा लटक गया । दोनों भाइयों के बाल-बच्चें एक मकान में रहते पर भीतर सब अलग-अलग था । तीसरी पीढ़ी के ब्याह-शादी होने लगे । आखिर चौधरी खानदान की औलाद

को हवेली छोड़, दूसरी जगह तलाश करनी पड़ी । चौधरी इलाहबख्श के बड़े साहेब जादे डाकखाने में बीस रुपये की क्लर्की पा गए । दूसरे अस्पताल में कम्पाडण्डर बन गए । तीसरे होनहार थे । वजीफा पाकर मिडिल कर स्कूल में मुदर्रिस हो देहात चले गए । चौथे लड़के पीरबख्श प्राइमरी से आगे न बढ़ सके । उनका ब्याह हो गया । मौला के करम से बीबी की गोद भी जल्दी भरी । रोजगार के तौर पर खानदान की इज्जत के लिए एक तेल की मिल में उन्होंने मुंशीगिरी कर ली ।

बारह रुपया महीना अधिक नहीं होता । चौधरी पीरबख्श को मकान सितवा की कच्ची बस्ती में लेना पड़ा । मकान का किराया दो रुपया था । आसपास के गरीब और कमीन लोगों की बस्ती थी । गली के मुहाने पर लगे कमेटी के नल से टपकते पानी की काली धारा बहती । नाली पर मच्छरों और मक्खियों के बादल उमड़ते रहते । सारी बस्ती में चौधरी पीरबख्श ही पढ़े-लिखे सफेदपोश थे सिर्फ उनके ही घर की ड्योढी पर पर्दा था । उनके घर की औरतों को कभी किसी ने गली में नहीं देखा । पीरबख्श खुद ही मुस्कराते हुए सुबह-शाम कमेटी के नल से घड़े भर लाते ।

चौधरी की तनख्खाह पन्द्रह बरस में बारह से अठारह हो गई । पाँच बरस में पाँच बच्चे हुए । जहाँ बाल-बच्चें और घर-बार होता है, सौ किस्म की झंझटें होती हैं । ऐसे वक्त में कर्ज की जरूरत कैसे न हो? हर महीने की सात तारीख को गिनकर तनख्वाह मिल जाती है । पेशगी से मालिक को चिढ है । जरूरत पडने पर चौधरी घर की छोटी-मोटी कोई चीज गिरवी रखकर उधार ले आते । मुहल्ले में चौधरी पीरबख्श की इज्जत थी । इज्जत का आधार था घर के दरवाजे पर लटका परदा । कभी बच्चों की खींच-खाँच या बेदर्द हवा के झोंकों से उसमें छेद हो जाते तो हाथ-सुई-धागा ले उसकी मरम्मत कर देते । मकान के ड्योढ़ी के किवाड बिलकुल गल गए थे । मकान मालिक सूरज पांडे को उसकी फिक्र न थी । चौधरी कभी जाकर कहते-सुनते तो उत्तर मिलता - ''कौन बड़ी रकम थमा देते हो? दो रुपल्ली किराया और वह भी छः-छः महीने का बकाया । जानते हो लकड़ी का क्या भाव है? न हो मकान छोड़ जाओ ।'' आखिर किवाड़ गिर गए । रात-भर दहशत कि कहीं कोई चोर न आ जाये । चोर से ज्यादा फिक्र थी आबरु की, किवाड़ न रहने पर पर्दा ही आबरू का रखवाला था । वह पर्दा भी हारतार होते-होते एक रात आँधी में किसी भी हालत में लटकने लायक न रह गया । दूसरे दिन घर की एकमात्र पुश्तैनी चीज दरी दरवाजे पर लटक गई । मुहल्लेवालों ने देखा और चौधरी को सलाह दी - ''अरे चौधरी, इस जमाने में दरियों को काहे खराब करोंगे ? बाजार से ला टाट का टुकड़ा लटका दो ।'' पीरबख्श टाट की कीमत भी आते-जाते पूछ चुके है । हँसकर बोले - ''होने दो, क्या है ? हमारे यहाँ पक्की हवेली में भी ड्योढी पर दरी का ही पर्दा रहता था ।''

कपड़े की महँगी के इस जमाने मैं घर की पाँचों औरतों के शरीर से कपड़े जीर्ण होकर यों गिर रहे थे, जैसे पेड़ अपनी छाल बदलते हैं । चौधरी साहब की आमदनी से आटे के अलावा कपड़े की गुंजाइश कहाँ । गिरवी रखने के लिए घर में कुछ न हो, गरीब का एकमात्र सहायक है पंजाबी खान । दस महीने पहले गोद के लड़के बरकत के जन्म के समय पीरबख्श

को रुपये की जरूरत आ पड़ी । कही कोई प्रबंध न हो सकने के कारण उन्होंने पंजाबी खान बब्बर अली खाँ से चार रुपये उधार ले लिए थे । चार आना रुपया महीने पर चार रुपया कर्ज लिया । आठ महीने में अदा होना तय हुआ । सात महीने फाँका करके भी वे किसी तरह से किश्त देते चले गए, लेकिन जब सावन में बरसात पिछड गई और बाजारा भी रुपये का तीन सेर मिलने लगा तो किश्त देना संभव न रहा । पीरबख्श ने खान की दाढ़ी छू और अल्ला की कसम खा एक महीने की मुआफी चाही । अगले महीने एक का सवा देने का वायदा किया । भादों मे हालत और परेशानी की हो गई । बच्चों की माँ की तबियत गिरती गई । गेहू मुश्किल से रुपये का सिर्फ ढाई सेर मिलता । चौधरी को दो रुपये महँगाई भत्ते के मिले, पर पेशगी लेते-लेते तनख्वाह के दिन केवल चार ही रुपये हिसाब में निकले । बड़ी कठिनता से मिले चार रुपयों में से सवा रुपया खान के हाथ में धर देने की हिम्मत चौधरी को न हुई ।

खान के भय से उनका दिल डूब रहा था । सात तारीख की शाम को असफल हो खान आठ की सुबह खूब तड़के ही डंडा हाथ में लिए दरवाजे पर मौजूद हुआ । रात-भर सोच विचार करके चौधरी ने खान के लिए बयान तैयार किया कि मिल मालिक लालाली चार रोज के लिए बाहर गए है । तनख्वाह मिलते ही वह सवा रुपया हाजिर करेगा । माकूल वजह बताने पर भी खान बहुत देर तक गुर्राता रहा - ''अम वतन चोड़ के परदेश में पड़ा है, ऐसे रुपया छोड़ देने के वास्ते, अम यहाँ नहीं आया है, अमारा भी बाल-बच्चा है । चार रोज में रुपया नई देगा तो अम तुमारा... कर देगा ।''

पाँचवें दिन रुपया कहाँ से आता । मालिक ने पेशगी देने से साफ इन्कार कर दिया । जान-पहचान के कई आदमियों के यहाँ गए पर उत्तर मिला- ''मियाँ, पैसे कहाँ इस जमाने में । पैसे का मोल कौडी नहीं रह गया । हाथ में आने से पहले ही उधार में उठ गया तमाम ।'' घर पहुँचने पर सुना कि खान आया था और घण्टे भर तक ड्योढी पर लटके दरी के पर्दे को डंडे से ठेल ठेलकर गाली देता रहा । पर्दे की आड़ से खड़ी बीबी के बार-बार खुदा की कसम खा यकीन दिलाने पर कि चौधरी बाहर गए है, रुपया लेने गए है, खान गाली देकर कहा - ''नई, बदजात चोर बीतर में चिपा है! अम चार घंटे में फिर आता है । रुपया लेकर जाएगा । रुपया नहीं देगा, तो उसका खाल उतारकर बाजार में बेच देगा । ... अमारा रुपिया क्या अराम का है ?''

खान के दुबारा उकारने पर चौधरी का शरीर निर्जीव प्राय होने पर भी निश्चेष्ट रह सका । उठकर बाहर आ गए । खान के घुटने छू, अपनी मुसीबत को बता वे मुआफी के लिए खुशामद करने लगे । पर खान डंडा फटकाकर कह रहा था - ''पैसा नहीं देना था, लिया क्यों? तनख्वाह किदर में जाता ? अरामी अमारा पैसा मारेगा । आज तुम्हारा खाल खींच लेगा । पैसा नई है, तो घर पर परदा लटका के शरीफजादा कैसे बनता...

.... तुम अमको बीबी का गैना दो, बर्तन दो, कुछ भी तो दो, अम ऐसे नई जाएगा ।''

बिलकुल बेबस और लाचारी में दोनों हाथ उठा खुदा से खान के लिए दुआ माँग पीरबख्श ने कसम खाई, एक पैसा भी घर में नहीं, बर्तन भी नहीं, कपड़ा भी नहीं, चाहे तो बेशक उसकी खाल उतारकर बेचले । खान और आग हो गया ।

''अम हुमारा दुआ क्या करेगा? तुम्हारा खाल क्या करेगा उसका तो जूता भी नहीं बनेगा । तुमारा खाल से तो यह टाट अच्छा ।'' खान ने ड्योढी पर लटका दरी का पर्दा झटक लिया । ड्योढी से पर्दा हटने के साथ ही, जैसे चौधरी के जीवन की डोर टूट गई । वह डगमगाकर जमीन पर गिर पड़े । सहसा पर्दा हट जाने से औरतें ऐसे सिकुड गई, जैसे उनके शरीर का वस्त्र खींच लिया गया हो । वह पर्दा ही तो घर-भर की औरतों के शरीर का वस्त्र था । उनेक शरीर पर बचे चीथड़े उनेक एक-तिहाई अंग ढँकने में भी असमर्थ थे ।

जाहिल भीड़ ने घृणा और शर्म से आँखे फेर ली । उस नग्नता की झलक से खान की कठोरता भी पिघल गई । ग्लानि से थूक, उसने परदे को आँगन में वापस फेंक दिया और असफल लौट गया । चौधरी बेसुध पड़े थे । जब उन्हें होश आया, ड्योढी का परदा आँगन के सामने पडा था । परंतु उसे उठाकर फिर से लटका देने की सामर्थ्य उनमें शेष न थी । पर्दा जिस भावना का अवलम्ब था, वह मर चुकी थी ।

5.2.1 **चरित्र-चित्रण**

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी की विकास यात्रा में विषय-वस्तु की हावी से तथा विभिन्न व्यक्ति चरित्रों का यथार्थ अंकन करने वाले कहानीकारों में यशपाल विशिष्ट स्थान रखते है । प्रस्तुत कहानी 'परदा' में चरित्रों की संख्या अधिक नहीं है । इस कहानी के मुख्य चरित्रो में चौधरी पीरबख्श और बबर अलीखाँ ही महत्त्वपूर्ण है और वह कहानी लगभग इन दोनों के बीच हुए व्यवहार के आसपास ही बुनी गई है । अन्य चरित्रों का कहानी के विकास में अधिक योगदान हीं है । कहानी में इन चरित्रों की भूमिका केवल नाममात्र के लिए है । चौधरी पीरबख्श एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार में मुखिया है और पाँच बच्चों के पिता है। उनकी माँ भी उन्हीं के साथ रहती है । इस प्रकार कुल आठ सदस्यों वाले इस परिवार के भरण-पोषण की सारी जिम्मेदारी चौधरी पीरबख्श के उपर है । पढ़ाई अधिक न होने के कारण रोजगार के तौर पर वे एक तेल की मिल में मुंशीगिरी करते है । इस काम का उन्हें बारह रुपया महीना वेतन मिलता है । इस बारह रुपयों में इतने बड़े परिवार के रोटी, कपड़ा और मकान का इंतजाम उनके लिए दिन-प्रति-दिन कठिन होता जाता है। कहानीकार ने पीरबख्श के माध्यम से मध्यमवर्गो के भारतीय परिवारों की आर्थिक तंगी और विवषशताओं का मार्मिक चिंतन किया है । कहानीकार कहते हैं - ''जहाँ बाल-बच्चें ओर घर-बार होता है, सौ किस्म की झंझटे होती ही है । कभी बच्चे को तकलीफ है, तो कभी जच्चे को । ऐसे वक्त में कर्ज की जरुरत कैसे न हो? घरबार हो तो कर्ज भी होगा ही ।''

चौधरी पीरबख्श की दूसरी समस्या है खानदान की इज्जत बनाये रखना । इस इज्जत का प्रतीक है 'परदा' जो उनके सफेदपोश खानदान का एकमात्र पुश्तैनी चीज थी । हर हाल में इस इज्जत का बना रहना जरुरी था । कुल पंद्रह बरस की मुंशीगिरी में उनका वेतन केवल बारह से अठारह रुपया हो पाया था । आर्थिक तंगी और बढ़ती जरूरतों के दबाव में कर्ज के तले अपना सब कुछ धीरे-धीरे खोने वाले पीरबख्श का अस्तित्व इस कहानी का यथार्थ व्यक्तित्व है । कर्ज में डूबे पीरबख्श को अंत में अपना आत्मसम्मान तक गिरवी रखना पड़ता

है । यहाँ तक कि बकाये कर्ज की अंतिम किश्त चुकने में असमर्थ चौधरी पीरबख्श की बेबसी और लाचारी का बड़ा ही हृदयस्पर्शी चित्रण कहानीकार ने किया है – ''बिल्कुल बेबस और लाचारी में दोनों हाथ उठा खुदा से खान के लिए दुआ माँग पीरबख्श ने कसम खाई, एक पैसा भी घर में नहीं, बर्तन भी नहीं, कपड़ा भी नहीं, चाहे तो बेशक उसकी खाल उतारकर बेच ले ।''

पीरबख्श उस मध्यवर्गीय मनोवत्ति का प्रतीक है जिसमें आर्थिक तंगी को सहने और उसमें जिंदगी भर घुटते रहने की विवशता है । उसकी दयनीय अवस्था, लाचारी और आबरु के डर का संवेदनशील चित्रण कहानी में हुआ है ।

दूसरा मुख्य चरित पंजाबी खान बब्बर अलीखाँ है । गरीब, लाचार, विवश लोगों का आर्थिक शोषण करने वाले शैतान के रूप में लेखन ने उसके व्यक्तित्व को चिरित्र किया है । मुहल्ले का लगभग हर आदमी उसका कर्जदार हैं । वह लोगों को पैसों की जरूरत पड़ने पर सहायता तो करता है परंतु कर्ज और सूद की किश्त न मिलने पर कर्जदारों के घर आकार उनके दरवाजे डंडे से पीटता है । वह एक बेरहम साहूकार है जिसकी शरण लेने और उससे अपमानित होने के लिए लगभग हर व्यक्ति विवश है । वह सहारा भी है और समस्या भी । स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक परिवेश में ऋण लेना और उसे चुकाने में असमर्थ होने जैसी परिस्थितियों को सामाजिक विद्रुपता के रूप में अनुभव किया गया है । वहीं आर्थिक विषमताओं पर भी प्रकाश डाला गया है । बबर अलीखाँ गरीब, लाचार, बेबस लोगों की दयनीय अवस्था के लिए जिम्मेदार है । वह धूर्त और कपटी है । लोगों की सहायता करने के नाम पर वह उन्हें आर्थिक और मानसिक रुप से खोखला और कमजोर बनाता है । वह भय और आतंक का प्रतीक है । पैसे के रूप में कर्ज न चुका पाने की अवस्था में वह घर की जरूरी चीजों को छीन लेने में भी हिचकता नही हैं – ''तुम अम को बीबी का गैना दो, बर्तन दो, कुछ भी तो दो, अम ऐसे नई जाएगा ।''

वह आर्थिक अभाव से जूझ रहे परिवारों का खून चूसता है । वह पूरा प्रयास करता है कि पीरबख्ब से पैसा लेकर रहेगा । ड्योढ़ी का पर्दा खींच लेने पर जब वह चौधरी पीरबख्श के परिवार की हालत देखता है तो उसकी कठोरता पिघल जाती है । उसका बेरहम हृदय उसे झक–झोरता है और उसे ग्लानि होती है । पर्दा वह पर फेंक वहाँ असफल हो लौट जाता है ।

5.2.2 'परदा' का वातावरण

'परदा' कहानी में स्वातंत्र्योत्तर भारत के निम्न मध्यवर्ग का अत्यंत करूण, दयनीय और संवेदनशील चित्रण हुआ है । कहानी की कथावस्तु में मुख्यतः आर्थिक और सामाजिक परिवेश का महत्त्व दिया गया है । आर्थिक तंगी या बदहाली को एक मुख्य समस्या के रूप में रख कहानीकार ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है । आर्थिक तंगी के परिणामस्वरूप भूख, गरीबी, बिमारी से लड़ते हुए परिवारों के आर्थिक शोषण, आर्थिक असमानताओं, विवशताओं और समस्यायों की कठोर मार से टूटते, दरकते अस्तित्वों का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है । एक अदद इज्जतदार जीवन की सुरक्षा के लिए, जिसका प्रतीक मात्र एक

दरी का परदा है । जो केवल परदा ही नहीं है , इज्जत से जीवन जीने की भावना का अवलंब है, टूटते ही परिवार का अपना आत्मविश्वास भी टूट जाता है ।

कहानीकार ने इस परदे को इज्जत की रखवाली करने वाली एक सामाजिक इकाई के रुप मे प्रस्तुत किया है । जीवन की तमाम हीनताओं और कटुताओं के बीच भी एक परदा घर के लिए सुरक्षा का जो घेरा पैदा करता है वह शोषण, दमन और आतंक के बीच खुद अपनी सुरक्षा नहीं कर पाता ।

5.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* '' 'परदा' कहानी में स्वातंत्र्योत्तर मधयवर्गीय परिवार के आर्थिक समस्याओं और विवशताओं का चित्रण हुआ है,'' सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* 'परदा' कहानी के प्रतीकात्मक अर्थ और आशय को समझाइए ।

.....

.....

.....

* कहानी के तत्वों के आधार पर 'परदा' कहानी का मूल्यांकन कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* 'परदा' शीर्षक

.....

.....

.....

* पीरबख्श का चरित्र–चित्रण

.....

.....

.....

* 'परदा' की भाषाशैली

.....

.....

.....

* 'परदा' कहानी का यथार्थ

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* चौधरी पीरबख्श ने बब्बर अलीखाँ से ऋण क्यों लिया?

.....

.....

.....

* चौधरी पीरबख्श कितनी किश्तों में ऋण चुकाने का वायदा किया था?

.....

.....

.....

* चौधरी पीरबख्श जमीन पर डगमगा कर क्यों गिर पड़े ?

.....

.....

.....

* चौधरी की इज्जत का आधार क्या था?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''नई, बदजात चोर बीतर में चिपा है । अम चार घंटे में फिर आता है । रुपया लेकर जाएगा ।''

.....

.....

.....

* ''सहसा परदार हट जाने से औरतें ऐसे सिकुड गई, जैसे उनके शरीर का वस्त्र खीच लिया गया हो ।''

.....

.....

.....

* ''चोर से ज्यादा फिक्र थी आबरू की । किवाड़ न रहने पर पर्दा ही आबरू का रखवाला था ।''

.....

.....

.....

* ''तुम अमको बीबी का गैना दो, बर्तन दो कुछ भी दो, अम ऐसे नहीं जाएगा ।''

.....

.....

.....

5.4 सारांश

यशपाल जी ने प्रस्तुत कहानी में निम्न मध्यवर्गीय परिवारों का जीवन परिवेश, मनोवृत्ति और संघर्ष का चित्रण किया है । इस कहानी में आर्थिक असमानता के क्रूर चेहरे के साथ-साथ गरीबी और लाचारी में जी रहे बदबूदार जीवन के यथार्थ परिवेश का संवदेनशील और मार्मिक अंकन हुआ है । दूसरी ओर जीवन की तमाम कटु सच्चाइयों के बीच एक आम सफेदपोश और पवित्र जिंदगी को तलाशने का प्रयास भी मिलता है । 'परदा' पीरबख्श के पीरवार की सिर ढकाई की तरह है । वे उस परदे के पीछे अपनी तमाम कमियों को छिपाने में सफल है । परदा वह भावना है जिसमें उनका परिवार कई पीढ़ियों से अपने को शर्मसार होने से बचाता आया है । 'परदा' उनके दांभिक जीवन का प्रतीक नहीं है और न ही झूठी शान है । रोटी, कपड़ा जैसे तमाम बुद्धिवादी जरूरतों के अभाव और ऋण के दबाव में पीरबख्ब का परिवार केवल परदे के कारण ही साँसे ले रहा है और समस्याओं से लड़ भी रहा है । यह कहानी जिस समस्या और भावना को उजागर करती है वही हमारी सोच और संवेदना को भी जगाती है ।

5.5 शब्दार्थ

महकमा	–	विभाग
सफेदपोश	–	भला, शिष्ट आदमी

तालीम	–	शिक्षा
ओहदा	–	पद
कुनबा	–	परिवार
वाल्द–वालिद	–	माँ–बाप
पेशगी	–	काम करने के पहले दिया गया मूल्य
पुश्तैनी	–	कई पीढ़ियों से
बरकत	–	कृपा, अनुग्रह
जईफ	–	कमजोर, वृद्ध
बीबी	–	पत्नी
जाहिल	–	अशिक्षित, उज्जड
अवलंब	–	सहारा, ओट
फाके पड़ना	–	भूखा रहना
चौराई	–	एक प्रकार की सब्जी
बिल–बिलाना	–	पीड़ा, गिड़गिड़ाना
ढेलना	–	धकेलना
खाल खींचना	–	शरीर से त्वचा निकालना

5.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* ऋण की समस्या को लेकर लिखी गई हिंदी कहानियों का सर्वेक्षण कीजिए ।
* मध्यवर्ग की आर्थिक मनोवृत्ति से संबद्ध यशपाल की कहानियों की विशेषताएँ बताइए।
* यशपाल की आपने पढ़ी हुई कहानी का मूल्यांकन कीजिए ।
* यशपाल के किसी कहानी संग्रह की कहानियों का पठन कीजिए ।

5.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* इकाई I – में देखिए

इकाई – 6

परमात्मा का कुत्ता–मोहन राकेश

अनुक्रम

6.0 **उद्देश्य**

6.1 **प्रस्तावना**

6.2 **विषय – विवरण**

कहानी – परमात्मा का कुत्ता

6.2.1 **चरित्र–चित्रण**

6.2.2 **वातावरण**

6.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

6.4 **सारांश**

6.5 **शब्दार्थ**

6.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

6.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

6.0 उद्देश्य

- आधुनिक कहानी लेखन की यथार्थवादी शैली से परिचित होना ।
- कहानीकार के दृष्टिकोण से अवगत होना ।
- आनुधिक हिंदी कहानी के परंपरा में मोहन राकेश की उपलब्धियों और परिवेश के प्रति उनकी सजगता का आकलन करना ।

6.1 प्रस्तावना

कहानीकार मोहन राकेश स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी के क्षेत्र की नई प्रतिभाओं में से एक उज्ज्वल नक्षत्र है । वे नई कहानी आंदोलन के प्रवर्तकों में से एक माने जाते हैं । आपकी कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित है, इनमें इंसान का खण्डहर, नये बादल, जानवर और जानवर आदि उल्लेखनीय हैं । प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' उनके 'जानवर और जानवर' संकलन में संकलित है । यह संकलन मोहन राकेश की तत्कालीन मनःस्थिति और परिवेश की पकड़ को उजागर करता है । मोहन राकेश वस्तुतः नाटककार है परंतु हिंदी कहानी विधा को नया स्वर, संवेदना और गहराई प्रदान करने में उनका योगदान उल्लेखनीय है । उनकी अनेक कहानियाँ पूरी तरह से सामाजिक परिप्रेक्ष में लिखी गयी प्रवाही कहानियाँ हैं । वे मूलतः तनाव के कहानीकार

माने जाते हैं । उनकी कहानियों में युगीन संक्रमण के फलस्वरूप बदलते नगरीय जीवन, आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने वाले निम्न मध्यवर्ग की यातना, विवशता और आत्मवंचना सहते-भोगते व्यक्ति की जिजीविता, आक्रोश, खीज़, चिढ़, विद्रोह, टकराहर और जीवन-संघर्ष का चित्रण मिलता है ।

प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' उनेक संग्रह की सबसे प्रभावशाली कहानी है । इस कहानी में लेखक ने सांकेतिकता से काम लेतें हुए बेरहम सरकारी व्यवस्था से लडते, टकराते एक आम-आदमी के साहस का मार्मिक चित्रण किया है । आदमी के कुत्ते और परमात्मा के कुत्ते का विरोध उभारते हुए मोहन राकेश सरकारी व्यवस्था के खोखलेपन, निष्क्रियता, रिश्वतखोरी और अन्याय से ग्रस्त परिवेश को तोडने के लिए बेचैन, संतप्त, विवश और उपेक्षित व्यक्ति का चित्रण यथार्थ शैली में किया है ।

6.2 विषय विवरण

परमात्मा का कुत्ता – मोहन राकेश

कथानक

बहुत-से लोग यहाँ-वहाँ सिर लटकाये बैठे थे जैसे किसी का मातम करने आये हो । कुछ लोग अपनी पोटलियाँ खोलकर खाना खा रहे थे । छोटे कुलचे वालों का रोजगार गरम था और कमेटी के नल के पास छोटा-मोटा क्यू लगा था । नल के पास कुर्सी डालकर बैठा अर्जीनवीस धड़ाधड़ अर्जियाँ टाइप कर रहा था । उसके माथे से बहकर पसीना उसके होठों पर आ रहा था लेकिन उसे पोंछने की फुरसत नहीं थी । कमीजो के आधे बटन खोले और बगल में फाईलें दबाये कुछ बाबू एक-दूसरे से छोड़खानी करते, रजिस्ट्रेशन ब्रांच से रिकार्ड ब्रांच की तरफ जा रहे थे । लाल बेल्ट वाला चपरासी, आसपास की भीड़ से उदासीन अपने स्टूल पर बैठा मन-ही-मन कुछ हिसाब कर रहा था । सारे कम्पाउण्ड में सितंबर की खुली धूप फैली थी । एक सत्तर-पचहत्तर वर्ष की बुढ़िया लोगों से पूछ रही थी कि वह आपने लड़के के मरने के बाद उसके नाम एलॉट हुई जमीन की हकदार हो जाती है या नहीं ...?

अन्दर हॉल के कमरे में फाइलें धीरे-धीरे चल रही थी । दो-चार बाबू बीच की मेज के पास जमा होकर चाय पी रहे थे । उनमें से एक दप्तरी कागज पर लिखी, अपनी ताजा गजल दोस्तों को सुना रहा था । एक फरमायशी कहकहा लगा जिसे 'शी-शी' की आवाजों ने बीच में ही दबा दिया । कह-कहे पर लगाई गई इस ब्रेक का मतलब था कि कमिश्नर साहब अपने कमरे मे तशरीफ ले आये है । कुछ देर का वक्फा रहा, जिसमें सुरजीत सिंह वल्द गुरमीत सिंह की फाइल एक मेज से एक्शन के लिए दूसरी मेज पहुँच गयी, सुरजीतसिंह वल्द गुरमितसिंह मुस्कराता हुआ हाल से बाहर चला गया और जिस बाबू की मेज से फाइल गयी थी, वह पाँच रुपये के नोट को सहलाता हुआ चाय पीने वालों के जमघट में शामिल हुआ ।

साहब के कमरे में घंटी हुइ। चपरासी मुस्तैदी से उठकर अंदर आया और उसी मुस्तैदी से वापस आकार फिर अपने स्टूल पर बैठ गया । कमिशनर साहब ने मेज पर ढ़ेर से कागजों

पर एक साथ दस्तखत किया और पाइप सुलगाकर ''रीडर डाइजेस्ट'' का ताजा अंक बैग से निकाल लिया । पृष्ठ एक सौ ग्यारह खोलकर वे हृदय के हुए आपरेशन का व्यौरा पढ़ने लगे । तभी बाहर से कुछ शोर सुनाई देने लगा ।

कम्पाउण्ड के पेड़ के नीचे बिखरकर बैठे लोगों में चार नये चेहरे आ शामिल हुए थे । एक अधेड़ आदमी था जिसने अपनी पगड़ी जमीन पर बिछा ली थी और हाथ पीछे करके तथा टाँगे फैलाकार उस पर बैठ गया था । पगड़ी के सिरे की तरफ उससे जरा बड़ी उम्र की एक स्त्री और एक जवान लड़की बैठी थी और उनके पास खड़ा एक दुबला-सा लड़का आस-पास की ओर घूरती नजर से देख रहा था । अधड़ आदमी ऊँची आवाज में बोलता हुआ अपने घुटने पर हाथ मार रहा था ''सरकार वक्त ले रही है । दस पाँचसाल में सरकार फैसला करेगी कि अर्जी मंजूर होनी चाहिए या नहीं । सालो, यमराज भी तो हमारा वक्त गिन रहा है । उधर वह वक्त पूरा होगा इधर तुमसे पता चलेगा कि हमारी अर्जी मंजूर हो गई है ।''

''दो साल से अर्जी दे रखी है कि सालो, जमीन के नाम पर तुमने मुझे एक गड्ढा एलॉट कर दिया है, उसकी जगह कोई दूसरी जमीन दे दो । मगर दो साल से अर्जी यहाँ के दो कमरे ही पार नहीं कर पाई ।'' वह आदमी अब जैसे मजमे बैठकर तकरीर करने लगा, 'इस कमरे से उस कमरे में अर्जी मे जाने में वक्त लगता है । इस मेज से उस मेज तक जाने में भी वक्त लगता है, सरकार वक्त ले रही है ! मैं आ गया हूँ आज यही पर अपना सारा घरबार लेकर ले लो जितना वक्त तुम्हें लेना है!... सात साल की भुखमरी के बाद सालों ने जमीन दी है मुझे- सौ मरले का गड्ढा! उसमें क्या मैं बाप-दादों की अस्थियाँ गाडूँगा? अर्जी' दी थी कि मुझे सौ मरले की जगह पचास मरले दे दो-लेकिन जमीन तो दो! मगर अर्जी दो साल से वक्त ले रही! मैं भूखा मर रहा हूँ और अर्जी वक्त ले रही है ।''

चपरासी अपने हथियार लिये हुए आगे आया - ''ए मिस्टर, चल हियाँ से बाहर!'' उसने हथियार की पूरी चोट के साथ कहा, 'चल .... उठ...!'

''मिस्टर आज यहाँ से नही उठ सकता । मिस्टर आज यहाँ का बादशाह है! पहले मिस्टर देश के बेलाज बादशाही की जय बुलाता था । अब वह किसी की जय नहीं बुलता । अब वह खुद यहाँ का बादशाह है ... बेलाज बादशहा! उसे कोई लाज शरम नही हैं । उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता । समझे चपरासी बादशाह ।''

चपरासी बादशाह और गरम हुआ, ''अभी पुलिस के सुपुर्द कर दिया जायेगा तो तेरी बादशाही निकल जायगी... !''

हाँ-हाँ! बेलाज बादशाह हँसा । ''तेरी पुलिस मेरी बादशाही निकालेगी? तू बुला पुलिस को । मैं पुलिस के सामने नंगा हो जाऊँगा और कहुँगा कि निकालो मेरी बादशाही । मेरे साथ तीन बादशाह और है । यह मेरे भाई की बेवा है - उस भाई की जिसे पाकिस्तान में टाँगो से पकडकर चीर दिया गया था । यह मेरे भाई का लड़का है जो अभी से तपेदिक का मरीज है और यह भाई की लड़की है जो अब ब्याहने लायक हो गयी है । इसकी बड़ी कुँवारी बहन आज भी पाकिस्तान में है । तू ले आ जाकर अपनी पुलिस, कि आकर इन

सबकी बादशाहत निकाल दे, कुत्ता साला...''

''कुत्ता साला' सुनकर चपरासी आपे से बाहेर हो गया । उसने उसे अपने टूटे हुए बूट की ठोकर दी । स्त्री और लड़की सहमकर वहाँ से हट गई । लड़का एक तरफ खडा होकर रोने लगा । चपरासी फिर बड़बड़ाता रहा । 'कमीना आदमी, दफ्तर में आकर गाली देता है । मैं अभी तुझे दिखा देता कि....''

''एक तुम्हीं नहीं, यहाँ तुम सब-के -सब कुत्ते हो, और मैं भी कुत्ता हूँ । फर्क सिर्फ इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो- हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो । मै परमात्मा का कुत्ता हूँ। उसकी दी हुई हवा खाकर जीता हूँ और उसकी तरफ से भौंकता हूँ । उसका घर इंसाफ का घर है । मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ । तुम सब उसके इंसाफ की दौलत के लुटेरे हो । तुम पर भौंकना मेरा फर्ज है, मेरे मालिक का फरमान है । मेरा तुमसे असली बैर है । कुत्ते का बैरी कुत्ता होता है । तुम मेरे दुश्मन हो, मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ । मैं अकेला हूँ इसीलिए तुम सब मिलकर मुझे मारो मुझे यहाँ से निकाल दो । लेकिन मैं फिर भी भौंकता रहूँगा । तुम मैरा भौंकना बंद नहीं कर सकते । मेरे अंदर मेरे मालिक का वर है, मेरे वाहे गुरू का तेज है । मुझे जहाँ बंद कर दोगे, मैं वहाँ भौंकूँगा, और तुम सबके कान फाड़ दूँगा । साले, आदमी के कुत्ते, जूठी हड्डी पर मरने वाले कुत्ते, दुम हिला-हिलाकर जीनेवाले कुत्ते !''

बाबा जी, बस करो- ''एक बाबू हाथ जोड़कर बोला, हम लोगों पर रहम खाओ और अपनी वह संतबानी बंद करो । बताओ तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारा केस क्या है...?''

''मेरा नाम है बारह सौ छबीस बटा सात । मेरा माँ-बाप का दिया हुआ नाम खा लिया कुत्तों ने । अब यही नाम है जो तुम्हारे दफ्तर का दिया हुआ है । मैं बारह सौ छब्बीस बटा सात हूँ । मेरा और कोई नाम नहीं है । मेरा यह नाम याद कर लो । अपनी डायरी में लिख लो । वाहे गुरू का कुत्ता - बारह सौ छब्बीस बटा सात ।''

''बाबा जी, आज जाओ, कल या परसो आ जाना! तुम्हारी अर्जी पर कार्रवाई तकरीबन- तकरीबन पूरी हो चुकी है ।''

''तकरीबन-तकरीबन पूरी हो चुकी है और मैं खुद ही तकरीबन-तकरीबन पूरा हो चुका हूँ। अब देखना यह है कि पहले कार्रबाई पूरी होती है, या पहले मैं पूरा होता हूँ । एक तरफ सरकार का हुनर है और दूसरी तरफ परमात्मा का हुनर है । सालो ने सारी पढ़ाई खर्च करके दो लफ्ज ईजाद किये है - शायद और तकरीबन! शायद आपके कागज ऊपर चले गये है, तकरीबन-तकरीबन कार्रवाई पूरी हो चुकी है । शायद से निकलो और तकरीबन में डाल दो! तकरीबन से निकलो शायद में गर्क कर दो । ' मैं आज शायद और तकरीबन दोनों घर पर छोड़ आया हूँ । मैं यहाँ बैठा हूँ और यहीं बैठा रहूँगा । मेरा काम होना है, तो आन ही होगा और अभी होगा । तुम्हारे शायद इस तकरीबन के ग्राहक ये सब खड़े हैं । यह ठगी स्त्री इनसे करो ... ।''

बाबू लोग अपनी सद्भावना के प्रभाव से निराश होकर एक-एक कर अंदर लौटने

लगे । बाबुओं के साथ चपरासी भी बड़बड़ाता हुआ अपने स्टूल पर लौट गया । ''मैं साले के दाँत तोड़ देता । अब बाबू लोग हाकिम है और हाकिमों का कहा मानना पड़ा ।''

ता है, वरना....।''

''अरे बाबा, शान्ति से काम लो । यहाँ मिन्नत चलती है, पैसा चलता है ।'' बाँस नही चलती,'' भीड़ में से मोई उसे समझाने लगा ।

''मगर परमत्मा का हुक्म हर जगह चलता है ।'' वह अपनी कमीज उतारता हुआ बोला- ''और परमात्मा के हुक्म से आज बेलाज बादशाह नंगे होकर कमिश्नर साहब के कमरे में जायेगा । आज वह नंगी पीठ पर साहब के डण्डे खायेगा । आज वह बूटों की ठोकरें खाकर प्राण देगा । लेकिन वह किसी की मिन्नत नहीं करेगा । किसी को पैसा नहीं चढ़ायेगा । किसी की पूजा नहीं करेगा । जो वाहगुरू की पूजा करता है, वह और किसी की पूजा-नहीं कर सकता । तो वाहगुरू का नाम लेकर...''

इससे पहले कि वह अपने कहे को किसे में परिणत करता, दो-एक आदमियों में बढ़कर तहमद की गाँठ पर रखे उसके हाथ को पकड़ लिया । वह अपना हाथ छुड़ाने के लिए संघर्ष करने लगा ।

''मुझे जाकर पूछने दो कि क्या महात्मा गांधी ने इसलिए तुम्हें आजादी दिलाई थी कि ये आजादी के साथ इस तरह संभोग करें? उसकी मिट्टी खराब करें ? उसके नाम पर कलंक लगावे? उसे टके-टके की फाइलों में बाँधकर जलील करें ? लोगों के दिलों में उसके लिए नफरत पैदा करें । इंसान मे तन पर कपडे देखकर बात इन लोगों की समझ में नहीं आती । शरम तो उसे होती है जो इंसान हो। मैं तो आप कहता हूँ कि मैं इंसान नहीं, कुत्ता हूँ.....!''

सहसा भीड़ में दहशत-सी फेल गई । कमिश्नर साहब अपने कमरे से बाहर निकल आये थे । वे माथें की त्योरियों और चेहरे की झुर्रियों को गहरा किये भीड़ के बिच में आ गये ।

क्या बात है? क्या चाहते हो तुम?

''आपसे मिलना चाहता हूँ, साहब ! सौ मरले का एक गडढा मेरे नाम एलॉट हुआ है । वह गड्डा आज वापस करना चाहता हूँ ताकि सरकार उसमे एक तालाब बनता दे और अफसर लोग शाम को वहाँ जाकर मछलियाँ मारा करें या उस गड्ढ में सरकार एक तहखाना बनवा दे और मेरे जैसे कुत्तों को उसमें बंद कर दे...।''

''ज्यादा बक-बक मत करो, अपना केस लेकर मेरे पास आओ ।''

''मेरा केस मेरे पास नहीं है, साहब! दो साल से सरकार में पास है, आपके पास है । मेरे पास अपना शरीर और दो कपड़े है । चार दिन बाद ये भी न रहेंगे, इसलिए इन्हें भी आज ही उतारे दे रहा हूँ । इसके बाद बाकी सिर्फ बारह सौ छब्बीस बटा सात रह रह जायेगा । बारह सौ छब्बीस बटा सात को मार-मारकर परमात्मा के हुजूर में भेज दिया जायेगा...।''

''यह बकवास बंद करो और मेरे साथ अंदर आओ ।''

और कमिश्नर साहब अपने कमरे में वापस चले गये । वह आदमी कमीज कन्धे पर रखे उस कमरे की तरफ चल दिया ।

''दो साल चक्कर लगाता रहा, किसने बात नहीं सुनी । खुशामदें कर रहा, किसी ने बात नहीं सुनी । वास्ते देता रहा, किसीने बात नही सुनी....।''

और आधे घण्टे बाद बेलाज बादशाह मुस्कुराता हुआ बाहर निकल आया । उत्सुक आँखों की भीड़ ने उसे आते देखा जो वह फिर बोलने लगा, चूहे की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नही होता ।भौंको, भौंको, सब-के-सब भौंकों । अपने आप सालो के कान फट जायेंगे । भौंको, कुत्तो भौंको ...

लड़के और लड़की के कंधों पर हाथ रखते हुए वह सचमुच बादशाह की तरह सड़क पर चलने लगा ।

''हयादार हो, तो सालहा-साल मुँह लटकाये खड़े रहो ।अर्जियाँ टाइप कराओ और नल का पानी । सरकार वक्त ले रही है । नहीं तो बेहयाई हजार बरकत है ।''

उसके चले जाने के बाद कम्पाउण्ड में और आस-पास मातमी वातावरण पहले से और गहरा हो गया ।

6.2.1 चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने उस तथाकथित सरकारी परिवेश का बेबाक और सच्चा स्वरूप उजागर किया है, जहाँ एक साधारण और भोला-भाला आदमी सरकारी कार्यालय में एडियाँ रगड़-रगड़कर मर जाता है मगर उसकी कोई नहीं सुनता । व्यक्ति चेतना को प्रायः अपनी कहानियों में मोहन राकेश ने ऊँचा स्थान प्रदान किया है । इस कहानी में खोखली, असंवेदनशील और अकार्यक्षम सरकारी व्यवस्था के प्रति आम आदमी को विद्रोह करते हुए दिखाया है । इस कहानी में पात्रों की संख्या अनेक परंतु उनमें केवल कहानी का नायक जिसका लेखक का दिया नाम 'बेलाज बादशाह' है और उसने अपना बताया हुआ नाम 'बारह सौ छब्बीस बटा सात है'' वह कहानी का मुख्य चरित्र है और लगभग पूरी कहानी का भार और सार इसी किरदार में है । अन्य पात्रों में दफ्तर का चपरासी, बाबू, कमिश्नर साहब और भीड़ से जुडे कुछ लोग हैं ।

बेलाज बादशाह एक साहसी, निर्भिक और दृढ व्यक्ति है । जमीन आबंटन के मामले में सरकार ने उसने साथ जो धोखा किया उसे वह सहन नहीं कर पाता । प्रारंभ में वह अर्जिया देने और कार्यालय में उस पर हो रही कार्रवाई की प्रतीक्षा करता है परंतु जब उसे लगता है कि उसकी खुशामद करने से उसका काम नहीं बनेगा तब वह बेहयाई से नाम निकालाने की सोचता है । सरकारी ढील-ढ़ाल के विरोध में वह जिस गाँधीगिरी के द्वारा क्रांति करता है वह इस कहानी का महत्त्वपूर्ण पहलू है । व्यवस्था से टकराने और अपने हक को हासिल करने की जो दृढता और कर्मठता वह दिखाता है वह प्रशंसनीय है । चपरासी द्वारा पुलिस का भय दिखाने पर वह कहता है - ''तेरी पुलिस मेरी बादशाही निकालेगी? तू बुला पुलिस को । मैं पुलिस के सामने नंगा हो जाऊँगा और कहूँगा कि निकालो मेरी बादशाही ... ये मेरे साथ तीन बादशाह और है

।''

वह जानता है कि सरकारी व्यवस्था की तमाम कुरुपताओं का सामना केवल बेहयाई से किया जा सकता है । एक कहावत के अनुसार- 'नंगे से तो खुदा भी डरता है' के फार्मूले का वह कुशलता से प्रयोग करता है । सरकार की लेट लतिफ से वह इस कदर त्रस्त हो जाता है कि उसे व्यवस्था से लड़ना था, घुट-घुटकर मरने में से कोई एक रास्ता चुनना पड़ता है । उसे अपनी ईमानदार जिंदगी पर गर्व है । अपने को वह केवल परमात्मा का सेवक मानता है और उसी का शासन भी मानता है - ''एक तुम्ही नहीं, यहाँ तुम सब-के-सब कुत्ते हो और मैं भी एक कुत्ता हूँ । फर्क सिर्फ इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो, हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो । मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ । उसीकी दी हुई हवा खाकर जीता हूँ और उसकी तरफ से भौंकता हूँ ।''

उसके इस आक्रमण से सारा कार्यालय बौखला जाता है । उसका वेपरवापन सब के हृदय में भय जागृत कर देती है । उसका आक्रोश, चीढ़, खिज़ एक सताये हुए आम-आदमी की प्रतिनिधि बनकर सरकारी स्तंभो को हिलाती है । उसकी लड़ाई सच के लिए की गई लड़ाई है । अधिकार प्राप्ती भी लड़ाई है । सरकारी तामझाम के प्रति उसकी नफरत शेर की दहाड़ में बदल जाती है । वह अपना शैब और दिलेरी से सरकारी सिस्टम को झुका देता है - ''चुहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता । भौंको, भौंकों, सब के सब भौंको । अपने आप सालो के कानों के परदे फट जायेंग भौंको कुत्तों, भौंको...।''

इस बेलाज बादशाह को कहानीकार ने एक निर्भय, निड़र, साहसी आम आदमी के रुप में चित्रित किया है जो अकेले अपने तेजतर्राहट व्यक्तित्व और जबान के बल पर अपने अधिकार को प्राप्त करता है । अन्य पात्रों का इतना अधिक विकास नहीं हुआ है और वे केवल परिवेश के प्रति विधि मात्र बनकर उपस्थित हुआ है । वस्तुतः देखा जाए तो 'परमात्मा का कुत्ता' यह कहानी एक सांकेतिक अर्थ को लेकर बुनी गयी है । जिसमें मुख्य चरित्र के रूप में कार्यालयीन भ्रष्ट व्यवस्था को प्रस्तुत किया गया है । यही कारण है कि किसी भी पात्र का नामकरण कहानी में नहीं मिलता । कोई सरकारी व्यवस्था या अफसरशाही का सताया हुआ आम इंसान है, तो कोई चपरासी, बाबू, अर्जी नवीस कमिश्नर आये हैं । कहानीकार ने यथार्थ परिवेश और उसके भुक्त भोगी बातों का सृजन किया है । उनकी अनेक कथाएँ परिवेश को, उसके विरोधाभास और अच्छाई-बुराइयों को लेकर उपस्थित होती हैं । इन कहानियों के पात्रों में कायरता नहीं है बल्कि स्वाभिमान की चेतना और विद्रोह की भावना है । वह समझौता या सहनशीलता का रास्ता छोड़ सीधा टकराव पर उत्तर जाता है । वह हार नहीं मानता क्योंकि वह जानता है कि अफसरशाही खुद बेशरम है, इससे बेशरमी से ही लढ़ा जा सकता है । वह अपनी राह की निर्माण खुद करता है और जीतकर लौटता भी है । उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है, इसलिए वह बेफिक्र है । - ''आज वह नंगी पीठ पर साहब के डण्डे खायेगा । आज वह बूटो की ठोकरें खाकर प्राण देगा, लेकिन वह किसी की मित्रता नहीं करेगा । किसी को पैसा नहीं चढ़ायेगा । किसी की पूजा नहीं करेगा ।'' वह निर्भिक, निड़र व्यक्ति के रूप में आता है ।

6.2.2 **वातावरण**

परमात्मा का कुत्ता एक परिवेश प्रधान कहानी है । इसमें सरकारी कचहरियों की लेटलतिफी, अफसरशाही की असंवेदनशीलता के कारण आम-आदमी की सतायी जिंदगी के तीखे और कटु यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है । इसमें कहानीकार ने निम्नवर्ग के आदमी को उसकी मजबूरियों और जीवनसंघर्ष के द्वारा उसकी ही दृष्टि से प्रस्तुत किया है । वह अफसरशाही द्वारा दो साल से अर्जी लटकाये जाने से हो रहे अन्याय को सहन नहीं करता। न खुशामद करता है और न रिश्वत देता है, बल्कि सीधे विद्रोह करने पर उतर आता है ।

यह कहानी एक सताये हुए आम-आदमी की सहनशक्ति के अंत को भी उजागर करती है । यह कहानी आधुनिक जीवन की विवशताओं और समस्याओं पर भी प्रकाश डालती है तथा सरकारी व्यवस्था की अनेक विकृतियों पर प्रकाश डालती है । कहानी का परिवेश एक यथार्थ परिवेश है जिसे आज भी सरकारी कचहरियों में अनुभव किया जा सकता है । बेलाज बादशाह का फटेहाल जीवन और कुलबुलाता मन उसके आक्रोश में फूट पड़ता है । वह जानता है कि सम्भ्रांतपूर्ण व्यवहार से सफलता नहीं मिल सकती, तब वह अपनी शालीनता छोड़ कर नंगेपन पर उतर आता है । उसे पुलिस द्वारा मार खाने या जेल जाने का डर नहीं लगता क्योंकि वह अपने पूरे परिवार को लेकर कचहरी में डेरा डाल देता है कि जब तक उसे न्यास नहीं मिलता, वह मोर्चे से नहीं हटेगा ।

6.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न.

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में सरकारी व्यवस्था के खोखलेपन, निष्क्रियता और रिश्वतखोरी का यथार्थ परिवेश प्रस्तुत हैं, - सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* 'परमात्मा का कुत्ता' में बेताज बादशाह अफसरशाही से किस प्रकार संघर्ष करता है, स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* बेताज बादशाह ने सरकारी कर्मचारियों के काम करने की ढुलमुल पद्धति के प्रति आक्रोश को स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* आदमी का कुत्ता – के संवाद

.....

.....

.....

* 'परमात्मा का कुत्ता' शीर्षक

.....

.....

.....

* सरकारी कचहरी का कामकाज

.....

.....

.....

* 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का व्यंग्य ।

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* बेताज बादशाह ने कचहरी में किस काम के लिए अर्जी दी थी?

.....

.....

.....

* अपना नाम पूछने पर बेलाल बादशाह ने क्या नाम बताया?

.....

.....

.....

* सरकार की ओर से बेताज बादशाह को कितनी जमीन एलॉट हुई थी?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''मुझे सौ मरले की जगह पचास मरले दे दो – लेकिन जमीन तो दो! मगर अर्जी दो साल से वक्त ले रही है । मैं भूखा मर रहा हूँ, और अर्जी वक्त ले रही है! ''

.....

.....

.....

* ''हयादार हो, तो सालहा–साल मुँह लटकाये खड़े रहो । अर्जियाँ टाइप कराओ और नल का पानी पियो । सरकार वक्त ले रही है । नहीं तो बेहयाई हजार बरकत है ।''

.....

.....

.....

* ''इंसान के तन पर कपड़े देखकर बात इन लोगों की समझ में नहीं आती । शरम तो उसे होती है जो इंसान हो । मैं तो आप कहता हूँ कि मैं इंसान नहीं, कुत्ता हूँ ।''

.....

.....

.....

6.4 सारांश

कहानीकार मोहन राकेश ने इस कहानी में एक साधारण आदमी के सरकारी कामकाज की पद्धति के विरूद्ध किए गए विद्रोह को प्रस्तुत किया है । कहानी में उस सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है जिसमें एक आम आदमी को अफसरशाही के विरूद्ध टकराव की स्थिति में लाया है, जिसमें नौकरशाही के प्रति आक्रोश भरा विद्रोही स्वर है । दो वर्ष अर्जी के लटकाये जाने पर वह बौखला जाता है । उसके लिए सम्मान लायक जिंदगी जीने का साधन केवल सरकार द्वारा प्रदान की गई जमीन है, जो एक बड़ा सा गड्ढा है । वह सरकार के काम करने की पद्धति, निष्क्रियता, बाबुयों की असंवेदनशीलता के कारण संघर्ष करने पर उतर आता है । वह अपने संताप और विविशता की सारी मर्यादाएँ तोड़कर निर्लजता में बदल देता है । वह आपना खोखला आदर्शवाद फेंकर दिलेरी साहस से कचहरी में जम जाता है और अपने उद्देश्य में सफलता भी प्राप्त करता है । व्यंग्यात्मक शैली मे मोहन

राकेश ने सरकारी दफ्मरों की लेटलतिफी, असंवेदनशीलता को व्यक्त करते हुए उसकी सहनशीलता की परिसीमा खत्म होने से उसकी निर्भिकता एवं संघर्ष शक्ति को उजागर किया है ।

6.5 शब्दार्थ

अर्जीनवीस	–	अजी लिखनेवाला
बाबू	–	सरकारी कर्मचारी, क्लर्क
मजमा	–	सभा
तपेदिक	–	यक्ष्मा रोग, टी.बी.
वक्फा	–	कुछ देर का ठहराव
मुस्तैदी	–	तत्परता
त्योरिया	–	गुस्सा होना
हाकिम	–	सरकारी अधिकारी
तहमद	–	लुंगी
मरला	–	जमीन का नाप
हुनर	–	कौशल

6.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* सरकारी व्यवस्था के कारण शोषित और प्रताड़ित निम्न मध्यवर्ग से संबंधित कहानियों की सूची बनाइए ।
* सरकारी कामकाज से जुडा अपना अनुभव और 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी की समस्या की तुलना कीजिए।
* किसी सरकारी दफ्तर की कामकाज की पद्धति का निरीक्षण कीजिए ।
* सरकारी अफसर से जाकर मिलिए और बातचीत कीजिए ।

6.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें

* इकाई I – में देखिए

इकाई – 7

दूसरे–कमलेश्वर

अनुक्रम

7.0 **उद्देश्य**

7.1 **प्रस्तावना**

7.2 **विषय – विवरण**

कहानी – दूसरे

7.2.1 **निम्न मध्यमवर्गीय युवती का मानसिक द्वंद्व**

7.2.2 **दूसरों के हस्तक्षेप से उत्पन्न समस्याएँ**

7.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

7.4 **सारांश**

7.5 **शब्दार्थ**

7.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

7.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

7.0 उद्देश्य

* निम्न–मध्यवर्ग की युवती की मानसिकता को समझना ।
* दूसरों की दखलअंदाजी से निर्मित यातनाओं से परिचित होना ।
* कमलेश्वर के यथार्थवादी दृष्टिकोण को समझना ।

7.1 प्रस्तावना

हिंदी में नई कहानी को प्रतिष्ठित करने में कमलेश्वर का योगदान महत्वपूर्ण रहा है । वे एक श्रेष्ठ कहानीकार ही नहीं श्रेष्ठ उपन्यासकार और आलोचक भी हैं । उन्होंने अत्यंत प्रतिकूल वातावरण में शिक्षा प्राप्त की । सन् 1954 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए.किया और उसी स्थान से पीएच.डी. करना चाहते थे । अपना अनुसंधान कार्य भी उन्होंने आरंभ किया था किंतु वह अधूरा छोड दिया और कठिनाइयों–संघर्षों से युक्त साहित्य लेखन का मार्ग चुना । अपने संपर्क में आए हुए लोगों के जीवन में ज्योति प्रज्वलित की । कमलेश्वर ने अपने जीवन में अनेक उतार–चढाव देखें किंतु इस सफर में उन्होंने बड़े साहस–हिम्मत से काम किया ।

कमेश्वर के पास नितांत यथार्थवादी दृष्टि, प्रभावशाली व्यक्तित्व,चरम आत्मविश्वास

भरा स्वर है । जीवन में वे सदा भागते ही रहे है । मैनपुरी से इलाहाबाद, इलाहाबाद से दिल्ली, दिल्ली से बम्बई अनेक स्थानों का सफर रहा है । किंतु कमलेश्वर अपने कस्बे मैनपुरी से मानसिक रुप से इतने जुड़ चुके थे कि इलाहाबाद में रहते हुए भी वे वहीं की बातें सोचा करते थे । हर महीने मैनपुरी जाकर कहानी की भूमिकाएँ लेकर आया करते थे । उनका जीवन-दर्शन किसी से प्रभावित न होकर अपने अनुभवों का सहज प्रस्तुतिकरण है ।

कमलेश्वर सन् 1950 ई. के. बाद के श्रेष्ठ कहानीकार है । वे उपन्यास की अपेक्षा कहानी में अधिक प्रभावी सिद्ध हुए है । आम-आदमी का दुःख, दर्द, अभाव, संघर्ष तथा मजबूरी को पकड़ने का प्रयत्न इनकी कहानियों में दिखाई देता है । कमलेश्वर की हर कहानी जीवन के सन्दर्भों से जुड़ी हुई दिखाई देती है । नयी कहानी के रचनाकारों में कमलेश्वर अपनी विशेष पहचान बनाने में सफल हुए है । 'राजा निरबंसिया' से लेकर 'मानसरोवर के हंस' तथा 'इतने अच्छे दिन तक' कहानियों का रचनात्मक विकास उनके समय के लोगो की अन्तरंगता से जुड़े हुए लेखक का गौरवशाली विकास है । उनकी पहली कहानी कामरेड सन् 1948 में एटा (उ.प्र.) से 'अप्सरा' पत्रिका में प्रकाशित हुई। कहानियों के माध्यम से जीवन की बदलती स्थितियों एवं मूल्यों को अभिव्यक्ति की हैं । जिनके संवेदनशील पात्र अनुभवों के बीच से गुजरते हुए जीवन की यथार्थ स्थितियों को स्वीकारने पर मजबूर हो जाते हैं । कमलेश्वर ने आम-आदमी की भाषा को साहित्यिक रुप प्रदान करके कहानी विधा में नई शैली का विकास किया है । उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं - 'सोई हुई दिशाएँ', 'राजा निरंबंसिया', 'कस्बे का आदमी', 'मांस का दरिया'और 'जिन्दा मुर्दे' ।

उपन्यासकार के रूप में भी उनकी काम सराहनीय है । इनका कथा भूमि-कस्बों से लेकर महानगरों के विभिन्न क्षेत्रों तक फैली हुई है । सामन्य आदमी की जिन्दगी तथा उसकी विसंगति को कमलेश्वर ने अपनी रचनाओं में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है । उनके उपन्यास हैं- एक सड़क सत्तवान गलियाँ', 'डाक बंगला', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'तीसरा आदमी', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', 'काली आँधी' और 'अगामी अतीत' ।

'दूसरे' कमलेश्वर की एक सामाजिक कहानी है । बड़े शहर के निम्न-मध्यवर्ग परिवार में रहने वाली एक युवती की मानसिकता का चित्रण यथार्थ रुप में हुआ है । अर्थ के अभाव से परिवार का जीवन संघर्ष तथा उनका आत्मविश्वास डाँवाडोल हुआ है । दूसरे लोगों के दखल के कारण एक परिवार का जीवन किस प्रकार प्रभावित हुआ है । ये जो 'दूसरे' है, बाहर वाले है उनके कारण सुनीता को जो यातना भोगनी पड़ती है, उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कहानी में हुआ है ।

7.2 विषय विवरण

कहानी 'दूसरे'

सुनीता एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है । उसके पिता हरिवंशलाल किसी

दुकान में काम करते है । कम तनख्वाह में घर चलाते है । सुनीता घर मे ं सबसे बड़ी है , होशियाए है, बुद्धिमान है । पिताजी उसे पढ़ाना चाहते है लेकिन कैसे? आर्थिक परिस्थिति के कारण अपने बच्चों की फिस भरने में असमर्थ है । सुनीता ने बी.ए. तो कर लिया है, पर , यह वही जानती है। उसके पिता, हर वर्ष ऐसी संस्थाओं के पास हाथ फैलाते हैं, जो उसकी पढ़ाई के लिए आर्थिक मदद दे सकें । घर में और भी पढ़ने लिखने वाले हैं । सभी भाई और बहनें स्कूल में जाते हैं और पिताजी उनकी फीस माफ करवाने के लिए भाग-दौड़ करते थे । उन्हें इतना जोड़-तोड़ करना पड़ता है.. फिर भी वह सब नहीं हो पाता जो वे चाहते है । आर्थिक विपन्नता के कारण सुनीता नौकरी करना चाहती है परंतु उसे ऐसी सर्विस भी नहीं मिलती, जो जरा पैर जमा दे । कम से कम वह इस घरेलू दुखद स्थिति से तो उबार सकती है । माँ-बाप उसे कुछ नहीं कहते फिर भी वह अपनी कोशिश जारी रखती है । घर में जब भी उसकी शादी की चर्चा होती है, उसे अपनी बेकारी का बहुत गहरा एहसास होने लगता है और यह बात उसे बुरी लगती है । शादी का उसने विरोध भी किया है, जब वह कोई छोटी नौकरी करती है, उस विरोध में एक वजन आ जाता है... जैसे नौकरी अपने-आप शादी की जरुरत को पीछे ढकेल देती, लेकिन बेकारी के दिनों में वह खुद बहुत गलत-सा महसूस करने लगती है । माँ या पिताजी जब धीरे से किसी लड़के की चर्चा करते हैं, तो उसका विरोध अपने-आप कमजोर पड़ता है। मना वह तब भी करती है परंतु उसे खुद शादी न करने की अपनी बात खोखली-सी लगने लगती है ।

एक निम्न मध्यवर्ग परिवार की सुनीता के सुनहरे सपने हैं । अगर उसे अच्छी सर्विस मिल जाए, तो धीरे-धीरे उसके सब सपने साकार हो सकते हैं । वह सोचती है उसका अपना अलग कमरा हो जाएँ और वह अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी को अपनी तरह से ढाल सके । भाई-बहनों को उनकी मर्जी के मुताबिक सम्मानित जिन्दगी दे सकें । परंतु वास्तविकता कुछ और है, घर में हमेशा धन के अभाव में जीवन जीना अत्यंत कष्टकर हो जाता है । घर में सदैव चिंताग्रस्त स्थिति बनी रहती है । दुकान का मालिक अगर पिताजी को बुढ़ापे की वजह से निकाल दे, तो क्या होगा? स्कूल में भाई-बहनों की फीस माफ न हों, तो क्या होगा? यह चिंता परिवार में बनी रहती है । परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण ही दूध डिपो के एरिया मैनेजर ने सुनीता को काम दिया था कि उसे मदद हो जाए । उन्होंने बड़े उपकार का भाव जताते हुए सुनीता के पिता जी से कहा था- ''हरवंशलाल जी, जब तक आपकी लड़की को कहीं और सर्विस नहीं मिलती, दूध डिपो पर भेज दिया कीजिए... मैं कुछ कर दूँगा .. चालीस-पैतालीस रुपए भी क्या बुरे है ।'' इतना ही नहीं तो बगल के ओवरसियर साहब ने भी उपकार के भाव से उसे कहा था -''बाबू हरिवंश लालजी, सुनीता से कहिए दोनों बच्चों को पढ़ा दिया करें, तीस रुपए मैं दे दिया करूँगा । '' यह बातें सुनकर अजीब-सी चोट लगती हैं । परंतु विवशता के कारण वह कुछ नहीं कर पाती । उनके घर में किसे क्या करना चाहिए यह बाहर वाले निश्चित करते हैं, उन्हें यह अधिकार किसने दिया? जरा-जरा सी बात में उन दूसरों का दखल रहता है जो घर के नहीं है । घर में कौन

सी मशीन आए, इसे अपनी अनुपस्थिति में कर्जदार तय कर लेते हैं । माँ के और बच्चे हों या न हो, इसका फैसला पड़ोसी कर चुके हैं । पिता जी चुनाव में किसे वोट दे, यह 'दूसरे' तय कर देते हैं । भाई-बहन क्या पढ़े और किस लाइन में जाएँ यह निर्णय उन स्कूलों ने नहीं लेने दिया, जो पूरी फीस माँगते हैं । बच्चें किस तरहे के कपड़े पहनें यह बहुत हद तक दर्जी खुद तय कर लेता है ।

सुनीता जब शादी से इन्कार करती है, एक क्षण के लिए वह अपना निर्णय स्वयं लेती है और हल्की-सी सार्थकता का उसे एहसास होता है । उसका अपना वजन कुछ बढ़ता-सा है और वह फिर नौकरी की तलाश में जुट जाती है... कोई छोटी सर्विस मिलने पर वह छोट-छोटे फैसलों से बँधी आजादी महसूस करने लगती है । वह कुछ निर्णय स्वयं लेती है । जिसमें एक पाव दूध बढ़ा लेना, पानी जमा करने के लिए रबर का पाईप लाना, अपने लिए ब्लाऊज का नया कपड़ा पसन्द करना, पिताजी को नए जूते ले देना, यह कहने का अधिकार पा जाती है । माँ का इलाज कौन से डॉक्टर के यहाँ होना चाहिए? इस राय देने की स्वयंत्रता मिल जाती है ... परंतु सुनीता के जीवन की स्वतंत्रता एक दिन धीरे से समाप्त हो जाती है । हर बात में दूसरे अनजान तरीके से दखल देने लगते हैं । बाहर के दूसरे लोगों के इशारों पर पूरा घर चलने लगता है । बाहर के लोग इनके घर का फैसला करने लगते हैं ।

सुनीता की शादी की बात जब दूसरे-बाहर वाले करते हैं, तब उसे बहुत गुस्सा आता है । बाहर का कोई दूसरा व्यक्ति उनके घर आकर माँ को बताता है - ''सुनीता को क्यों बैठा रखा है ... पुरुषोत्तम बाबू के लड़के से बात चलाऊँ ? तब उसे बहुत बुरा लगता है, उसकी शादी का निर्णय भी उसके या घरवालों के हाथ में नहीं है । यह फैसला भी कोई दूसरा ही करेगा और उसे स्वीकार करना पड़ेगा इसीलिए वह शादी से इन्कार करती है । वह स्वयं अपना फैसला तो नहीं ले पाती, परंतु दूसरे का निर्णय का वह विरोध करती है । बाहर के लोगों की बातें सुन-सुन कर बढ़ते दबाव से संत्रस्त माँ और पिताजी घबराकर सुनीता की शादी के संदर्भ में बातें करते हैं । दूसरों के निर्णय को वे अपना निर्णय समझना चाहते हैं, पर निर्णय दे नहीं पाते । इन दूसरों के कारण उसका जीवन अस्तित्व हीन बन गया है। सुनीता सोचती है - ''उसके घर में अदृश्य रूप में घुसे हुए लोगों को वह निकाल सकें, उन फैसलों को उलटा सकें जो उन दूसरों ने लिए हैं और लेजे जा रहे हैं । घर में इतने ज्यादा दूसरे लोग छिपकर घुसे हुए हैं कि उन्होंने सुनीता का रहना दूभर कर दिया है । भाई-बहनों का भविष्य तय कर रखा है और माँ-पिताजी को बेचारा बना रखा है । सुनीता का मानसिक द्वंद्व इस कहानी में प्रस्तुत हुआ है । वह सब कुछ सहने के लिए विवश है । सुनीता का मामा उसके लिए एक रिश्ता लाया है । उसने यह निर्णय ले लिया की वह रिश्ता सुनीता के लिए अच्छा है । एक दिन माँ ने सुनीता को अपने पास बिठाते हुए कहा था- 'तुम्हारे मामा ने एक लड़का देखा है । .. उन्हें पसन्द है । वे जोर भी बहुत दे रहे हैं ... तू तो जानती ही है.. हर परेशानी में साथ दिया है ...?'' माँ अप्रत्यक्ष रूप से सुनीता को शादी के लिए विवश करती है । सुनीता

की आँखे नीचे जमीन में गड़ी हुई थी । पिताजी वैसे ही चुपचाप लेटे थे और माँ अपने कार्य में व्यस्त थी । एक क्षण के लिए सुनीता दुविधा में फँस गई । उसकी आँखें डबडबा आई थी और आँसुओं को रोकते हुए उसने कहा था– ''जैसा आप लोग ठीक समझे'' माँ ने सुनीता के कंधे पर अपना हाथ रखा और धीरे–धीरे उसकी पीठ थपथपाती रही । पिता जी ने वैसे ही लेटे–लेटे गहरी साँस ली थी और एक हाथ से अपनी आँखों को ढँक लिया था जैसे परिवार में सब एकान्त चाहते थे .. जो किसी के नसीब में नहीं था ।

7.2.1 **निम्न मध्यवर्गीय युवती का मानसिक द्वंद्व**

कमलेश्वर की प्रस्तुत कहानी में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार मे पली सुनीता के मानसिक द्वंद्व का यथार्थ चित्रण हुआ । परिवार में सुनीता सबसे बड़ी है । उसके पिता हरिवंशलाल किसी दुकान पर काम करते है । उससे मिलने वाली रकम में अपने घर–परिवार का खर्चा उठाते हैं । हर वक्त घर में जरुरतें बनी रहती हैं, अर्थ के अभाव से बच्चों की शिक्षा की चिंता उन्हें सताती है । सुनीता ने बी.ए. तो कर लिया है परंतु बड़े संघर्ष से पिताजी की भाग–दौड़ देखकर वह परेशान हो जाती है । अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण वह नोकरी करना चाहती है, जिससे वह आपने पिता की कुछ मदद कर सके । जब कभी उसकी शादी की चर्चा चलती है उसे एकाएक अपनी बेकारी का गहरा एहसास होने लगता है और यही बात उसे बुरी भी लगती है । शादी का वह विरोध भी करती है, परंतु बेकारी के दिनों में वह खुद बहुत गलत – सा महसूस करने लगती है । माँ या पिताजी धीरे से किसी लड़के की चर्चा करते हैं, तो उसका विरोध अपने आप कमजोर पडता है । घर की स्थिति के कारण जब बहार वाले दूसरे लोग उपकार का बोध कराते हैं, तब सुनीता के मन को बड़ी गहरी चोट लगती है । दूध डिपो में एरिया मैनेजर ने सुनीता के पिता से बड़े उपकार के भाव से कहा था– ''हरिवंशलाल जी, जब तक आपकी लड़की को कहीं और सर्विस नहीं मिलती दूध डिपो पर भेज दिया कीजिए... मैं कुछ कर दूँगा .. चालीस–पैतालीस रुपए भी क्या बुरे है ।'' बाहर वाले दूसरों की स्थिति देखकर उपकार का भाव दिखाना नहीं छोड़ते । उनके पड़ोस के ओवरसियर साहब ने भी कहा था, ''बाबू हरिवंशलाल जी, सुनीता से कहिए दोनों बच्चों को पढ़ा दिया करें, तीलस रुपये मैं दे दिया करूँगा...'' सुनीता को यह सब सुनकर बड़ी यातना होती है । सुनीता अपने परिवार की स्थिति को सुधारना चाहती है । परंतु दिन–प्रति–दिन घर में जरा–जरा सी बात में उन दूसरों की दखल रहती है जो घर के नहीं है । माता–पिता में अभाव ग्रस्त जीवन से वह अत्यंत दुःखी होती है । सुनीता के मन में आशा की किरण है, वह अपने परिवार के उज्वल भविष्य के सपने देखती है परंतु उसके सपने साकार नहीं होते । उसे पीड़ा उन लोगों से होती है, जो उनके घर के निर्णय में दखल अंदाजी करते हैं । बाहर का कोई दूसरा आकर घर में माँ को बताता है – ''सुनीता को क्यों बैठा रखा है ... पुरुषोत्तम बाबू के लड़के से बात चलाऊँ?'' इस प्रकार से दूसरों के हस्तक्षेप से वह दुःखी हो जाती है । उसकी शादी का निर्णय भी उसके या घर वालों के हाथ में नहीं रह गया । सुनीता को इससे आंतरिक पीड़ा होती है । वह स्वयं अपना फैसला तो नहीं ले पाती, परंतु दूसरे के निर्णय का विरोध करती है । अंतमें उसके मामा उसके लिए एक रिश्ता

लेकर आते हैं । माता-पिता की विवशता के आगे वह अपनी शादी के लिए सहमती दर्शाती है । सुनीता के माध्यम से कमलेश्वर ने उन सभी निम्न मध्यवर्गीय युवतियों के मानसिक द्वंद्व का चित्रण किया है । जो माता-पिता के निर्णय को स्वीकारने के लिए विवश होती है ।

7.2.2 दूसरों के हस्तक्षेप से उत्पन्न समस्याएँ

'दूसरे' कहानी का मूल कथ्य प्रतीकात्मक है । बाहरवाले 'दूसरे' के हस्तक्षेप के कारण हरवंशलाल के परिवार को जो यातना झेलनी पड़ती है तथा सुनीता को किस प्रकार दूसरों के निर्णय को विवश होकर मानना पड़ता है । कहानी में इसका यथार्थ चित्रण हुआ है । दूसरों के कारण एक परिवार का जीवन विभिन्न समस्याओं से गुजरता है । हरवंशलाल के घर में दूसरों के निर्णय, समस्याओं का कारण बनते हैं । घर-परिवार के सदस्य का अपना कोई निर्णय नहीं होता । जरा-जरा सी बात में दूसरों की दखल रहती है । कितनी धुधलीं-सी दखल है दूसरों की, पर कितनी सम्पूर्ण । उनके घर मे कौन सी चीज आए और कौन सी न आए इसका निर्णय वे स्वयं नहीं लेते, बल्कि बाहर वाले अपार्य 'दूसरे' लेते हैं । घर में मशीन आए कि न आए, इसे अपनी अनुपस्थिति में ही कर्जदार तय कर लेते हैं ... अनजान तरीके से माँ के और बच्चे हो या न हो, इसका फैसला पड़ोसी कर चुके हैं । पिता जी चुनाव में किसे वोट दे, यह दूसरे तय कर देते हैं और विशेष बात उन्हें इस बात की कसक भी नहीं होती की वे सोचकर अपना निर्णय ले सकें । भाई-बहन क्या पढ़े और किस लाइन में जाएँ यह निर्णय उन स्कूलों ने नहीं लेने दिया, जो पूरी फीसे माँगते हैं । बच्चें किस तरहे के कपड़े पहनें यह कई बार दर्जी खुद तय कर लेता है । सुनीता शादी से इन्कार कर, अपना निर्णय स्वयं लेती है । तब उसे हल्की-सी सार्थकता का एहसास होता है । छोटे-छोटे फैसले लेकर वह आजादी महसूस करती है लेकिन एक दिन धीरे से सब कुछ समाप्त हो जाता है । हर बात में दूसरे अनजान तरीके से दखल देने लगते है । इन दूसरों के इशारों पर घर चलने लगता है । घर के सभी लोग दूसरों के निर्णय से परेशानी महसूस करते हैं । बाहर के लोग सुनीता की माँ से कहते हैं- ''इसे घर मे क्यों बैठा रखा है?'' इससे सुनीता के मन पर बड़ा आघात होता है । सुनीता की शादी का निर्णय भी उसके या घरवालों के हाथ में नहीं रह जाता है । यह फैसला भी कोई दूसरा ही करेगा और उसे सब स्वीकार करना पड़ेगा । दूसरों के बढते दबाव से संत्रस्त माँ और पिता घबरा-घबराकर अपनी बात कहते रहते हैं । अंत मे सुनीता की शादी का निर्णय उसके मामा लेते हैं । जिसे सुनीता का परिवार स्वीकारने के लिए विवश हैं ।

7.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न.

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* सुनीता के मानसिक द्वंद्व को स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* दूसरों के हस्तक्षेप से निर्मित समस्याओं का वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

* सुनीता के परिवार की आर्थिक स्थिति के परिणामों को लिखिए ।

.....

.....

.....

* सुनीता स्वयं निर्णय लेने पर सार्थकता क्यों महसूस करती है ?

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* सुनीता का जीवन संघर्ष

.....

.....

.....

* सुनीता का शादी का फैसला

.....

.....

.....

* कहानी की भाषाशैली

.....

.....

.....

* 'दूसरे' शीर्षक की सार्थकता

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* सुनीता कहाँ तक पढ़ी थी ?

.....

.....

.....

* ओवरसियर साहब ने सुनीता के पिताजी से क्या कहा था?

.....

.....

.....

* दूध डिपो के मैनेजर साहब सुनीता को कितनी तनखाह देना चाहते हैं ?

.....

.....

.....

* सुनीता की शादी किसने तय की है?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''उसे ऐसी सर्विस भी नहीं मिलती, जो जरा पैर जमा दे ।... ''

.....

.....

.....

* ''तू तो जानती ही है बेटा कि तेरे मामा ने हम लोगों का भला ही सोचा है.... हर परेशानी में साथ दिया है ... ।''

.....

.....

.....

* ''माँ के और बच्चे हो या न हो, इसका फैसला पड़ोसी कर चुके हैं ।''

.....

.....

.....

* ''जैसा आप लोग ठीक समझे..... ।''

.....

.....

.....

7.4 सारांश

'दूसरे' कमलेश्वर की चर्चित कहानी है । अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने युगीन सत्य को अभिव्यक्ति दी है । अपने कथ्य में वे सदा ही स्पष्टता लेकर चले है । किसी भी समस्या को वे खुली आँखों से देखकर, पूरी तरह समझकर बड़ी सफाई से पेश करते हैं। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने बड़े शहर के निम्न मध्यवर्गीय युवती की मानसिकता का चित्रण यथार्थ रूप में किया है । एक निम्न मध्यवर्ग परिवार की बी.ए. पास सुनीता नौकरी करके अपने पिताजी की सहायता करना चाहती है परंतु दुर्भाग्य से उसे कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलती जो उसके पैर जमा दे । घर की दयनीय स्थिति के कारण उन्हें हमेशा दूसरों की सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है । परिणामतः पड़ोसी, रिश्तेदार अर्थात दूसरे ही उनके घर के सभी निर्णय लेने लगते हैं । अपने घर में हर छोटे से छोटे निर्णय भी दूसरे लोग लेते हैं। इससे सुनीता को अजीब सी चोट लगती है । अपने घर में दूसरों का दखल सुनीता को कचोटता है । यहाँ तक की उसकी शादी की चिंता उसके माता, पिता से अधिक बाहर वालों को हैं । वे सुनीता की शादी के अनेक प्रस्ताव लाते हैं । उन्ही में से एक को स्वीकार करने के लिए सुनीता विवश है । सुनीता को इस बात का बुरा नहीं लगता कि उसके माता-पिता उसकी शादी के बारे मे बात करते हैं, बल्कि बुरा इस बात का लगता है कि ये सारी बातें उसके माता-पिता को दूसरे लोग ही बताते हैं । सुनीता को बुरा इसलिए लगता है कि उनके घर में अपना स्वयं का कुछ भी नहीं है । इन सारी बातों से सुनीता को बहुत क्लेश होता है ।

'दूसरे' कहानी में निम्न-मध्यमवर्गीय जीवन की आर्थिक दुरावस्था, जीवन संघर्ष को चित्रित करना लेखक का उद्देश्य रहा है । समाज में अभावग्रस्त जीवन बिताने वाला बहुत बड़ा समूह है । यह वर्ग आज आर्थिक रूप से छिन्न-भिन्न हो चुका है, तथापि कल की आशा पर जीवित है । देश की बढ़ती बेकारी उसकी आशाओं को पूरी नहीं होते देती । पढ़ाई के बाद भी नौकरी न मिल पाने की स्थिति में उनका परिवार समाज में दयनीय बनता जाता है और दूसरे लोग उनके घर में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर देते हैं । उस हस्तक्षेप के कारण घर के सभी को होने वाली पीड़ा तथा चुप रहकर सहने की विवशता प्रस्तुत कहानी के माध्यम से व्यक्त हुई है । हिंदी कहानी साहित्य को कमलेश्वर की सबसे बड़ी देन उनकी भाषा हैं । उनकी भाषा स्पष्ट, सहज और सरल देश के आम आदमी की भाषा है । अपने आस-पास के परिवेश को जिस बारीकी से उन्होंने प्रस्तुत किया है वह उनके सूक्ष्म और गहन दृष्टि का परिपापक है । प्रस्तुत कहानी के माध्यम से यह बात स्पष्ट होती है कि घर की दयनीय अवस्था के कारण घरवालों को दूसरों की सहायता पर निर्भय रहना पड़ता है ।

परिणाम स्वरूप दूसरे ही उनके घर के बारे में सभी निर्णय लिया करते हैं । दूसरों के हस्तक्षेप से जो यातना सुनीता और उसके परिवार को भोगनी पड़ती है वह अत्यंत संवेदनशील है । यहाँ तक की उसकी शादी का निर्णय कोई और लेता है, उसे स्वीकारने के लिए वह विवश है ।

7.5 शब्दार्थ

चुभन	–	पीड़ा
वजन	–	प्रभाव
रहम	–	कृपा
फुसफुसाकर बातें करना	–	धीरे–धीरे बोलना
हिकारत	–	अप्रतिष्ठा, घृणा
दखल देना	–	हस्तक्षेप करना
बेचारा होना	–	विवश, लाचार होना
सुभीता	–	सुविधा–आरामसे
बिसात	–	क्षमता
खोखली	–	निरर्थक
जकड़ी	–	बंधी हुई
कतराना	–	डरना
निहायत	–	बहुत
बटोरना	–	जुटना
उलझना	–	गुत्थी, चिंता

7.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* आर्थिक विपन्नता के परिणामों पर अपने विचार लिखिए ।
* ''दूसरे'' कहानी की समीक्षा कीजिए ।
* कमलेश्वर की अन्य कहानियों को पढकर मित्रों को सुनाइए ।
* आप के निकटवर्ती मध्यवर्ग–परिवार में जाकर निरीक्षण कीजिए ।

7.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें

* इकाई I – में देखिए

इकाई – 8

जिंदगी और गुलाब–उषा प्रियवंदा

अनुक्रम

8.0 **उद्देश्य**

8.1 **प्रस्तावना**

8.2 **विषय – विवरण**

कहानी – जिंदगी और गुलाब

8.2.1 **शिक्षित बेरोजगार सुबोध की विवशता**

8.2.2 **नौकरी करनेवाली वृंदा के व्यक्तित्व में बदलाव**

8.2.3 **शीर्षक की सार्थकता**

8.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

8.4 **सारांश**

8.5 **शब्दार्थ**

8.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

8.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

8.0 उद्देश्य

* अर्थार्जन की क्षमता ही परिवार में सम्मान का आधार होती है इससे परिचित होंगे ।
* उषा प्रियवंदा की जीवन दृष्टि की जानकारी मिलेगी ।
* नौकरी के अभाव में युवक का जीवन किस प्रकार अस्तित्व हीन बन जाता है ।– इसे समझ पाएँगे ।

8.1 प्रस्तावना

पाँचवे दशक में हिन्दी के जिन कथाकारों ने पाठकों और समीक्षकों का ध्यान सबसे ज्यादा आकर्षित किया उनमें उषा प्रियवंदा का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है । पिछले लगभग पाँच दशकों से ये निरन्तर सृजनरत है । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उषा प्रियवंदा ने अंग्रजी साहित्य में पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की और इसी विश्वविद्यालय में अंग्रजी की प्राध्यापिका नियुक्त हुई । अपनी प्रतिभा और योग्यता के बल पर आजकल अमेरिका के विश्वविद्यालय में अंग्रजी की प्रोफेसर है । उषा प्रियवंदा की कहानियाँ अधिक साफ है और काव्यात्मक अनगढ़ता से मुक्त है । उषा प्रियवंदा ने साफ–सुधरी ऊपर से सहज दिखने वाली, गम्भीर

और अर्थपूर्ण कहानियाँ लिखी है । उन्हें साहित्य सृजन प्रेरणा श्रीपतराय जी से मिली । उनकी पहली कहानी 'लाल चुनर' सरिता पत्रिका में प्रकाशित हुई । उसके बाद उनकी 'ठुट्टी का दिन' और 'जिन्दगी और गुलाब' जैसी सशक्त कहानियाँ प्रकाशित हुई । उषा प्रियवंदा ने अमेरिका के भाषाविद् किम विलसन से विवाह किया । अमेरिका जाने के पश्चात भी हिंदी भाषा के प्रति उनका आकर्षण कम नहीं हुआ । उनकी अनेक कृतियों का सृजन अमेरिका पार्श्वभूमि पर किया गया और उनमें वातावरण की सजीवता निर्माण हो गई ।वे मूलतः एक अत्यंत संवेदनशील नारी है । उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी की भाव-भावनाओं को वाणी देने का प्रयास किया है । पारम्परिक और आधुनिक जीवन मूल्यों के बीच लटकती नारी की मानसिक छटपटाहट, वेदना और पीड़ा को उन्होंने गहरी अनुभूति के साथ अभिव्यक्त किया है साथ ही पारिवारिक मूल्य, बदलते स्त्री-पुरुष संबंधो; संदर्भों में नारी की विविध समस्याओं को विस्तृत रुप दिया है ।

जिन्दगी और गुलाब से उनकी कहानी यात्रा प्रारंभ हुई । इसके बाद 'फिर वसंत आया, 'एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'शून्य एवं अन्य रचनाएँ' आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुए । उपन्यासकार के रुप में उन्हें अधिक सफलता मिली । पचपन खम्भे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा, अन्तरवंशी, भया कबीर उदास आदि प्रमुख उपन्यास हैं । उषा प्रियवंदा की प्रसिद्ध कहानियाँ हैं- 'मोहबंध', 'पूर्ति', 'दो अंधेरे', 'चाँद चलता रहा', 'कँटीली छाँट', 'कितना बड़ा झूठ', 'प्रतिध्वनियाँ', 'स्वीकृति', 'मछलियाँ', तथा 'वापसी'। उनकी कहानियों में मुख्यतः दोन प्रकार का परिवेश हैं भारतीय और विदेशी परिवेश । उनके नारी पात्र स्वतंत्रता का पूर्ण अधिकार पाना चाहते हैं । हिन्दी की समकालीन कहानी लेखिकाओं में वे महत्वपूर्ण स्थान रखती है ।

'जिन्दगी और गुलाब' उषा प्रियवंदा की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और चर्चित कहानी है । प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखिका ने अर्थाजन की क्षमता ही परिवार में किस प्रकार सम्मान का मुख्य आधार है इस स्पष्ट किया है । कहानी का नायक सुबोध जब नौकरी करता था तब घर में तथा समाज में उसकी प्रतिष्ठा थी । घर में उसी का अधिकार चलता था । परंतु सुबोध की नौकरी किसी कारण छूट जाती है और वह बेरोजगार हो जाता है । उसकी बहन वृंदा को नौकरी लग जाती है । जब परिवार में आमदनी का स्रोत वृंदा बनती है तो परिवार जनों का उसके प्रति रवैया बदल जाता है । पहले उसके भाई सुबोध की मर्जी के अनुसार घर चलता था और अब वह बेरोजगार है तो वृंदा की मर्जी के अनुसार घर चलता है । वह अपने आपको कंपलीट फेलियर मानता है ।

1.8.2 विषय विवरण

कहानी – जिन्दगी और गुलाब

सुबोध 'जिन्दगी और गुलाब' कहानी का प्रमुख चरित्र है । पढ़ा-लिखा सुबोध नौकरी करता है । किसी कारण उसकी नौकरी छूट जाती है और वह बेरोजगार हो जाता है । जब वह नौकरी करता था तब पूरे घर के केंद्र में वह था । परंतु जैसे ही उसकी नौकरी चली गई,

घर मे वह अपना महत्व खो चुका है । अब उसकी बहन वृंदा को नौकरी मिली है अतः घर के केंद्र में अब वृंदा है । सुबोध के कमरे की सारी चीजें धीरे-धीरे वृंदा के कमरे में जा चुकी हैं । सुबोध के कमरे का कालीन निकाल दिया गया है और किनारे पर रखी हुई मेज भी नहीं है । मेज पर कागज के फूलों का जो गुलदस्ता रहता था, वह खिड़की के ऐसे कोने में रखा था, जैसे मेज हटने वक्त उसे वहाँ वैसे ही रख दिया गया हो । उसी गुलदस्ते में कभी-कभी शोभा अपने बाग के गुलाब लगा जाती थी । अब तो सुबोध की प्रमिका भी उसे मिलने नहीं आती कारण उसकी सगाई हो गयी और उसके भावी पति को अच्छी नौकरी है, सुबोध जैसा बेरोजगार नहीं है । सुबोध को जब पता चलता है, कि उसके कमरे का कालीन हटा दिया गया है । तो वह माँ से पूछने आता है । माँ सुबोध से कहती है कि वृंदा अपने कमरे में ले गयी है । उसकी कुछ सहेलियाँ आज खाने पर आने वाली है । सुबोध को आश्चर्य हुआ क्योंकि वह इतनी सी बात पहले ही क्यों न समझ गया? उसकी सारी चीजें वृन्दा के कमरे मे जा चुकी थी । सबसे पहले पढ़ने की मेज, फिर घड़ी, आराम कुर्सी और अब कालीन भी चला गया । पहले सुबोध को अपनी कोई चीज वृंदा के कमरे में देखकर अटपटा लगता था, परंत अब वह सब समझ गया है । वह बेरोजगार है और वंदा कमा रही है । उसका पुरुष हृदय घर में वृंदा की सत्ता स्वीकार न कर पा रहा था ।

सुबोध की अवस्था नौकरी के अभाव में बड़ी विचित्र हो गई । अब सुबोध की मर्जी के अनुसार घर नहीं चलता । वृंदा जो नौकरी करती है । उसकी मर्जी से घर चलता है । केवल उपेक्षा को सहना सुबोध की नियति बन गई है । सुबोध अपनी प्रेमिका शोभा से कहता है कि- ''मैं तो कुछ भी नहीं कर रहा हूँ । इस बात को स्वीकार कर लो कि मैं जिन्दगी में फेलियर हूँ, कम्पलीट फेलियर'' जैसे उसकी जिन्दगी में फुलस्टॉप लगा गया है । वह शोभा से कहता है कि तुम्हारे फादर ने ठीक ही किया तुम सुखी हो जाओगी । प्यार से बड़ी आग होती है भूख की, पेट की । वह आग धीरे-धीरे सब कुछ लील लेती हे ।''

एक दिन सुबह सुबोध ने बरामदे में धोबी को देखा । उसे देखकर सुबोध ने अपने सारे गन्दे कपड़े इकट्ठे कर उनका ढेर लगा दिया । उसके सभी कपड़े काफी मैले हो चुके थे । सुबोध ने जब अपने ही कोट की जेब टटोली तो उसकी उँगलियाँ एक इकन्नी से टकरायी । जिसे लेकर वह पान की दुकान पर गया एक सिगरेट खरीदा और जलाकर एक गहरा कश खींचा । थोड़ी देर बाद जब वह घर लौटा तो रास्ते में धोबी मिला, और उसने सुबोध को दोबारा सलाम किया । सुबोध ने कुछ रोब जमाने हुए धोबी से कहा कि कपड़े जरा जल्दी लाना । सुबोध जब घर लौटा कमरे में घुसते ही उसके मैले कपड़ों का ढेर उसे वैसे ही पड़ा दिखाई दिया, जैसा वह छोड़ गया था । उसे बहुत क्रोध आया । उसने अम्मा को वही रुककर पुकारा ''मेरे कपड़े धुलने क्यों नहीं गए ?'' माँ सुबोध से कहती है पता नहीं- ''बेटा वृंदा दे रही थी, उससे कहा था कि तुम्हारे भी दे दे ।'' सुबोध का गुस्सा चढ़ आया चीखकर वह बोला ''कितने दिनों से गन्दे कपड़े पहन रहा हूँ । पन्द्रह दिन में नालायक धोबी आया, तो उसे भी कपड़े नहीं दिए गए । तुम माँ-बेटी चाहती क्या हो ? आज मैं बेकार हूँ तो मुझसे नौकरों-सा बर्ताव किया जात है! लानत है ऐसी जिन्दगी पर ।'' वह क्रोध में घर छोड़कर

चला जाता है । रास्ते में वह साइकिल सवार से टकरा जाता है । वह गिर पड़ता है और उसके ऊपर साइकिल । उसकी कोहनियाँ सड़क से छिली, उसे तीव्र पीड़ा हुई । वह लंगडाता हुआ पार्क की बेंच पर आकर बैठा । बाग के फूलों को देखने लगा । बहुत समय के बाद उसे माँ की याद आई । शायद वह चिन्तित दरवाजे पर खड़ी हो, उसके इन्तजार में भूखी हो । पूरा दिन बित गया परंतु कोई उसे खोजता हुआ नहीं आया । वृंदा को यह पता था कि वह अकसर पार्क में बैठा करता है । मगर उसे क्या फर्क पड़ता है । जब पार्क बन्द करने का समय हो गया तो चौकीदार सुबोध को घर जाने को, कहता है । विवश होकर वह घर लौटा, कोने में मैले कपड़ो का ढेर था, गन्दा बिस्तरख तिपाईपर खाना ढँका हुआ था । सुबोध लालची की तरह जल्दी-जल्दी बड़े-बड़े कोर खाने लगा ।

8.2.1 **एक शिक्षित बेरोजगार सुबोध की विवशता**

उषा प्रियंवदा की चर्चित कहानी 'जिन्दगी और गुलाब' का प्रमुख पात्र सुबोध है। पढ़-लिखा सुबोध पहले नौकरी करता था, परंतु उसकी नौकरी छूट गई । अब वह बेरोजगार है । इस कारण घर तथा समाज में उसकी प्रतिष्ठा नहीं है । जब वह नौकरी करता था तब पूरे घर के केंद्र में वह था । अब उसकी नौकरी चली गई, घर में वह अपना महत्व खो चुका । अब उसकी बहन वृंदा को नौकरी मिली है । अर्थाजन का वह स्रोत है । अतः घर के केंद्र में अब वृंदा है । सुबोध के कमरे से पढने की मेज, घड़ी, आराम कुर्सी और कालीन सब धीरे-धीरे वृंदा के कमरे में चले जाते हैं । सारे घर पर अब वृंदा का ही अधिकार चलता है । घर के सभी निर्णय वह लेती है ।

नौकरी छूट जाने से सुबोध टूट जाता है । उसकी प्रेमिका शोभा की सगाई हो जाती है । उसका होने वाला पति अच्छी नौकरी करता है । सगाई के बाद जब उसकी मुलाकात शोभा से होती है । उस समय वह अपने आपको अत्यंत असफल मानता है । वह अपनी वेदना इन शब्दों में प्रकट करता है- ''मैं तो कुछ भी नहीं कर रहा हूँ । इस बात को स्वीकार कर लो कि मैं जिन्दगी मे फेलियर हूँ, कम्पलीट फेलियर । कुछ नहीं कर सका । जैसे मेरी जिन्दगी में अब फुलस्टॉप लग गया है । अब ऐसे ही रहूँगा । तुम्हारे फादर ने ठीक ही किया । तुम सुखी होओगी । प्यार से बड़ी एक और आग होती है, भूख की, पेट की ! वह आग धीरे-धीरे सब कुछ लील लेती है ...'' घर में भी हमेशा वह उपेक्षा सहता है । यहाँ तक कि सुबोध के मैले कपड़े धोबी को धोने के लिए देने की आवश्यकता महसूस नहीं होती । वह क्रोध में घर छोड़कर चला जाता है परंतु कोई उसे खोजने नहीं जाता । अपने जीवन में कुछ न कर सकने की पीड़ा उसे सताती है । दिन भर वह पार्क में रहा । जब पार्क बन्द करने का समय हुआ तो चौकीदार उसे घर जाने को कहता है । बेरोजगारी के कारण वह लाचार है, विवश है । उसकी शादी भी टूट गई है । उसका आत्मविश्वास पूरी तरह खो गया है । वह अपने आप को कम्पलीट फेलियर मानता है अर्थात जीवन रुपी परीक्षा में फेल समझता है । जब निराश, लाचार होकर वह अपने घर लौटता है कोने में मैले कपड़ों का ढेर लगा था । ढीली चारपाई, गन्दा बिस्तर और तिपाई पर उसका खाना ढका हुआ था । सुबोध चारपाई पर बैठकर किसी लालचियों की तरह जल्दी-जल्दी बड़े-बड़े कोर खाने लगा ।

बेरोजगारी मनुष्य के जीवन को कितना विवश कर देती है । इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तृत कहानी में हुआ है । सुबोध आज के वर्तमान युग के बेरोजगार, लाचार, विवश युवक का प्रतीक है ।

8.2.2 नौकरी करने वाली वृंदा के व्यक्तित्व में बदलाव

'जिन्दगी और गुलाब' कहानी का एक महत्वपूर्ण पात्र वृंदा है । वह कहानी के नायक सुबोध की बहन है । वह विवाह योग्य है परंतु उसका बेरोजगार भाई सुबोध उसका विवाह करने में असमर्थ है । सुबोध जब नौकरी करता था तब माँ और वृंदा दोनों उसके इंतजार में बैठी रहती थी । वृंदा हमेशा सुबोध के बाद ही खाना खाती थी । सुबोध की दिनचर्या के अनुसार ही वृंदा घर के सभी काम किया करती थी परंतु तब वृंदा नौकरी नहीं करती थी । आज समय और स्थिति बदल गयी है । आज सुबोध बेरोजगार है और वृंदा नौकरी करने लगी है । आत्मनिर्भरता के कारण उसके व्यवहार में बदलाव आता है । वृंदा के इशारे पर अब सारा परिवार चलता है । घर के सारे महत्वपूर्ण और सामान्य फैसले अब वह करती है । सुबोध जब नौकरी करता था तब वह उसकी बहुत इज्जत करती थी । परंतु जब से वह बेरोजगार हुआ है और वृंदा नौकरी करने लगी है, तब से वह अपने भाई की उपेक्षा करने लगी है । उसके व्यवहार में काफी बदलाव आया है, जहाँ पहले वह सुबोध के भोजन से पहले कभी भोजन तक नहीं किया करती थी, वही विृंदा अब इस बात की परवाह नहीं करती कि सुबोध ने भोजन किया या नहीं । इतना ही नहीं सुबोध के कमरे की सारी महत्वपूर्ण वस्तुएँ वह अपने कमरे में ले जाती है । नौकरी करने के कारण वृंदा में इतना परिवर्तन हुआ की वह अपने बड़े भाई सुबोध की उपेक्षा करने लगी । उसकी उपेक्षा इतनी बढ़ गई है कि वह सुबोध के कपड़ तक धोबी से धुलवाना आवश्यक नही समझती । वृंदा आज के युग की लडकी है, जो रिश्तों से ज्यादा पैसों को महत्व देती है ।

8.2.3 शीर्षक की सार्थकता

उषा प्रियवंदा की 'जिन्दगी और गुलाब' कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक है । वास्तव में मनुष्य का जीवन गुलाब के फूल की तरह होता है । गुलाब के फूल में सुंदरता होती है, सुगंध होती है और कांटे भी होते हैं । जिन्दगी भी इसी गुलाब के फूल की तरह होती है । जीवन में कभी सुख के क्षण आते हैं तो कभी दुःख के भी आते है । कहानी का शीर्षक सुबोध और वृंदा की परिवार में स्थिति को रेखांकित करता है । जब सुबोध नौकरी करता था तब उसकी स्थिति गुलाब की सुंदरता और सुगंध जैसी थी । सारा घर उसी के इशारे पर चलता था और वृंदा के हिस्से में तब कांटे आए थे । आज दुर्भाग्य से स्थिति एकदम बदल गयी है । सुबोध बेराजगार है और वृंदा नौकरी करने लगी है । अब स्थिति पूर्ण परिवर्तित हुई है । आज गुलाब रुपी सुंदरता और सुंगध वृंदा के हिस्से में है और काँटे सुबोध के हिस्से में । इस प्रकार कहानी का शीर्षक अत्यंत समर्पक तथा सभी दृष्टि से परिपूर्ण है, उचित है, सार्थक है ।

8.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न.

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* 'जिन्दगी और गुलाब' कहानी की समस्या पर प्रकाश डालिए ।

.....

.....

.....

* सुबोध की विवशता को स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* 'जिन्दगी और गुलाब' कहानी के शीर्षक की सार्थता स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* सुबोध का चरित्र–चित्रण

.....

.....

.....

* वृंदा के व्यक्तित्व में आया बदलाव

.....

.....

.....

* बेरोजगार सुबोध की विवशता

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* सुबोध की प्रेमिका कौन है ?

.....

.....

.....

* सुबोध के कमरे से उसकी चीजे कहाँ जाती है ?

.....

.....

.....

* सुबोध के कपड़े धोबी को क्यों नहीं दिए जाते ?

.....

.....

.....

* कहानी की लेखिका का नाम लिखिए?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''पहले अपनी चीज वृंदा के कमरे में सजी देख उसे कुछ अटपटा लगता था, पर अब वह अभ्यस्त हो गया है । यद्यपि उसका पुरुष हाथ घर में वृंदा की सत्ता स्वीकार न कर पाता था ।'

.....

.....

.....

* ''कितने दिनों से गन्दे कपड़े पहन रहा हूँ । पंद्रह दिन में नालायक धोबी आया, तो उसे भी कपड़े नहीं दिये गये । तुम माँ–बेटी चाहती क्या हो? आज मैं बेकार हूँ तो मुझसे नौकरों सा बर्ताव किया जाता है ।''

.....

.....

.....

* ''वह अपने कमरे में आया । कोने में मैले कपड़ों का ढेर था । ढीली चारपाई, गन्दा बिस्तर, तिपाई पर खाना ढँका हुआ था ।''

.....

.....

.....

8.4 सारांश

उषा प्रियंवदा हिन्दी की एक श्रेष्ठ महिला कथाकार है । 'जिन्दगी और गुलाब' कहानी के माध्यम से लेखिका ने एक महत्वपूर्ण तथ्य की ओर संकेत किया है कि परिवार में अगर पुरुष की सत्ता रहती है तो वह केवल अर्थार्जन के कारण होती हैं परंतु किसी घर

में पुरुष अगर अर्थार्जन न करता हो और घर की कोई स्त्री अर्थार्जन करने लगे तो परिवार में जो अधिकार पहले पुरुष को प्राप्त थे, वे सभी अधिकार स्त्री को मिल जाते हैं । इस अर्थ में प्रस्तृत कहानी आत्मनिर्भरता के कारण नारी की बदलती स्थिति को रेखांकित करती है । कहानी का नायक सुबोध जब नौकरी करता था । माँ और उसकी बहन वृंदा उसका हर प्रकार से ध्यान रखती थी परंतु उसी सुबोध की नौकरी छूट जाती है और वृंदा नौकरी करने लगती है तब घर के केंद्र में सुबोध नहीं वृंदा है ।

सुबोध जब नौकरी करता था, तब घर में उसकी प्रतिष्ठा थी, परंतु जब से उसकी नौकरी चली गई और वृंदा नौकरी करने लगी, तब से वृंदा घर के सभी निर्णय लेने लगी । सुबोध के कमरे की सभी चीजें अब वृंदा के कमरे में हैं । सुबोध धोबी को अपने मैले कपड़े देना चाहता है परंतु वृंदा अपने बड़े भाई के कपड़ इसलिए नहीं देती क्यों कि वह कुछ कमाता नहीं है । वह अपने जीवन को असफल मानता है । घर में उसके साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया जाता है । उसकी शादी टूट जाती है । माँ और वृंदा के व्यवहार से क्रोधित होकर वह घर छोड कर चला जाता है, परंतु फिर विवश होकर उसे घर आना पड़ता है । सुबोध आज के युग के बेरोजगार और विवश युवक का प्रतीक है ।

8.5 शब्दार्थ

पीढे	–	चोके पर
अनमना	–	बेचैन
अनुनय	–	निवेदन, प्रार्थना
तहस–नहस करना	–	नष्ट करना
बिटर	–	कडुआ

8.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* शिक्षित बेरोजगार युवक की व्यथा अपने शब्दों में लिखिए ।
* आत्मनिर्भर महिला की मानसिकता का वर्णन कीजिए ।
* आत्मनिर्भर अर्थात नौकरी करने वाली कहानियों को पढिए।
* बेरोजगार युवक की आत्मकथा लिखिए ।

8.7 अतिरक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* इकाई I – में देखिए

इकाई - 9
महानगर की मैथिली –सुधा अरोड़ा

अनुक्रम

9.0 **उद्देश्य**
9.1 **प्रस्तावना**
9.2 **विषय – विवरण**
कहानी – महानगर की मैथिली
9.2.1 **चित्रा की चरितगत विशेषता**
9.2.2 **कामकाजी महिला की समस्या**
9.2.3 **दिवाकर का चरित्र–चित्रण**
9.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**
9.4 **सारांश**
9.5 **शब्दार्थ**
9.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**
9.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

9.0 उद्देश्य

- * कामकाजी महिला के मानसिक द्वंद्व से परिचित होगें ।
- * पति–पत्नी नौकर पेशा होने से पारिवारिक खींचा–तानी को समझेंगे ।
- * महानगर की विविध समस्याओं को समझने का प्रयास करेंगे ।

9.1 प्रस्तावना

महिला–लेखन करने वाली लेखिकाओं में सुधा अरोड़ा की अपनी स्वतंत्र पहचान है । उनके लेखन में स्त्री चेतना के विभिन्न संदर्भों, आयामों की गहरी पहचान और परख है । उनके स्त्री–पात्र जीवन अनेक पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं । समाज की विविध समस्याओं और समय के साथ निर्माण होनेवाले सवालों से उनके स्त्री पात्र संघर्ष करते हुए दिखाई देते । उनकी मानसिक उलझनों की परतों को बड़ी सहजता से लेखिका प्रस्तुत करती है ।

महानगर की समस्याओं को अभिव्यक्त करने में लेखकीय दायित्व और संवेदनशील दिल का परिचय होता है और मानवीय जीवन की व्यस्तता, त्रस्तता, अजनबीपन, एकाकीपन साफ नजर आता है ।

उनके कहानी संग्रह हैं – बगैर तराशे हुए, 'युद्ध विराम', 'महानगर की मैथिली', 'कमजोर' आदि । 'इस्पात', 'बगैर तराशे हुए', 'युद्ध विराम', 'खलनायक', 'एक सेंटीमेंटल डायरी की मौत', 'महानगर की मैंथिली', तानाशाही उनकी चर्चित कहानियाँ हैं ।

प्रस्तुत कहानी में जिंदगी के छोटे–छोटे घटना–प्रसंगों को अपनी संवेदना से एक नए रुप में व्यक्त किया है । कामकाजी महिला का परिवार में यंत्रवत बना जीवन, गैर–कानूनी मकान, अनियंमित नौकरी के गलत समझौतें, जिंदगी की गति, आवश्यकताओं के कारण बिगड़ा अर्थशास्त्र ने आदमी को स्वार्थी एवं बिल्कुल व्यावहारिक बना दिया है । चित्रा–दिवाकार और मैथू, नौकरानी की समस्या, मानसिक द्वंद्व से गुजरता परिवार, मैथू की बालसुलभ भावनाओं से खिलवाड़ आदि का अंकन किया गया है ।

9.2 विषय–विवरण

कहानी – महानगर की मैथिल

आज तो हॉलीडे है – 'मॅजिक लैम्प वाला डे–सण्डे ।' कल तो आपका हाफ–डे था फिर आज कैसे जाना है । मैथिली अपनी मम्मी चित्रा से कह रही थी । वह इतनी जल्दी नहाना नहीं चाहती थी और ठण्डे पानी से तो बिल्कुल नहीं । बेटी जिद कर रही थी । तभी उधर वाले कमरे से कप–प्लेट टूटने की आवाज आई– ''सारा मूड़ बिगाड़कर रख दिया । यह कोई चाय है? स्वाद ही नहीं है चाय का ...। पचास बार कहा है ग्रीन लेबल ही लाया करो ।'' सुबह–सुबह दिवाकर का मुड़ चाय के इर्द–गिर्द घूमता था । चित्रा ने सारे काँच के टुकड़े समेटे । बिखरी चाय साफ की ।

सवा साल की मैथिली चप्पल पहने दौड़कर आई – ''मम्मी, हमने चप्पल पहन ली है, नहीं तो कांच चुभ जाएगा .. पापा ने आज फिर प्लेट तोड़ी ना ।'' मम्मी ने गुस्सा करते हुए उसे बाथरुम में ले गई और ठण्डे पानी से उसे नहलाया । गला फाडकर रोने लगी – ''हम कट्टी है तुमसे । ठण्डे पानी से नहला दिया, डर्टी, डर्टी मम्मी ।'' वह सर्दी से काँप रही थी । चित्रा ने उसे जल्दी तैयार किया ।

दिवाकार शेव करते समय गाल पर ब्लेड लगने से तौलिया दबाए खून पोछ रहे थे– ''बिगाड़ रखी है उसकी आदतें । बारह महीने गरम पानी से नहाएँगी । ... चलो, मैथ्यू बेटें! जल्दी से नाश्ता कर लो, देर हो रही हैं ।'' किंतु मैथ्यू की शिकायतें शुरू थी ।

''नहीं बेटे । हम लोग तो एक आण्टी को देखने चर्चगेट जा रहे हैं –हास्पिटल । बीमार है वो ! हास्पिटल बहुत गन्दी जगह होती है । हम बहुत जल्दी आ जाएंगे ।'' दिवाकर उसे समझा रहे थे ।

मैथू उनके साथ जाने के लिए तैयार थी किंतु वे उसे अपने साथ लेकर चर्चगेट जाना नहीं चाहते थे । सभी सड़क पर आएँ तब मैथू इधर–उधर मुड़ने लगी तो दिवाकर खीजे – ''वहाँ कहाँ जा रहे हो बेटा, सीधे चलो ।''

मैथू ने उम्मीद भरे स्वर में कहा – ''हमे शर्मा अण्टी के घर छोड़ दो । टी.वी. देखेंगे, फिर घर वापस जाएंगे । तुम लोग तब तक वापस नहीं आओंगे?'' ''हम ताराबाई के घर छोड़ देंगे ।''

''नहीं मम्मी ! आज-सण्डे-को भी हमें ताराबाई के घर छोडेंगे आप। हम ताराबाई के यहाँ नहीं रहेंगे ।'' और वह हाथ छुड़ाकर भाग निकली ।

वह तंग कर रही थी तब उसे हॉस्टल में डालने का डर दिखाया गया किंतु मैथू कहती है – ''हम ताराबाई के यहाँ नहीं रहेंगे ।''

''बेटा, जितना मन हो रो लो, लेकिन अपने साथ हम तुम्हें आज ले जा ही नहीं सकते । समझे!'' वह बेआवाज हो रही थी, आँखों से आँसू बह रहे थे । चित्रा ने दुलारते हुए कहा – ''बेटा रोज तो रहती हैं आप! बस, जिस दिन मम्मी-पापा को काम हो, उसी दिन जिद चढ़ जाती है ।''

गला रुंध जाने से मैथू कुछ न बोल सकी और अंगुली पकड़े संकरे रास्ते से चलने लगी।

ताराबाई बच्चों को संभालती थी, मैथू के अलावा वह अन्य तीन बच्चों को आठ घण्टे संभालती थी, महीने के साठ रुपये लेती थी । आज रविवार था इसलिए दूसरे बच्चें नहीं थे । उसका एक छोटा-सा कमरा जिसमें उसके चार बच्चे भी रहते थे । अपने ही एक बच्चे को पिटते हुए उसने चित्रा-दिवाकर को देखा- ''बाहर जाने का है, मेम साहब! छोकरी किदर? ... येरे मैथू, उदर-किदर जाता है ?।'' मेरे कूँ पैछानताईच नहीं । धीरे-धीरे चलकर वह झोपड़ी के भीतर खटिया पर बैठ गई ।

पर्स से एक पॅकेट निकाल कर चित्रा ने कहा – ''ताराबाई, यह घर से कुछ खाकर नहीं आयी है । अभी इसे नाश्ता देना और खाने में सिर्फ चावल-दाल देना । चार-पाँच बजे तक हम लोग आ जाएंगे ।''

''ताराबाई, हमे जरुरी काम से जाना था ।'' कहकर दिवाकर मैथू को हा ''ओ.के.बेटा। हम जल्दी आ जाएंगे ।''

''... मेमसाब, तुम फिकिर नई करना ये अबी ठीक हो जाएंगी, ताराबाई खुश थी क्योंकि उस आज बच्चा संभालने के पांच रुपये मिलने वाले थे । किंतु बेटी को छोड़कर जाने में चित्रा बहुत असहाय महसूस कर रही थी । दिवाकर और चित्रा बस में बैठे किंतु बेचारी को अपने साथ रहने के लिए... ''एक रविवार ही तो मिलता है ... और इतनी दूर हम , अंग्रजी फिल्म देखने जा रहे हैं, यह ऐय्याशी नहीं तो और क्या है?''

दिवाकर गुस्सा होकर बोले – ''चलो, उठो, घर चलो ।साल-छमाही कभी घर से निकलो भी तो सौ सिरदर्द साथ चलते हैं ।'' ....''आफ्टर ऑल, मैथू को बड़ा होना है । तुम तो जिंदगी भर उसे बच्चा ही बनाए रहोगी...।'' उन दोनों में संवाद की स्थिति ही नहीं रही थी ।

इस नये मकान में आने के बाद वे दोनों व्यस्त हो गये थे । चित्रा के स्कूल और दिवाकर के ऑफिस का फासला बढ़ गया था । सुबह पाँच बजे उठकर चित्रा मशीन अंदाज में रोजमर्रा काम निबटाती थी, टिफिन के डिब्बे लेकर वे तीनों घर से बाहर निकला पड़ते। शाम पाँच बजे स्कूल से लौटते हुए सब्जी ब्रेड खरीद कर ताराबाई के घर से मॅथू को साथ लेकर घर आती थी और सुबह का बिखरा घर समेटकर खाना बनाते-खाने तक थक जाती थी । आठ-नौ बजे दिवाकर ऑफिस की फाईलों से लदे घर आते । दोनों को कॉमन छुट्टियाँ कम रहती थी, चित्रा रविवार तो दिवाकर को सोमवार की छुट्टी रहती थी । रोज की इस बंधी-बंधाई रूटीन में कुछ अनकहे - अनजाने कारणों से वे दोनों कुढ़ते रहते थे । गुस्से और जिद में बाप-बेटी एक जैसे थे ।

इतवार को भी ट्रेन में इतनी भीड़, दादर से पहले बैठने की जगह मिलना असंभव था। जब जगह मिली तो परेल से ही दो बच्चों को साथ लेकर एक महिला खड़ी रही और खड़े-खड़े ही बच्चे को दूध पिलाने लगी । ट्रेन के हिचकोलों से वह महिला लुढक रही थी । आखिर चित्रा अपने कपड़े झाड़ती हुई खड़ी हो गई और अकृतज्ञ भाव से वह महिला सीट पर बैठ गई । रोज ट्रेन में आने-जाने वाली महिलाएँ एक-दूसरे से बेखबर, रूखी, बेदिल थी।

महानगर के तीन वर्गमील के क्षेत्र मैं फैले कस्बे से अब चित्रा उब गई थी । दिवाकर अपने आपको खुशकिस्मत समझता था क्योंकि उसके ऑफिस में लोग बाठा, कल्याण पूना से आते-जाते थे, अधिकांश समय उनका सफर में ही जाता था। उसे तो केवल दस किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती थी ।

मुलुंड वाले मकान में पड़ोसी बहुत भली थी वह घर और मैथिली दोनों पर नजर रखती थी । इस नये मकान में यह सुविधा और सुरक्षा नहीं थी । इस मकान में आने का कारण था उसकी स्कूल की सहपाठी सावित्री । किंतु अब वह मिसेस शर्मा थी । अमीरी का थाट-बाट था कभी मैथू टी.वी. देखने जाती थी तो वह घंटे भर में उसे घर वापर भेज देतीं। इसी छोटे-से कस्बे में मैथिली का जन्म हुआ था । नाना और दादा दोनों परिवार में पहली बच्ची थी । अतः उसका नामकरण धूमधाम से संपन्न हुआ था । दादी ने उसका नाम मैथिली रखा था । स्कूल की छुट्टियाँ खत्म होने वाली थी । इसलिए चित्रा उसे बम्बई लेकर आयी थी । बड़े प्रयास से उसने बच्ची को संभालने के लिए एक चौदह साल की लड़की का बंदोबस्त किया था । स्कूल में भी चित्रा का मन नहीं लगा । बच्ची के दूध पीने का वक्त होता तो वह अपने कपड़े भीगे हुए पाती, वाश बेसिन में अपना दूध गिर आती । तीन-चार दिन परेशानी में बीते । सहकर्मी मिसेज माथुर कहती है - ''बच्चे को पैदा होते ही पावडर के दूध की आदत डालो । दो-चार दिन पहले ही अपना दूध छुड़ा लो । परेशानी नहीं होगी।''

नई-नई नौकरानियों के बीच मैथू बड़ी हुई । उसकी आदतें उनकी देन रही - बहते नाक को न पोछना, पेशाब के गीले कपडों में खेलना, धूल-मिट्टी-रेत में आराम से खेलना आदि । चित्रा ने तय किया अब वह बच्ची के लिए नौकरी नहीं करेगी । आया मैथू का पेट भर सकती है पर माँ के हाथों का स्पर्श और दुलार उसे नहीं दे सकती थी । उसके जन्म के

बाद रोज बदलती नौकरानियों के लम्बे नाजायज एकाकीपन के अलावा उसे क्या दे पाए थे? इसके अतिरिक्त और भी सवाल थे - गैर-कानूनी मकान, अनियमित नौकरी के गलत समझोतें, जिंदगी की मशीनी रफ्तार, आवश्यकताओं के क्रूर अर्थगणित ने एक असहाय-व्यावहारिक और स्वार्थी इन्सान बना दिया था । जोश में आकार नौकरी छोड़ने का निर्णय वह करती थी पर हर बार महानगर का अर्थशास्त्र उसे मात दे जाता था ।

चित्रा ने जब मैथू पौने चार साल की थी तब एक क्रिश्चियन आया रखी जिसने महीने का राशन दस दिन में साफ कर दिया और मैथू दुबली हो गई । फिर लड़की रखना चाही किंतु उसकी शर्त थी जिस घर में टी.वी. होगा वहाँ वह काम करेगी । चित्रा-दिवाकर के पास इतने पैसे नहीं थे जो टी.वी. ले सके । मैथू ही स्वयं समझदार हो चली थी । खुद को बहलाने के कई साधन ढूँढ निकालती थी । सवा दो साल से ही उसका स्कूल में जाना शुरू हो गया था ।

इस नये मकान में आते ही मैथू बड़े स्कूल में जाने लगी । ताराबाई के घर से वह नजदीक था । अतः वह मैथू को स्कूल लेने-छोड़ने जाती थी । पहले ही दिन स्कूल से लौटने पर वह नाजर थी - ''मम्मी, आपने हमारा इतना गंदा नाम क्यों रखा?'' ''हमारी क्लास में सबके कितने अच्छे-अच्छे नाम हैं - कैथरीन, रम्या, सुरभि, लिलि, रूचि, रेशमा और एक सोनम है, राजुल है । रम्या कहती थी, मैथिली तो मेथी का साग होत है । हम क्या मेथी का साग हैं ?''

चित्रा समझाती है ''आप बड़े हो होगे तो आपना नाम बदल लेना ।''

''अब बड़े नहीं हुए क्या? फिर आपने अपना नाम क्यों नहीं बदला, हम तो अपना नाम अभी बदलेंगे । हमारा ना-म .... ''चित्रा रख दो ।'' चित्रा को हँसी आ गयी ।

चर्चगेट पर दिवाकर और चित्रा उतरकर मानसिक रूप से फिल्म देखने के लिए तैयार हुए । लौटते हुए कई गाड़िया कैंसेल हो जाने के कारण वे सवा दो घंण्टे बस की यात्रा करके बोरीवली पहुँचे । ताराबाई की झोपड़ी तक आ रहे थे, उन्हें उम्मीद थी कि मैथू उन्हें देखकर नुक्कड़ तक भागकर आएगी । काफी दे हो चुकी थी मैथू दिखाई नहीं दी ।

ताराबाई ने कहा - ''बोत देर लगाया, मेमसाब । अइसा नई करने का । मेरे कूं भी रविवार घर में काम होता है ।... छोकरी कुच्छ खाया नई ... देख ममी आली तुझी ।'' और चित्रा को कहती है ''तुम अबी और एक पयदा करो। मैथू का साथ खेलने के वास्ते ।''

दिवाकर ने बेटी को उठाना चाहा लेकिन वह चुपचाप चलती रही । दरवाजा खोलते ही मैथू अंदर भागी । सर्दी से काँप रही थी । दिवाकर ने उसे रजाई उढ़ा दी । इसे तो बहुत बुखार है । एक सौ चार । वह धीरे-धीरे बुदबुदा रही थी । चित्रा ने नमक घोलकर उसके माथे पर ठण्डे पानी की पट्टियाँ रखी । जबर्दस्ती से 'गार्डिनल' की आधी गोली खिला दी।

बुखार चढ़ता-कम होता था । दिवाकर बिना - खाये गहरी नींद में सो गए । देर बाद चौंककर उठे - ''कैसी है मैथू?''

''बार-बार पानी माँग रही है, बस ।''

दिवाकर ने करवट बदल ली - ''अच्छा, मैं थोडा लेट लू ।''

''सुनो कल का क्या करना है?'' चित्रा ने कहा ।

''कल तुम छुट्टी ले ले ना और क्या ।''

''सुनो तो ! कल मैं छुट्टी नहीं ले सकती, तभी तो कह रही हूँ ।''

'अब तुम जानो । मेरे ऑफिस में तो कल इंस्पेक्शन है ।'' ''सुबह नहीं अभी ही तुम सुन लो । स्कूल में युनिट टेस्ट चल रहे हैं और खुर्शीद छुट्टी पर है, दोनों सेक्शन मुझे सम्भालने हैं और मैंने पेपर भी सबमिट नहीं किया है । खुर्शीद ऑनररी टीचर है, जब चाहे छुट्टी ले सकती है, सुन रहे हो?'' चित्रा सुबह का मसला निबटना चाहती थी ।

''ठीक है । मैं तुमारे स्कूल पेपर पहुँचाता हुआ जाऊंगा । तुम फोन कर देना । लेकिन मेरे घर पर रूकने के बारे मे सोचना भी मत । दैट इज नेवन्ट इमपॉसिबल ।'' अंत में तय हुआ कि सुबह चित्रा ही स्कूल जायेगी और कोई बंदोबस्त कर जल्दी वापस आ जायेगी । तब दिवाकर आफिस जायेंगे ।''

इस नये मकान में उन्हे अच्छे पड़ोसियों की कमी खल रही थी । रात भर मैथू का बदन तपता रहा । दिवाकर बीच-बीच में पूछ लेते फिर खर्राटे भरते । रात भर वह आधे घंटे के बाद पानी माँगती थी चित्रा उनींदी सी उसे चम्मच से पानी पिलाती रही ।

सुबह उठकर चित्रा ने पेपर तैयार किया । घर का काम-काज पूरा किया और जाने को तैयार हुई । मैथू उसकी ओर देख रही थी- ''कैसे हैं बेटे आप?'' दवा देते हुए कहा- ''हम जल्दी आ जाऐंगे, बेटा ! पापा से दवा ले लेना और थोड़ा सा दूध भी पी लेना ।'' आवाज सुनते ही चित्रा ने देखा मैथू जूते पहन रही थी - ''हम ताराबाई के घर जाएंगे तुम्हारे साथ ।''

हाथ से अखबार फेंक कर मैथू को पकडे दिवाकार ने कहा - ''बेटे, आप बीमार हैं ।'' उसे रोकने के बाद हाथ-पैर पटकती चीखती रही - ''ममी, जाओ ऑफिस! पापा, जाओ ऑफिस । हम भी जाएंगे । हमारे जूते दो, ममी! हमे मत पकडो, पापा'' - और वह बेहोश हो गयी थी ।

दिवाकर डॉक्टर को ढूंढने निकले । चित्रा बार-बार घड़ी देख रही थी कि उसे टैक्सी ही लेनी पड़ेगी- याने आठ रुपये पैंसठ पैसे ! सामने कैलेण्डर था और मैथू को पांच साल की होने में पूरे नौ दिन बाकी थे । हर साल अपनी इकलौती बेटी का जन्मदिन वे बड़ी धूम-धाम से मनाते थे ।

9.2.1 **चित्रा की चरित्रगत विशेषता**

'महानगर की मैथिली' कहानी के द्वारा सुधा अरोड़ा ने पत्नी-माँ इन दोनों के बीच मानसिक द्वंद्व का चित्रण किया है । कहानी में चित्रा-दिवाकर पति-पत्नी हैं और उनकी बेटी मैथिली । बेटी छोटी है, वे दोनों नौकरी करते हैं । महानगर में आया मिलना भी एक बड़ी समस्या है। नई-नई आयाओं से खेलती हुई मैथू धीरे-धीरे बड़ी हो रही है और उनकी

खास आदतें उसे भी लग गई हे – नाक बहने देना, पोछने की जिद न करना, पेशाब करने पर गीले कपडों में, मिट्टी–रेत में आराम से खेलना... । चित्रा को यह सब खटकता है । तय भी करती है कि बच्ची के लिए नौकरी छोड़ दे । आया मैथू का पेट भर सकती है पर माँ का प्यार– दुलार नहीं दे सकती । बेचारी बेटी को क्या दिया – ''माता–पिता के रूप में पाउडर मिल्क के डिब्बे और रोज बदलती आया के साथ एक लंबे नाजायज एकाकीपन ।''

महानगरीय अभ्यास से वह यह समझ गई है कि मैथू के प्रति गैरजिम्मेदारी के बाद समस्याओं का सिलसिला खत्म होने वाला नहीं है । गैर–कानूनी मकान, अनियमित कालीन नौकरी के गलत समझौते, यंत्रवत् जिंदगी आवश्यकताओं के भयनाक अर्थगणित ने मनुष्य को असहाय, व्यावहारिक और स्वार्थी बना दिया है । हर बार महानगर का अर्थशास्त्र उसे मात दे जाता था ।

दिवाकर की इच्छा के कारण आज वह अपनी बेटी को ताराबाई के घर पहुचाने में विवश हो जाती है । अपना गुस्सा दिवाकर चाय के कप–प्लेट पर निकालता है । चित्रा उन काँच के टुकडों को संकलीत करती है । बेटी आज– ''मॅजिक लॅम्पवाला डे–सण्डे'' का आनंद लेना चाहती है । ठण्डे पानी से ही उसको स्नान करके तैयार करती है । मैथू को पहुँचाने से चित्रा मन ही मन अपने आपको कोसती है । ट्रेन–बस का सफर करके चर्चगेट में अंग्रेजी पिक्चर देखकर देर से बेटी को लेने आते है । ताराबाई भी उन्हें कहती है कि रविवार क्यों न हो उसे भी घर के बहुत काम होते हैं ।

चित्रा सुबह पाँच बजे उठकर मशीनी अंदाज में रोजमर्रा काम निबटाती है । सबके टिफिन तैयार कर तीनों घर से निकल पड़ते हैं । शाम पाँच बजे स्कूल से लौटते समय चित्रा सब्जी–ब्रेड खरीदती हुई मैथू को अपने साथ ले आती है । घर पहुँचते सुबह का बिखरा घर समेटकर खाना बनाने–खाने तक थक जाती है । आठ–नो बजे दिवाकर टेबल पर खाना लगा कर सोने का इंतजार करती है । महीनों तक दोनों में बातें नहीं हो पाती । अनजाने कारणों से बाप–बेटी कुढ़ते हैं उन दोनों को संभालती है चित्रा ।

मैथू की बिमारी को लेकर दोनों मे बहस होती है । चित्रा के स्कूल में टेस्ट है तो दिवाकार के ऑफिस मे इंस्पेक्शन । बेटी का बुखार कम नहीं होता । ममता और कर्तव्य के संघर्ष में फँसी चित्रा, सुबह जल्दी पेपर तैयार करके, बेटी को कहती है– ''हम जल्दी आएंगे बेटा । पापा से दवा ले लेना ।''

ताराबई घर के जाने की जिद करने वाली बेटी को दिवाकर समझाते हैं । चित्रा समझदार, सहनशील, ममतामयी, कर्तव्यदक्ष, जिम्मेदारी संभालने वाली पत्नी है और माँ भी।

9.2.2 **महानगर की मैथिली**

इस कहानी का केंद्र बिंदु है 'मैथिली ' । चित्रा और दिवाकर की बेटी । चित्रा स्कूल में और दिवाकर किसी ऑफिस में काम करते हैं । उसे रविवार अच्छा लगता है – ''मॅजिक लॅम्पवाला डे – सण्डे ।'' ''नहीं मम्मी पहले पानी गरम करो । ठण्डे पानी से हम नहीं नहाएंगे ... आज तो कहीं भी नहीं जाना है ...।''

जब दिवाकर ने चाय की कप-प्लेट फेंक दीया तब बेटी कहती है - ''बाबा चाय वही हैं कभी उन्नीस-बीस हो जाती है, उसके लिए इतनी तोड़ फोड़ की क्या जरूरत है?'' सवा साल की बेटी चप्पल पहने दौड़कर चित्रा के पास आयी, गुस्सा करते हुए खींचकर बाथरूम तक ले गयी । ठण्डे पानी से नहलाया तब चीख रही थी - ''ठण्डे पानी से नहला दिया - डर्टी मम्मी ।'' उधर दिवाकर खीज रहे थे - बिगाड़ रखी है, उसकी आदतें .... चलौ, मैथू बेटे ।''

उसे गोद में उठकार दिवाकर ने कहा .... ''आप तो बहुत समझदार हैं... ।'' बच्चे झूठे आश्वासन का स्वर और स्पर्श पहचानने में तेज होते हैं । मैथू ने भी यह जान लिया था कि दोनों झूठ बोल रहे हैं । उम्मीद भरे स्वर में वह कहती है - ''हमें साथ ले चल रहे हो?'' 'नहीं'

'' तो हमें शर्मा आण्टी के घर छोड़ दो । टी.वी. देखेंगे .... ।''

''हम तुम्हें ताराबाई के घर छोड़ देंगे ।'' ''आज-सण्डे-को भी हमें ताराबाई के घर छोडेंगे आप ? हम ताराबाई के यहाँ नहीं रहेंगे ।'' वह पिता के सामान जिद्दी है । ताराबाई के उसके-अपने चार बच्चे है । एक को दनादन पीट रही थी । गालियाँ दे रही थी । लज्जित होकर बोली, ''बाहर जाने का है मेम साब? छोकरी किदर?'' वहँ गुमसुम थी । ताराबाई के घर उसे पहुँचा कर दोनों निकल पड़े ।

सवा महीने की उम्र में मैथिली को कस्बे का बनवास मिला था । क्योंकि चित्रा की स्कूल खुल गयी थी अतः उसे बम्बई आना पड़ा था । भाग-दौड़ करके आया का प्रबंध किया था । स्कूल गयी तो मन लगता न था मैथू रोने की आवाज वह महसूस करती । कभी अकेले में रो लेती । धीरे-धीरे मैथू को आदत हो गयी थी सिर्फ रात को उसे माँ की माँग रहती थी । नौकरानियों के बीच वह बड़ी हुई । आया मैथू का पेट तो भर सकती थी पर माँ के हाथों का स्पर्श, दुलार नहीं दे सकती थी । उसके जन्म के बाद माता-पिता के रूप में पावडर मिल्क के नियमित डिब्बों और रोज बदलती नौकरानियों के साथ एक लम्बे नाजायज एकाकीपन के अलावा वह कुछ न दे पाई थी ।

मैथू जब स्कूल जाने लगी थी तब अपने नाम को लेकर परेशान थी रम्या, लिलि, रुचि कितने सुंदर नाम हैं फिर हमारा इतना गंदा नाम क्यों रखा ?- ''आप बड़े हो जाओगी तब अपना नाम बदल लेना ऐसा मेरी माँ ने कहा था तो अब हमारा नाम चित्रा रख दे ।'' कहकर दोनो हँसने लगती है ।

बुखार आने पर वह रातभर बार-बार पानी माँगती है । मैथू के लिए कल कौन छुट्टी लेगा इस विवाद को सुनकर ताराबाई के घर जाने की जिद करती है । चीखती है - ''मम्मी, जाओ ऑफिस! पापा जाओ ऑफिस!'' लेखिका ने छोटे बच्चों की मनोदशा को भी समझाया है ।

9.2.3 **कामकाजी महिला की समस्या**

महानगरीय जीवन की यांत्रिकता, मध्यवर्ग की मानसिकता, नौकरी पेशा परिवार में

पति-पत्नी के संबंध, अर्थगत मूल्य आदि त्रसद स्थितिओं का अंकन सुधा अरोड़ा ने अपनी कहानियों में किया है । तनाव, कडवाहट, परायापन, महत्वाकांक्षा, नवीन स्थितियों से निर्मित समस्याओं से युक्त जीवन-यथार्थ की अभिव्यक्ति भी मिलती है । समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए या अर्थगणित शास्त्र के कारण महानगर में मकान अर्थात आवास की समस्या है । अतः जिस किसी हालत, कस्बे, गली में मकान मिलने के बाद परिवारिक समस्या-छोट बच्चे को संभालना-आरंभ होती है ।

सुधा अरोड़ा की महानगर की मैथिली कहानी इन समस्यों पर प्रकाश डालती है । चित्रा-दिवाकार और बेटी मैथू-छोटा-सा परिवार है । पति-पत्नी दोनों नौकरी पेशा है । चित्रा स्कूल में और दिवाकर ऑफिस में । दिवाकर चाय के शौकिन, चाय अच्छी नहीं तो कप-प्लेट फोड दिए । चित्रा कहती है - ''पडोसियों को पता कैसे चले कि महीना खत्म हो रहा है ।'' ''तब रौब से कहता है चर्चगेट जाना है घड़ी देख लो ।'' शरारत करने वाली बेटी मैथू को जबरदस्ती इतवार के दिन ताराबाई के घर पहुँचाते हैं । ताराबाई कें घर तक वह किसी से बात नहीं करती ।

''ओफ ! क्या जिद्दी लड़की है, यार तुम्हारी ? कोई बात समझने को तैयार ही नहीं है ।'' दिवाकर के कथन से स्पष्ट है कि बेटी को संभालने की जिम्मेदारी केवल चित्रा की है । परिवार में दोनों नौकरी करने के लिए जाते हैं । सबरे से शाम तक, इसलिए बेटी इतवार के दिन उनके साथ पूरा दिन बिताना चाहती है इसलिए ताराबाई के घर आते-आते मन ही मन रोती है ।

बार-बार मकान बदलना, नयी नौकरानी, खोजना, सुबह जल्दी उठकर टिफिन बनाना, जाते समय बेटी को पहुँचाना, शाम के समय उसे लेते आना आदि सभी काम चित्रा को ही करने होते है । जब मैथू छोटी थी, दूध पीती बच्ची, चित्रा स्कूल में जाती थी, बेटी की याद आते ही दूध से कपड़े भीग जाते थे । माँ की ममता, स्नेह कभी-कभी नौकरी छोड़ने के मोड़ तक पहुँच जाता किंतु महानगर का अर्थगणित उसे मात दे जाता था ।

दिवाकर के आग्रह के कारण मन न होते हुए भी चित्रा अंग्रजी पिक्चर देखने जाती है । माँ का मन लगे भी तो कैसे, बेटी को ताराबाई के घर रखा, पति का मन रखने के लिए वह पिक्चर देख रही है । देर से लौटने के कारण ताराबाई भी उन्हें आपनी समस्या बाताती है -''मेमसाब ! मेरे कूं भी रविवार घर में काम होता हाय ।'' मैथू को लेकर घर आते है उसे बुखार चढ़ जाने से कल उसे संभालने के लिए कौन छुट्टी लेगा इस बात पर विवाद होता है । इस प्रकार कामकाज करनेवाली महिलाओं की विविध समस्याओं को, अनेक मानसिक संघर्ष को अरोड़ा ने अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है ।

9.2.4 दिवाकर का चरित्र-चित्रण

'महानगर की मैथिली' कहानी में स्त्री के प्रति पुरूषों का संकुचित दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है । दिवाकर चित्रा के पति और मैथिली के पिता है । किसी ऑफिस में काम करते है । पत्नी स्कूल में टीचर है । ताराबाई के घर बेटी को रखा जाता है । केवल रविवार के दिन बेटी उनके साथ रहती है । किंतु आज दिवाकर का मन अंग्रेजी पिक्चर देखने

के लिए तैयार था । घर में सबका मूड खराब था । चित्रा का मन बिल्कुल नहीं था कि बेटी को छोड़कर पिक्चर देखने जाएँ । चर्चगेट लेकर बेटी के साथ वे पिक्चर देखना नहीं चाहते । बेटी के मना करने के बाद भी उसे ताराबाई के छोटे मकान में छोड़कर जाते हैं ।

दिवाकर बार-बार गुस्सा हो जाते हैं - ''एक रविवार ही तो मिलता है ।'' और इतनी दूर हम अंग्रेजी फिल्म देखने जा रहे है, यह ऐय्याशी नहीं तो और क्या हैं ?'' चित्रा के कथन से नाराज होकर कहते है - ''चलो, उठो घर चलो । साल-छमाही कभी घर से निकलो तो सौ सिरदर्द साथ चलते हैं ।''

महानगर के कस्बे में नया मकान किंतु पड़ोसी बेखबर है । मुलुंड वाले मकान में पड़ोसी अच्छे थे । मुंबई में बच्चों को संभालने वाली आया के घर बच्चों को छोड़कर -फिर लाना पड़ता है । दिवाकर ऑफिस में थाणा, कल्याण से हररोज सफर करके आने वालों से आपने आप को खुशकिस्मत समझता है ।

परिवार में वे दोनों नौकरी पेशा पर जब मैथू बीमार होती है तब दिवाकर रातभर खर्राटे भरते है और आधी नींद में चित्रा बेंटी को पानी पिलाती है । बेटी की बीमारी के कारण कौन छुट्टी लेगा इस पर बहस होती है और तय होता है कि चित्रा स्कूल में जा कर कुछ बंदोबस्त करके वापस आएगी तब वह ऑफिस जायेगा । वह जिद्दी , हटी, चिड़चिड़ा, अपनी ही भावनाओं को समझने वाला भारतीय पुरूष है ।

9.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न.

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* महानगर की मैथिली में कामकाजी महिला की समस्याओं का चित्रण किया गया है - स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* चित्रा की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

* मैथू की बिमारी वाले प्रसंग में चित्रा और दिवाकार के संवादों पर प्रकाश डालिए ।

.....

.....

.....

* मैथू महानगर की मैथिली का महत्वपूर्ण पात्र है – सिद्ध कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* चित्रा की चरित्रगत विशेषताएँ

.....

.....

.....

* दिवाकर का चरित्र–चित्रण

.....

.....

.....

* महानगर की मैथिली की मुख्य समस्या

.....

.....

.....

* ताराबाई

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* महानगर की मैथिली कहानी किसने लिखी है ?

.....

.....

.....

* मैथू को कौन संभालता था ?

.....

.....

.....

* ताराबाई के घर मैथू क्यों जाना नहीं चाहती ?

.....

.....

.....

* मैथू की तबीयत ठीन न होने पर भी दिवाकर छुट्टी क्यों लेना नहीं चाहते ?

.....

.....

.....

* मैथू की तबीयत ठीन न होने पर भी चित्रा छुट्टी क्यों लेना नहीं चाहती ?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''सारा मूड़ बिगाड़कर रखा दिया । यह कोई चाय है ? स्वाद ही नहीं है चाय का ।''

.....

.....

.....

* ''तो हमें शर्मा आण्टी के घर छोड़ दो । टी.वी. देखेंगे, फिर घर वापस आ जाएंगे। तुम लोग तब तक वापस नहीं आओगे ?''

.....

.....

.....

* ''बेटा, रोज तो रहती है आप! बस जिस दिन मम्मी-पापा को काम हो, उसी दिन जिद चढ जाती है ।''

.....

.....

.....

* ''मम्मी, आपने हमारा इतना गन्दा नाम क्यों रखा ?''

.....

.....

.....

* ''बोत देर लगाया, मेमसाब । आइसा नई करने का । मेरे कूं भी रविवार घर में काम होता हय ।....''

.....

.....

.....

9.4 सारांश

सुधा अरोड़ा लिखित 'महानगर की मैथिली' कामकाजी महिला के मानसिक द्वंद्व, पत्नी और माँ इन दोनों रिश्तों को संभालते हुए, नौकरी का बोझ ढोते समय होने वाली चित्रा की खींचा-तानी ने उसके जीवन को मशीनी बना दिया है ।

इतवार का दिन, चित्रा फिर भी बेटी मैथिली को वह जल्दी स्नान कराने के लिए बाथरूम में ले जाती है और ठण्डे पानी से स्नान कराती है । आज दिवाकर की इच्छानुसार अंग्रजी पिक्चर देखने जाते हैं । इसलिए मैथू की तैयारी करके उसे आया ताराबाई के घर पहुँचाना चाहते है । रविवार ही तो मैथू को उन दोनो के साथ रहने के लिए मिलता है । सुबह-सुबह बेटी नाराज और चाय अच्छी न बनने के कारण दिवाकर कप-प्लेट तोड़कर भला-बुरा कहते है- ''बिगाड़ रखी है उसकी आदतें..।''

''नहीं बेटे । हम लोग तो एक आण्टी को देखने चर्चगेट जा रहे हैं । देखों बेटे, आप तो समझदार है ।'' मैथू उनके झूठे आश्वासन को समझ लेती है और शर्मा आण्टी के घर छोड़ने का आग्रह करती है ।... ''हम तुम्हें ताराबाई के घर छोड़ देंगे ।'' ''बेटा रोज तो रहती हैं आप! बस, जिस दिन ममीं-पापा को काम हो, उसी दिन जिद चढ जाती है ।''

वह कहती है - ''लेकिन सण्डे को हम.... ।''

ताराबाई का छोटा-सा कमरा उसमें उसके चार बच्चे हैं । आज छुट्टी का दिन, इसलिए दूसरे बच्चे नहीं थे । ''ताराबाई, हमें जरुरी काम से जाना था, देखों यह घर से कुछ खाकर नहीं आयी, अभी नाश्ता करवा देना... हम पाँच बजे तक आज जाएंगे ।'' ''मेमसाब, फिकिर नई करना ... ये अबी ठीक हो जायेगा ।''

चित्रा कहती है- ''नाराज होती है तो गुमसुम हो जाती है.. एक रविवार ही तो मिलता है उसे हमारे साथ रहने के लिए ...'' बैठो, बैठो । बस में तमाशा मत करो, पहले सोचना था यह सब । उन दोनों में संवाद की स्थिति नहीं थी ।

अब तो मैथू आयाओं से खेलती बड़ी हो रही थी, उसकी सेहत कमजोर ही थी । आयाओं की खास आदतें वह सीख चुकी थीं । आया उसका पेट भर सकती थी पर माँ का स्पर्श-प्यार नहीं दे सकती थी । नौकरी पेशा माँ-बाप ऐसे बच्चों को नाजायज एकाकीपन के अलावा कुछ नहीं दे सकते । चित्रा उसके लिए नौकरी छोड़ने का इरादा करती है । किंतु महानगर का अर्थगणित उसे मात देता है । मध्यवर्गीय कामकाजी महिला को घर-परिवार एवं कामकाज के क्षेत्र का कर्तव्य पूरा करना पड़ता है । उस महिला का जीवन सुबह से रात दस बजे तक मशीन के समान चलता है । पत्नी का कर्तव्य, बेटी के प्रति ममता, नौकरी का दायित्व के बोझ से चित्रा के जीवन में आनेवाले विविध समस्याओं को प्रस्तुत किया है । जब बेटी मैथू बीमार होती है तो कल घर छुट्टी लेकर कौन रहेगा इस बात को लेकर बहस होती है । इससे तो ताराबाई के घर जाना अच्छा सोचकर मैथू सुबह जाने के लिए तैयार होती है - किंतु कमजोरी से बेहोश होती है । पति डॉक्टर लेने जाते है, तो चित्रा स्कूल जाने के लिए विवश है ।

9.5 शब्दार्थ

दुलारना - लाड-प्यार करना

गला रुंधना	–	रोना आना
महसूस करना	–	अनुभूत, जिसका अनुभव हुआ हो
ऐय्याशी	–	विलासी, कामुक
निपटना	–	पूरा करना
कुढ़ना	–	खीझना, जलना
नाजायज	–	अयोग्य
मात देना	–	पराभूत करना
नुक्कड़	–	कोना
खलना	–	बुरा लगना
उनींद	–	आधी–अधूरी नींद

9.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* कामकाजी महिलाओं की विविध समस्याओं का इस कहानी के आधार पर ि ववेचन कीजिए ।
* महानगरों मे निर्माण होनेवाली समस्याओं का वर्णन कीजिए ।
* कामकजी महिलाओं के संदर्भ में अन्य कहानियों की सूची तैयार कीजिए ।
* महानगर की मैथिली कहानी का मूल्यांकन कीजिए ।
* भीष्म साहनी की चीफ की दावत कहानी पढकर सुनाइए ।

9.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* इकाई I – में देखिए

इकाई – 10

सरहद के इस पार –नासिरा शर्मा

अनुक्रम

10.0 **उद्देश्य**

10.1 **प्रस्तावना**

10.2 **विषय – विवरण**

कहानी – सरहद के इस पार

10.2.1 **सरहद के इस पार का प्रमुख पात्र**

10.2.2 **कहानी का वातावरण**

10.2.3 **कहानी की भाषा शैली**

10.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

10.4 **सारांश**

10.5 **शब्दार्थ**

10.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

10.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

10.0 उद्देश्य

- महिला कहानीकार नासिरा शर्मा की लेखन पद्धति को समझना ।
- सुशिक्षित, बेकार, इश्क में नाकाम युवक की मनोदशा को समझेंगे ।
- देश–विभाजन के समय की परिस्थितियों को समझने का प्रयत्न करेंगे ।

10.1 प्रस्तावना

नासिरा शर्मा हिंदी कथासाहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना सकी है । पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनका कार्य प्रशंसनीय रहा है । उर्दू, फारसी, हिंदी, अंग्रेजी, पश्तो भाषाओं पर उनका अधिकार था । ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य, कला और संस्कृति विषयक विषयों के प्रति उन्हें अधिक रूचि थी ।

उनकी साहित्य संपदा विस्तृत रही है । शाहनामा फिरदौसी, ईकोज ऑफ ईशनियन, रिवोल्यूशनः प्रोटेस्ट पोयट्री, बर्निंग पायर, किस्सा जाम का, काली छोटी मछली आदि कहानी संग्रह; सात नदियाँ एक समंदर, शाल्मली, ठीकरे की मंगनी, जिंदा मुहावरे, पत्थर की गाठी आदि उपन्यास; अफगानिस्तान : बुजकाशी का मैदान, क्षितिज पार अनुवाद साहित्य सृजन किया हैं ।

''सरहद के इस पार'' कहानी में एम्.ए. पास रेहान पाँच साल से बेकार है । बी.ए. में सुरैया उसकी सहपाठी थी । उससे साथ इश्क हुआ किंतु सैयद-शेख में शादी कैसे होगी । परिवार वालों के मना करने से सुरैया के इश्क से दिवाना बने रेहन के प्रेम-भंग की कहानी है । सुरैया की शादी किसी पाकिस्तानी ऑफिसर से होने वाली थी और शादी के बाद वह पाकिस्तान जाकर आजादी प्राप्त करेगी किंतु इस पार रेहान के दिल पर जो बिजली गिरेगी उसे कौन जानेगा ? इसी दिवानेपन से अधिक व्याकुल बने रेहान ने अंत में आत्महत्या की या शायद किसी ने उसकी हत्या कर दी । कहानी को पढ़ने के बाद ही इस बात पर पाठकों को विचार-विवश होना ही पड़ेगा ।

10.2 विषय विवरण

कहानी – सरहद के इस पार

अम्मा के दिल को दौरा पड़ा था । मुँह से झाग निकल रहा था । दद्दा, दादी ने अम्मा का हाथ सहलाते हुए कहा – ''मुसीबत जब आती है, तो चारों तरीफ से आती है ।'' माँ का चेहरा देख-देखकर नरगिस रो रही थी । ''रोने से काम नहीं चलेगा, लड़की । पीछे की खिड़की से किसी को पुकारो... शायद शकूर घर पर मिल जाए ।'' दद्दा ने कहा ।

नरगिस की आवाज सुकर शेव बनाते हुए शकूर चाचा सामने आए । खपरैल के टूटने की आवाज के साथ ही आंगन में झगड़े की आवाज आ रही थी – ''मैं बता दूँगा। गिन-गिनकर बदला लूंगा । मुझसे बचकर कोई नहीं भाग सकता, मैं पूरी दुनिया जलाकर राख कर दूंगा।'' रेहान भाई को शकूर चाचा कमरे में ले आए हाथापाई में वे जख्मी हो गए थे । सुरैया आपा के कारण रेहन भाई की यह हालत हुअी थी ।

अम्मा को होश आते ही दद्दा ने उनको रुह अफजा पिलाया । शकूर चाचा ने अब्बा को फोन किया । भैया कमरे में बंद थे । सात साल की नरगिस यह देख रही थी । तभी दद्दा दुपट्टा फैलाकर सुरैया आपा को कोस रही थी । ''नासपीटी, जहन्नुम है । जाने कितने घर उजाडेगी हर्राफा ।''

''नरगिस इधर आओ ।'' अम्मा की कमजोर आवाज थी ।

''आई अम्मा''

''मेरी तिलेदानी से जरा महीन वाली सुई निकाल लाना ।'' तभी दद्दा ने नरगिस से कहा – ''जाकर जरा खालिकुन को तो बुला लाओ! कहाना, दुल्हन की तबीयत ठीक नहीं हैं । दद्दा ने फौरन बुलाया है ।''

गली में सन्नाटा था । दो दिन पहले ही हिंदू-मुसलमान दंगा हुआ था । रेहान खपरैल पर बैठकर बक रहा था ... ''मारो सारे हिंदुओं को, गले दबा दो इनके... मारो सब कातिलों को, खून की नदियाँ बहा दो मार-मारकर ।'' सबको पता था रेहान के दिमाग पर असर है । कुछ 'पागल' है...।

शाकूर उसे समझा चुका था, मगर कौन समझता है । पूरा मुहल्ला हिंदुओ का है ।

सिर्फ तीन–चार घर मुसलमान के हैं । गली के पार सारा का सारा मुहल्ला मुसलमानों का है । जब कर्फ्यू खत्म हुआ वह जान–बुझकर शेरवानी पहनकर निकला – ''देखें, किस माई के लाल में ताकत है मुझे छूने की''।

दद्दा कहने लगी – ''यह हमें रुस्वा कराके रहेगा । भुस में चिंगी डाल रहा है । आग न लगती होगी, तो लग जाएगी ।''

वर्मा जी की पत्नी अम्मा से कह रही थी – ''बहन जी ! परेशान न हो, हम रेहान को हमेशा से जानते हो, अपना लड़का है । उसकी बातों को सब समझ रहे है, आप चिंता न करें ।''

रेहान ने फर्स्ट क्लास में एम.ए. पास किया था । पांच साल से नौकरी की तलाश थी । बी.ए. में सुरैया से इश्क हुआ, जब शादी की बात आयी तो घरवालों ने साफ कह दिया कि, सैयद की लड़की शेख में नहीं जाएगी । खानदान भी छोटा है । जब सुरैया की मंगनी के बात रेहान को मालूम हुई पर उसे यकीन नहीं आया । परसों ही तो वह सुरैया से मिला था ।

वायदे के मुताबिक सुरैया जुमे के दिन उसे मिलने के लिए नहीं आयी । वह सुरैया के घर जा भी नहीं सकता था । बेकारी, इश्क में नाकामी और बेवफाई ने रेहान को दीवाना बना दिया । घरवाले सुरैया के प्रति नफरत करने वाली बहुत बातें करते थे मगर वह अधिक व्याकुल बनते जा रहा था ।

फिर से फसाद हुआ । शहर में तनाव बढ़ गया । पुलिस बंदोबस्त था, रेहाना ऊपर छप्पारों पर बैठा बकवास कर रहा था – ''मारो, कातिलों को, मारो मेरे कातिल को । सब नामर्द अन्दर बैठे हैं । कोई नहीं बाहर निकलता है ? यह मेरे वतन है, मेरे वतन । देखता हूँ, कौन जीने से रोकता है? हिम्मत है तो आओ निकलो । एक–एक का सर फोड़ डालूंगा ।'' कहकर खपरैल फेंकता रहा ।

शाकूर चाचा ने दो चाँटे लगाते हुए कहा – ''बदतमीज! बेअदब । जो मुँह में आता है, बकता चला जा रहा है ।''... ''सुरैया सर पर सवार है । हिम्मत है, तो उसके बाप को गालियाँ दो । उससे डरता है । डरपोक!''

कुछ और कहते कि बम के धमाके से चौंक पड़े । शकूर चाचा की मार खाकर भैया रेहाना औंधे पड़े थे । नरगिस उसके सर से मिट्टी हटाना चाहती है पर सबके फूले मुँह देखकर वह सहमी बैठी रही ।

बम फुटा । बाहर कर्फ्यु शुरू हो गया था शकूर चाचा कहने लगे अम्मा! कल्लन मियाँ चल बसे। अफजल के बनाए बम फट गए । पुलिस उनके घर में है । कल्लन मियाँ की बीवी भी जख्मी हुई है और अफजल की बोरियाँ छत की बाल्कियों से लटक रही हैं ।''

अंधेरी रात में सारा शहर खामोश था । लोग लाठियों की ठक ठक सुनकर सो गए थे । रेहान चुपचाप छप्पर पर बैठा उखाली सड़क को देख रहा था । उसके मन में रेहाना के प्रति नफरत ही नफरत थी । उसकी शादी पाकिस्तान में किसी बड़े ऑफिसर से हो रही थी ।

इसीलिए वह चुप रही थी कि शादी के बाद सरहद के पार निकल जाएगी । सरहद के इस पार, किसी के दिल पर कौनसी बिजली गिरेगी, वह इन सारे एहसानों से पूरी तरह से आजाद होगी ।

घंटा-घर ने बारहे बजाए । रेहाना व्याकुल हो उठा । सब लोग इकबाल बटोर लाया हूँ । जो शायर दिलों को काटने की बात करते हैं इन्सानी रिश्तों को तोड़ने की बात करतें हैं, उनका अदब कोयला है, जिसे छूकर हाथ काले होते हैं और दिमाग तारीक । समझे मियाँ परवेज!''

''सुरैया का गम इकबाल को जलाकर कम हो जाएगा क्या ।'' परवेज ने पुछा । ''तुम्हारी महबूबा और कौन? असलम ने जलाकर कहा ।''

''अंग्रेजों ने हमें फसाद की शक्ल में पाकिस्तान तोहफे में दिया है और हम इस जख्म को जब तक जीयेंगे, पालते रहेंगे ... करें भी क्या? कर ही कुछ नहीं सकते हैं, अपाहिज जो ठहरे ... ।'' रेहान ने अधजले कागजों को लिया । पूरी गली में कागज के टुकड़े, उड़ रहे थे ।

''मेरे गम को सुरैया की सरहदों में कैद करके तुम सब हकीकत से फरार होने चाहते हो ।'' जेब से सुनहरी डिबिया निकालकर उसमें राख भरी और डिबिया जेब में रखली । शादी के दिन सुरैया को डिबिया भेज दी और घोड़े बेचकर दो दिनों तक सोया रहा । घर में सबने खुदा का शुक्र किया कि वे खतरे से बच गए । किंतु दो दिन से अब उसका पता नहीं कहाँ न ढूंढ़ा । गुस्से में शकूर चाचा ने कहा- ''परसो उनका मैच है । प्रॅक्टिस पर नहीं जा पा रहे हैं । उनकी बीवी रजिया भी मायके गई हुई है । उनके भाई की तबीयत खराब है ।''

घर में हंगामा चीखें रुकने का नाम नहीं ले रही थी । अब्बा, अम्मा, दद्दा का बुरा हाल था । दो हफ्ते बाद रेहान की लाश नैनी के पास नाबदान से मिली । बदन पर चाकू के निशान हैं । जख्म से बदबू फूट रही है और पेट की अंतडियों में कीड़े रेंग रहे हैं । घर में पूरा मोहल्ला उमड़ा है ।

नरगिस सोचजी है- ''अगर सुरैया आपा, वहाँ होती, तो क्या वह रोती? अगर सुरैया आपा यहाँ होती तो भैया मरते ही क्यों?''

भीड़ में उन तीन लड़को के बारे में कानाफूसी चल रही थी । कुछ लोगों को उन्हीं पर शक है । पर परवेज भाई, असलम भाई, शाहिद भाई तो भैया के पास बैठे रो रहे थे । वे भैया को क्यों मारेंगे?

आसमान में चीले उड़ रही थी । नरगिस घबरा गई । ''आज तो भैया सचमुच ही मर गए... कहीं चील ...? '' वह भाई के पास जाने वाली थी पर दादी ने रोका । वह सोचने लगी कि ''बदला भैया से चीलों को लेना था मगर ये कीड़े कहाँ से आ गए ? कागज से उठाकर उन्हें वे बाहर फेंकते थे कि पैर के नीचे दबकर मर न जाएँ । फिर ये सब कीड़े भैया के बदन को क्यों काट रह हैं ?''

दद्दा ने उसे सीने से लिपटा लिया, कह रही थी – ''सुरैया का गम घुन की तरह चाट गया ।'' घुन तो गेहूँ में लगता है – खलिकुन गेहूँ पछोड़ते हुए शिकायत करती थी । नरगिस को याद आया घुन का चाटा खोखला गेहू का दाना । दद्दा के सीने से मुहँ हटाकर उसने भैया की तरफ देखा ।

''तो क्या सुरैया आपा घुन थीं ?''

आपने आँगन में सो रहे थे । सुरैया का कमान उसकी आँखों के सामने आने लगा । एक बार उस बेवफा से मुलाकात हो जाती तो बताता कि नफरत में भी उतनी ही शिद्दत होती है जितनी इश्क में ।....''

नीचे आँगन में ''कौन है? कौन है ?'' आवाज उभरी

रेहान को दबी-दबी महीन आवाज सुनाई दी – ''बचाओ । बचाओ। देखा एक लड़की को पकड़े दो लड़के खड़े थे और पास ही एक बैठा बीड़ी पी रहा था । एक ने रेहान को पूछा – कौन हो तुम? इस घर मे कैसे घुसे ।''

एक ने हँसते हुए कहा – ''पहचाना नहीं? अपना पार्टनर है यार! रेहन है रेहान ।''... ''यह दिवाना रेहान?''

''यह कौन है?''

दिखता नहीं है क्या? लड़की है और कौन है?

लड़की हिंदू थी और कमसिन थी । कर्फ्यू लगने की आपा-धापी में ये लोग उसे उठा लाए थे । बौखलाए लोग यह समझ नहीं पाते थे कि उनके आसपास क्या घट रहा है । घृणा की आग में वासना की लकड़ी दहक उठी थी । दोनों लडके पगलाऐ हुए थे । रेहन ने सारा मजा किरकिरा कर दिया था ।

''तुमको बड़ी हमदर्दी हो गई है इस हिंदू लौंडिया से?'' रेहान से भिड़ने की वे कोशिश करने लगे ।

''इस वक्त मेरे तन-बदन में उतनी ही आग लगी है, जितनी तुम्हारी बहन को किसी हिंदू के घर में इस हालत में देखकर लगती ।''

यार, मजाक मत करो । तुम्हारा भी हिस्सा होगा, समझे । एक लड़के ने कहा '' फिर निकला मुँह से यह अल्फाज तो ... ।'' रेहन का हाथ उठा गया ।

''हिंदू लौंडिया के लिए मुसलमान भाई पर हाथ उठाओगे?'' रेहान ने कहा । रेहान ने मार-कूटकर तीनों लड़कों को कमरे में बंद करके लड़की को उठाकर छप्पर पर बैठाया उसकी पूछताछ की । पता चला नुक्कड़वाली पंचूरिया के मालिक रामखिलावन की वह बेटी है । लड़की की बदनामी न हो छप्पर-छप्पर से उसे जाने की वह बात करता हैं –

''तुम चल पाओगी छप्पर पर बिना शोर किए?''

''काहे नहीं । घंटा घर से तीन का गजर गूंजा ।''

''चलो''

''मगर भैया! बीच में गली पड़िये ओका कैसे लांघब?''

''चलो, उठो तो! कहकर वे चलने लगे रेहान जोखीम का काम कर रहा था । नीचे गालियों में गश्त करती पुलिस सो रही थी । सामने सुरैया का मकान खड़ा था किंतु रेहान ने नफरत से मुँह फेर लिया ।''

अम्मा की पलंग पर दावतनामा पड़ा था सुरैया और इमतेयाज की परसो शादी थी और चौथी के दिन वह पाकिस्तान जाने वाली थी ।

इकबाल के किताब के पन्ने फाड़कर जला दिए ।

10.2.1 **सरहद के इस पार का प्रमुख पात्र**

रेहानभाई 'सरहद के इस पार' का प्रमुख पात्र उसने एम.ए. पास किया है और पाँच साल से नौकरी की तलाश में है । पीएच.डी करना चाहता था पर उसका मन उचट गया । क्योंकि बी.ए. में सुरैया नामक लड़की से उसकी दोस्ती हुई जो आगे चलकर इश्क में बदल गई, फिर शादी के वायदे किए गए, किंतु घरवालों ने साफ इन्कार कर दिया । सुरैया, सैयद की लड़की है वह शेख में नहीं जा सकती । उसका खानदान छोटा है । लोग सामान्य है किंतु रेहान पर तो सुरैया का इश्क सँवार है ।

बहुत दिनों बाद पता चला कि सुरैया की मँगनी हो गयी , किंतु उसे इस बात पर यकीन नहीं हो रहा था क्योंकि परसो ही तो उसकी मुलाकात हुई थी । मन ही मन वह घुंटता रहा । अपनी विवशता पर बेकरार हो गया था ।

बेकारी, इश्क में नाकामी और बेवफाई ने रेहान को दीवाना बन दिया था । दद्दा कहती थी कि सुरैया की फुफ्फी ने इस पर जादूटोना किया है। वह बहुत ही जल्लाद औरत है । ऐसे बुरे लोगों के बीच रेहान जाकर फँस गया । सुरैया के प्रति नफरत जितनी दिखाई जाती है वह उतना ही अधिक व्याकुल हो जाता है । अब तो वह पागल सा व्यवहार करने लागा है । दिल का वह बिल्कुल साफ है ।

खपरैल पर बैठकर रेहान कुछ भी बकता है – ''मारो सारे हिंदुओं को गले दबा दो इनके ।''

''मारो कातिलों को, मारो मेरे कातिल को । सब नामर्द अंदर बैठे हैं ।'' अनेक बार शकूर चाचा उसे पकड़कर कमरे में बंद कर देते थे तो कभी लातों से मारते, जख्म हो जाती थी । घायल–सा बहुत देर तक सो जाता था । ''उसके दिमाग पर असर हुआ है'' इस बात का सबको पता था । इसलिए पेट्रोलिंग करने वाले सिपाही भी हँसकर निकल जाते थे । शकूर चाचा उसे समझा चुके कि पूरा मुहल्ला हिंदुओं का है । सिर्फ तीन–चार मुसलमानों घर हैं । गली के पास सारा मुहल्ला मुसलमानों का है ।

सुरैया का दावतनामा देखकर रेहान दुःखी हो जाता है । शादी के बाद वह पाकिस्तान चली जाएगी । इस बात को लेकर वह वेचैन हो जाता है और शायर इकबाल के किताब के पन्ने

फाड़कर जला दिए । उसकी राख सुनहरी डिबिया में डालकर शादी के दिन सुरैया को भेजकर उसके दिल को आराम मिला । सबको लग रहा था कि शादी वाले दिन वह कोई आफत न खड़ी कर दे । पर नहीं बड़े आराम से दो दिन तक सोया रहा । सब ने चैन की साँस ली।

शहर में जब दंगा-फसाद हुआ था । तब तीन लड़कों ने जिस हिंदू लड़की को भगाकर लाया था । उनके दिल में वासना जगी थी । उन लड़कों के साथ मार-पीट करके लड़की को उनकी चंगुल से छुड़ाया । लड़की की बदनामी न हो, इसलिए उसे चुपचाप रात में ही घर पहुँचाया । वह लड़की नुक्कड़वाली पंचूरिया रामखिलावन दुकानदार की बेटी सरस्वती थी।

दूसरों के इज्जत की परवा करने वाला रेहान सुरैया के गम को भुला न सका । सुरैया की शादी के बाद दो दिन सोता रहा । किंतु बाद में दो दिन तक लापता रहा । एक नाले में उसकी लाश मिली वह भी सड़ी-गली अवस्था में। नरगिस, अम्मा, अब्बा, दद्दा सरस्वती, रामखिलावन आदि सभी इस सदमें को बर्दाश्त न कर सकें । एक शिक्षित बेकार नाकाम (इश्क में) युवक की मानसिक दशा का यथार्थ वर्णन कहानी में किया गया है । सरहद के इस पार वाले युवक का भयानक अंत पाठकों को बेचैन कर देता है । पाठक यह सोचने पर भी विवश होता है कि रेहान ने आत्महात्या की थी या उसकी उन तीन लड़कों ने हत्या की थी । अंत तक कहानी में जिज्ञासा और प्रभावपूर्ण बनी रही है ।

10.2.2 **कहानी का वातावरण**

नासिरा शर्मा लिखित 'सरहद के इस पार' कहानी भारत पकिस्तान के विभाजन के बाद की स्थिति का यथार्थ अंकन कराती है । शहर में बार-बार होने वाले दंगे-फसाद । लोगों के दिल में पैदा होने वाला तनाव । पेट्रोलिंग करती हुए पुलिस की फौज । कुछ घंटे के लिए कर्फ्यु हटा देने से लोगों को अपना काम-काज करने के लिए राहत । आधिक समय तक कर्फ्यु के कारण तंग वातावरण। गलियों में खामोशी। धड़कते भयभीत दिल, भारी बूटों और लाठियों की ठक-ठक सुनते-सुनते सो गए लोग । छप्पर पर बैठा रेहान, खपरैल आंगन में फेंकता, उसे मना करने की किसी में हिम्मत नहीं । शकूर चाचा ने उसे पकड़कर कमरे में बंद कर दिया । बहन नरगिस का कमरे में बंद भाई रेहान को झाँक कर देखना और दुःखी होना घटनाएँ वातावरण की निर्मिति करती है ।

अम्मा को दिल का दौरा पड़ना । दद्दा की परेशानी । कुछ सयम बाद अम्मा को होश आना । खपरेल पर बैठकर रेहान का कुछ भी बकना-''मारो सारे हिंदुओं को, गले दबा दो इनके... ।''

रेहान के दिमाग पर असर हो गया है । कुछ 'पागल' है । सबको पता है । पूरा मुहल्ला हिंदुओं का है सिर्फ तीन-चार घर मुसलमान के हैं । शकूर चाचा उसे समझाते हैं मगर वह समझे तब ना! कहता है - ''देखें किस माई के लाल में ताकत हैं मुझे छूने की ।''

''मुहल्ले में इतनी बेहूदगी की वजह से नजरें चुरानी पड़ती है ... शकूर चाचा कहते ही है कि बम फटने की आवाज आती है । धमाके से चौंक कर सभी बाहर भागे । कर्फ्यु

लग गया था । पता चला कि कल्लन मियाँ चल बसे । अफजल के बनाए बम फूट गए । पुलिस उनके घर में है । कल्लन मियाँ की बीवी भी जख्मी हुई है और अफजल की बेटियाँ छत की बल्लियों में लटक रही हैं ।''

एक लड़की को पकड़कर तीन लड़कों की हलचल देखकर रेहान उनसे भीड़ जाता है । ''बचाओ, बचाओ की आवाज से उसके कदम रूक गए । वासना की आग उन लड़कों में देखकर लड़कों को बहुत पिटता है । '' यार, मजाक मत करो । तुम्हारा भी हिस्सा होगा, समझे । हिंदु लड़की के लिए मुसलमान भाई पर हाथ उठाओगे? ''

लड़की को बचाकर भयानक वातावरण में, छप्पर-छप्पर चलकर उसके घर पहुचाता हे । नीचे गलियों में गश्त करती पुलिस भी सो गई थी । पढ़ा लिखा रेहान बेकार है, इश्क में नाकाम है किंतु सुरैया का दिवाना है । पागलपन का भूत उस पर सवाँर है किंतु उसकी शादी एक पाकिस्तान के अफसर से तह हो गई इस बात पर उसका भरोसा नहीं है । दिल टूटता तो शायर इकबाल के पुस्तक को फाड़कर जला देता है और उसकी थोड़ी राख डिबिया में सुरैया की शादी वाले दिन भेजकर निश्चित होकर सो जाता है ।

छप्पर पर बैठा रेहान दो दिन से लापता है । ढूँढने पर भी वह न मिला । नाली से जब उसकी सड़ी-गली लाश मिली । परिवार वालों का बुरा हाल हो गया । घर में पूरा मातंम छा गया था । चीखें कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी । 'सरहद के इस पार' रेहान की यह स्थिति दिल को चोट पहुँचती है । लेखिका ने वातावरण को साक्षात् उतारने का प्रयत्न किया है । प्रसंगों के द्वारा वातावरण स्वाभाविक रूप में सामाने-प्रत्यक्ष नजर आने लगता है ।

10.2.3 **कहानी की भाषाशैली**

नासिरा शर्मा में 'सरहद के इस पार' कहानी में अंग्रेजी अरबी-फारसी भाषा के शब्द प्रयोग से वातावरण वास्तविक रूप में उभारा है । भारत-पाकिस्तान विभाजन के कारण लोगों के मन में डर बना हुआ था । क्योंकि दंगे-फसाद रूकने का नाम न ले रहे थे । कर्फ्यू बम विस्फोट, गली-मोहल्लों में खामोशी, पुलिस सिपाइयों के लाठ्ठियों के लठ्ठियों की आवाज भय पैदा करती थी ।

रेहान जो अपनी सहपाठी सुरैया से इश्क लड़ाता है किंतु सामाजिक बंधन, ऊँच-नीच के भेद के कारण घरवाले-सैयद-शेख के बीच शादी नहीं हो सकने पर दृढ़ है । बेकार, नाकाम रेहान पागल हो जाता है । हिंदुओं के मोहल्ले रहकर उन्हे गालियाँ देता है । पागल समझ कर सब उसकी तरफ ध्यान नहीं देते । किंतु वही रेहान दंगे में पकड़कर लाई हिंदू लौंडिया की मुसलमान लड़कों के चंगुल से मुक्ति करता है । महबूबा सुरैया की शादी हो जाने के गम मे लगातार दो दिन सोया रहता है और अंत में दो दिन लापता हो जाता है । पता नहीं वह आत्महत्या करता है या उन तीन लड़कों ने (जो लड़की को पकड़ लाए थे) खून किया । दो दिन बाद नाली में लाश मिलती है । सुशिक्षित बेकार, दीवाने युवक की

यह भयानक अवस्था निश्चित ही मर्म को छूती है ।

लेखिका हिंदी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, पश्तो भाषाओं की ज्ञाता है । इसलिए उक्त कहानी में उन्होंने विविध भाषाओं के शब्दों का समुचित प्रयोग किया है ।

उदा. उर्दू – फारसी शब्द – अम्मा, अब्बा, बेगम, नाकाम, बेवफा, बुलंद, गोश्त, तिलेदानी, खलिकुन, अदब, आफियत, असबाब, खामोश, माहौल, इल्जाम, बेकरार, बेबसी, जुम्मा, कातिल, मोहल्ला, नाबदानादि ।

अंग्रेजी शब्द – फर्स्ट क्लास, कर्फ्यु, पार्टनर, सेक्युलर, इंडिया, डॉलर, पाउण्ड, बम, मैच, प्रॅक्टिस, बॅडमिटंन, नम्बर वन, ऑफिसर आदि ।

संस्कृत शब्द – उत्साहित, सरस्वती, अभिव्यक्ति, ग्लानि, मूर्ति आदि ।

मुहावरों का सरस प्रयोग उनकी भाषा को न केवल सजीव करते हैं बल्कि भावों को सरस, सुबोध, प्रभावपूर्ण, स्पष्ट भी बनाते हैं –

जैस – झाग निकलना, हाथ–पैर ऐंठ जाना, मन उचटना, गला घोटना, बेकरार करना, अंगारों पर लोटना, घुन चाटना, दिल को करार आना, मुँह लेकर बैठना, दिवाना बना देना, लात–घूँसों की बारिश करना, मुहँ फूलना, दिल पर बिजली गिरना, मजा किरकिरा करना, वकालत करना, आँख मारना, तोहफे में देना, कानाफूसी करना आदि ।

अनुकरणात्मक शब्द – तड़ातड, गिन–गिनकर, देख–देखकर, चील–चिलोरियाँ, मार–मारकर, पटक–पटकर, पल–पल आदि ।

यथार्थ का चित्रण – बीभत्स रस निर्माण हुआ है –

उदा. दो हफ्ते बाद रेहान भाई की लाश नैनी के पास नाबदान से निकली है । बदन पर ढेरों चाकू के निशान हैं । जख्म से बदबू फूट रही है और पेटी की अँतडियों में कीड़े रेंग रहे हैं ।

पात्रानुकूल भाषा शैली का प्रभाव दिखाई देता है –

उदा. ''नासपीटी, जहन्नुमी है । जाने कितने घर उजाड़ेगी हर्राफा ।'' दद्दा ''मेरे जीते–जी सारे चोंचले हैं । मर गई तो,.... ।'' अम्मा

''मारो मेरे कातिल हों । सब नामर्द अंदर बैठे हैं'' –रेहान''हाँ , यह हमारे बापू की है --'' लड़की –सरस्वती

''अम्मा! तमाम ढूँढ लिया, अस्पताल, नदी, कुआ । उस रेहान के बच्चे का कहीं पता नहीं है ।'' शकूर चाचा

''तो क्या सुरैया आपा घुन थीं?'' नरगिस आदि के संवादों से कथाविकास और अंत तक उत्कंठा बनी रही है । कलात्मक, मार्मिकता, प्रभावात्मक, सहजता, सुबोधता उनकी भाषाशैली की विशेषता रही है ।

10.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न.

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* 'सरहद के इस पार का प्रमुख पात्र रेहान हैं' – सिद्ध कीजिए ।

.....

.....

.....

* रेहान पर किस बात का पागलपन सवार था – स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* बदमाश लडकों के चंगुल से रेहान ने लड़की को कैसे छुडाया ।

.....

.....

.....

* रेहान की लाश मिलने पर उसके घरवालों की मनस्थिति का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

* दद्दा की चरित्रगत विशेषताओं का परिचय दीजिए ।.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* सरहद के इस पार – शीर्षक

.....

.....

.....

* शकूर चाचा

.....

.....

.....

* सरहद के इस पार का वातावरण

.....

.....

.....

* इस कहानी की भाषा शैली

.....

.....

.....

* सुरैया आपा

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* रेहाना की बहन का नाम क्या है ?

.....

.....

.....

* दद्दा कौन है ?

.....

.....

.....

* रेहान ने बदमाशों के चंगुल से छुड़ाई हुई लड़की का नाम लिखिए ?

.....

.....

.....

* रेहान का किसके साथ इश्क चल रहा था ?

.....

.....

.....

* सुरैया के साथ रेहान की शादी क्यों नहीं हुई ?

.....

.....

.....

* रेहान की लाश कहाँ मिली थी ?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* ''जाकर जरा खालिकुन को तो बुला लाओ । कहना दुल्हन की तबीयत ठीक नहीं है । दद्दा ने फौरन बुलाया है ।''

.....

.....

.....

* ''मारो कातिलों को, मारो मेरे कातिल को । सब नामर्द अंदर बैठे हैं । कोई नहीं बाहर निकलता है ....।''

.....

.....

.....

* ''सुरैया सर पर सवार है । हिम्मत है, तो उसके बाप को गालियाँ दो । उससे डरता है । डरपोक ।''

.....

.....

.....

* ''पहचाना नहीं ? अपना पार्टनर है यार । रेहान है रेहान ।''

.....

.....

.....

* ''हिंदू लौंडिया के लिए मुसलमान भाई पर हाथ उठाओगे ?''

.....

.....

.....

* '' तुम चल पाओगी छप्पर पर बिना शोर किए ?''

.....

.....

.....

10.4 सारांश

'सरहद के इस पार' कहानी की लेखिका हे नासिरा शर्मा । कहानी का केंद्रीय पात्र है रेहान भाई । अम्मा, अब्बा, दद्दा, नरगिस और भैया रेहान मुसलमान परिवार पड़ोस में ही शकूर चाचा रहते हैं । खपरैल छप्पर से आँगन में फेंकने वाले रेहान को शकूर चाचा पकड़कर कमरे में बंद कर देता है । बहन नरगिस सात साल की है, उसे भाई की यह स्थिति देखी नही जाती । वह खिडकी से देखते है, रेहान- ''औधा पड़ा पसीने से भीग गया है ।''

शहर में फसाद हुआ हिंदू-मुसलमान का । गली में सन्नाटा है मगर रेहान खपरैल पर बैठकर कुछ भी बकता है । रेहान के दिमाग पर असर हुआ है यह सब जानते हैं । शकूर चाचा उसे समझा चुके है । पूरा मुहल्ला हिंदुओं का है । सिर्फ तीन-चार घर मुसलमान के है । गली पार सारा का सारा मुहल्ला मुसलमानों का है । जब कर्फ्यु खत्म हुआ तो जान-बूझकर रेहान शेरवानी पहनकर निकला -

''देखें किस माई के लाल में ताकत है मुझे छूने की ।''

रेहान पढ़ा लिखा है । एम.ए., पाँच साल से नौकरी की तलाश में है । जब वह बी.ए. में था तब सुरैया से उसका इश्क चल रहा था किंतु वह सैयद की बेटी शेख में शादी नहीं हो सकती अर्थात् समाज में जाति-संप्रदाय के भेद स्पष्ट थे ।

सुरैया की मँगनी हो गई फिर भी उस बेवफा ने रेहान को यह बात नहीं बताई इसलिए वह बेचैन था । बेकारी, इश्क में नाकामी और बेवफाई ने उसे दिवाना बना दिया था । कह रहा था - ''मारो कातिलो को । सब नामर्द अंदर बैठे हैं ...।''

शकूर चाचा दो जोरदार चाँटे लगाएँ - ''सुरैया सर पर सवार है । हिम्मत है, तो उसके बाप को गालियाँ दो । उससे डरता है । डरपोक ।'' तभी खबर मिली कि अफजल के बनाए बम फट गए उसकी, कल्लन मियाँ की मौत हो गई ।

सारा शहर खामोश था । रेहान के मन में सुरैया के प्रति नफरत थी । शादी के बाद सरहद के पार निकल जाएगी इसलिए वह चुप थी पर सरहद के इस पार किसी के दिल पर कौन सी बिजली गिरेगी, वह इन सारे एहसानों से आजाद होगी । बारह बजे थे पर वह सोया न था । तभी ''बचाओ'' की आवाज सुनी । तीन लड़कों ने एक सुंदर हिंदू लड़की को उठा लाया था । तभी एक ने ''कहा अपना पार्टनर है यार! रेहान है रेहान ।'' उन तीनों से मारपीट की और लड़की को छप्पर-छप्पर से ले जाकर उसके घर पहुँचाया । लड़की की बदनामी का डर था । बड़ा जोखिम का काम रेहान ने किया। वह लड़की- सरस्वती- रामखिलावन दुकानदार की बेटी थी ।

सुरैया की शादीवाले दिन शायर इकबाल की पुस्तक जलाकर राख डिबिया में भेजकर वह शांति का अहसास करते हुए दो दिन सोया रहा । सबने चैन की साँस ली । किंतु उसके दो दिन बाद वह घर लौटा नहीं था । परिवार वाले परेशान थै । अस्पताल, नदी, कुआँ - सब स्थानों पर देखा । दो हफ्ते बाद उसकी लाश नैनी के पास नाबदान से निकाली

। बदन पर चाकू के निशान, जख्म से बदबू, पेट की अंतडियों से कीडे रेंग रहे थे । पता नहीं उसने आत्महत्या की या उन तीन लड़कों ने उसकी हत्या कर दी । अंत तक कहानी पाठकों की उत्कंठा बनाए रखती है ।

10.5 शब्दार्थ

झाग निकालना	–	फेन निकलना
हाथ–पैर ऐंठ जाना	–	हाथ–पैर सिकुड जाना
तिलेदानी	–	सूई, अंगुश्तान आदि रखने की छोटी थैली
महीनवाली	–	बारीक
असबाब	–	आवश्यक सामग्री चीज, वस्तु
खालिकुन	–	वैद्य
रूसवा	–	रोष, नाराज होना
मन उचटना	–	मन न लगना
गला घोटना	–	जान लेना
बेबसी	–	विवशता
बेकरार हो उठना	–	व्याकुल– बेचैन होना
बेवफाई	–	कृतध्नता
नश्तर	–	नुकीला शस्त्र
मलगिजी रोशनी	–	बैंगनी, लाल–निला रंग
शिद्दत	–	कष्ट, कठोरता, तीव्र
अल्फाज	–	शब्द, कथन
खामोश सरापा	–	मौन–चुप
अँगारों पर लोटना	–	दुःख भुगतना
घंटाघर	–	घड़ी लगी हुई ऊँची मीनार
हर्राफ	–	डायन, भूतनी
इकबाल शायरे	–	प्रसिद्ध शायर इकबाल
अजमी	–	महान्, श्रेष्ठ
अदब	–	विनय, शिष्टाचार
एहतिया	–	बचाव, सावधानी
दिल को करार आना	–	चैन आखना
आफियत	–	बचाव, खैरियत
मतमईन	–	शांति से, आराम से
नाबदान	–	नाली
घुन चाटना	–	कीडे लगना, नष्ट करना

10.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* देश–विभाजन से संबंधित कहानियों का संकलन कीजिए ।
* रेहान के प्रेमभंग के कारण बनी हुई मानसिक स्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।
* नासिरा शर्मा के अन्य कहानी संग्रहों में से किसी एक कहानी की समीक्षा कीजिए ।
* 'ठीकरे की मंगनी' शर्मा के उपन्यास को पढिए ।
* भीष्म साहनी की चीफ की दावत कहानी पढकर सुनाइए ।

10.7 अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* इकाई I – में देखिए

इकाई – 1

खण्ड काव्य – शबरी–कवि – नरेश मेहता

अनुक्रम

1.0 **उद्देश्य**

1.1 **प्रस्तावना**

1.2 **विषय – विवरण**

- 1.2.1 **खण्ड काव्य – क) रूप विधान, ख) कथावस्तु**
- 1.2.2 **पात्र – शबरी, मतंग ऋषि, श्रीराम**
- 1.2.3 **परिवेश**
- 1.2.4 **भाषा – शिल्प**
- 1.2.5 **उद्देश्य**

1.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

1.4 **सारांश**

1.5 **शब्दार्थ**

1.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

1.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

1.0 उद्देश्य

- ✲ खण्डकाव्य के निर्माण तत्त्वों को जान सकेंगे ।
- ✲ रामायण के 'शबरी' के कथानक से परिचित होंगे ।
- ✲ नरेश मेहता की काव्य संबंधी नवीन उद्भावनाओं की प्रासंगिकता को जान सकेंगे ।
- ✲ मानवीय मूल्यों को अपने व्यक्तित्व में उतारकर जीवन को अधिक संपन्न कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

✲ नरेश महता का परिचय

साहित्यकार समाज के यथार्थ जीवन का भोक्ता होता है । अपनी अनुभूतियाँ प्रभावक, रोचक और आकर्षक ढंग से जब प्रकट करता है तो साहित्य बन जाता है । साहित्य में लेखक का व्यक्तित्त्व प्रकट होता है । उसकी प्रतिभा, कल्पना, अनुभूति, अभिव्यक्ति और संयोजन के द्वारा विचारधारा ही उसके साहित्य प्रस्फुटन, व्यक्तित्त्व के साधन हैं । इसलिए साहित्य और व्यक्तित्त्व दोनों परस्परजीवी हैं ।

'शबरी' खण्डकाव्य के रचनाकार नरेश मेहता के व्यक्तित्त्व का परिचय इसलिए आवश्यक है ।

नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी 1924 मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के राजापुर नामक गाँव में हुआ ।

नरेश मेहता का वास्तविक नाम पूर्णशंकर शुक्ल है । वे गुजराती परिवार से संबंद्ध हैं । मेहता उनको प्राप्त उपाधि है । मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ राजघराने ने उन्हें सम्मानित किया और राजमाता ने पूर्णशंकर का नाम 'नरेश' रखा । इस तरह वे पूर्णशंकर शुक्ल से नरेश मेहता बने ।

नरेश मेहता के पिताजी का नाम पंडित बिहारीलाल शुक्ल था । उनकी माँ का स्वर्गवास, वे जब ढाई वर्ष के थे, तभी हो गया । पिता विरागी हो गये । इसलिए बालक नरेश को बचपन से ही पिता-और माता का स्नेह नहीं मिला ।

नरेश मेहता का लालन-पालन उनके चाचा पंडित शंकरलाल शुक्ल ने किया, जो धार के एक विद्यालय में हेडमास्टर थे । बाद में वे डीप्टी कलेक्टर बने । यहाँ उनका जीवन वैभव में बीता । चाचाजी स्वयं व्रज भाषा में कविताएँ लिखते थे । परिणामतः नरेश के मानस पर कवि संस्कार हुए । नरेश छठीं कक्षा तक चाचा के साथ रहे । उसके बाद वे नरसिंहगढ़ चले गए और वहीं पर दसवीं तक पढ़ाई की । इण्टर पास होने पर जब पिताजी से मुलाकात हुई तो उन्होंने एक बढ़िया कलम पुरस्कार स्वरूप दी और वे आगे की पढ़ाई के लिए काशी आ गए । काशी में उन्हें बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के डॉ. योगेन्द्रनाथ मिश्र ने दाखिला कराने में मदद की और दो महीने अपने घर पर रखा । वे बिर्ला होस्टेल में रहे । पिताजी हर माह बीस रुपए भेजते थे । वे अपने पिताजी के बारे में लिखते हैं - ''वे प्रसंगत (वैरागी) अवश्य थे परंतु रूखे नहीं । उनसे जब भी मिलना होता एक अजीब, निःसंग, आत्मीय-वत्सल भाव मुझे मिलता ।''

अध्ययन करते-करते उन्होंने केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून में सेकेण्ड लेफ्टिनेंट का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया ।

स्नातक कक्षा में उनके अध्ययन के विषय थे - राजनीति विज्ञान, प्राचीन इतिहास और हिंदी साहित्य । हिंदी में उन्होंने एम.ए. किया । नंददुलारे वाजपेयी के मार्गदर्शन में पीएच.डी. करने का कार्य प्रारंभ किया, पर वाजपेयी ने जब बनारस छोड़ दिया तो उनका यह कार्य पूर्ण नहीं हुआ । 1947 में उन्होंने बनारस छोड़ दिया । काशी के विद्यार्थी जीवन के संदर्भ में वे लिखते हैं - ''काशी सदा एक नारियल वृक्ष जैसी लगी, ऊपर से कठोर, भीतर से जलयुक्त, लेकिन जिसका मूल प्रयोजन पूजा का ही रहा ।''

काशी से घर जाना था पर नरेश मेहता के पास किराये के पैसे नहीं थे । माँगना स्वाभिमान के खिलाफ था, इसलिए उन्होंने बनारस की कुंज गली में अमीर व्यापारियों को अपनी कविताएँ सुनाई और चालीस रुपए इनाम के रूप में पाए । इस तरह घर जाने के लिए पैसों का प्रबंध किया । कुछ दिनों आकाशवाणी में नौकरी की । 1957 में नरेश मेहता का

विवाह हुआ ।

उनके कविता संकलन हैं –

बन पारखी सुनो, बोलने दो चीड़ को, अरण्या, उत्सवा, तुम मेरा मौन हो, पिछले दिनों नंगे पैरों, देखना एक दिन, आखीर समुद्र से तात्पर्य। इनके खण्डकाव्य हैं – संशय की एक रात्र, महाप्रस्थान, प्रवाद पर्व, शबरी और प्रार्थना पुरुष ।

'प्रार्थना पुरुष' महात्मा गाँधी पर आधारित है । उनके मत से गांधी भारतीयता का श्रेष्ठतम स्वरूप है । अन्य खण्डकाव्य रामायण और महाभारत के कथाप्रसंगों पर आधारित हैं । इनका लक्ष्य रहा है – भारतीयता, मानवता को अपने काव्य द्वारा प्रकट करना । नरेश मेहता को 1992 में 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ । 22 नवंबर 2000 को उनका स्वर्गवास हुआ । अरण्या नामक रचना पर उन्हें 1988 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था ।

नरेश मेहता दूसरे सप्तक के मुख्य कवि हैं । इनकी कविता में परंपरा और आधुनिकता का समन्वय दृष्टिगोचर होता है । वे छायावादोत्तर काव्य के विशिष्ट कवि है । कुल मिला कर नरेश मेहता मानवमूल्यों के सजग प्रहरी है । पूर्ण समर्पण भाव से उन्होंने मानवता का पक्ष लिया है । वे स्पष्टवादी कवि है । इस कारण न तो वे परंपराओं के अंध पोषक हैं, न आधुनिकता–नवीनता के अंध समर्थक ही । इसलिए वे गोस्वामी तुलसीदास की तरह समन्वय और सामंजस्य के कवि है ।

1.2 विषय विवरण

क) खण्डकाव्य – रूपविधान

रस, भाव के प्रभाव को उत्पन्न करने वाला साहित्य कहलाता है । साहित्य दो रूपों में प्रकट होता है – गद्य और पद्य । पद्य छन्दोबद्ध गेय रचना होती है, जिसे काव्य कहते हैं । कथ्य के आधार पर साहित्य के भेद हैं – प्रबंध और मुक्तक । प्रबंध में सभी पद या सर्ग एक–दूसरे से जूडे होते हैं । ये क्रमशः पढ़े जाने पर ही संपूर्ण आशय व्यक्त कर सकते हैं । स्वतंत्र रूप से आशय व्यक्त करने में और संपूर्ण रस व्यक्त करने में असमर्थ होते हैं ।

प्रबंध काव्य का ही एक प्रकार है खण्डकाव्य । आचार्य विश्वनाथ ने अपने ग्रंथ 'साहित्य दर्पण' में लिखा है –

''खण्डकाव्य भवेत् काव्यस्मैकदेशानुसारि च ।''

अर्थात् खण्डकाव्य में कथानक जीवन के एक अंश को लिए हुए होता है । विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने ढंग से खण्डकाव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है – ''महाकाव्य के ढंग पर ही जिस काव्य की रचना होती है, पर जिसमें पूर्ण जीवन ग्रहण न करके खण्ड जीवन ही ग्रहण किया जाता है, उसे खण्डकाव्य कहते हैं । यह खण्ड जीवन इस प्रकार काव्य में व्यक्त किया जाता है कि जिससे वह रचना के रूप में स्वतःपूर्ण प्रतीत होती है ।''

खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध कथाकाव्य होता है जिसके कथानक में अप्रासंगिक–

गौण कथाएँ नहीं होतीं । खण्डकाव्य का आकार छोटा होता है । खण्डकाव्य के कथानक में संगठन और कसाव (कॉम्पॅक्ट) होता है । इसके वर्णन में विस्तार नहीं होता । भावप्रवणता और तीव्र अनुभूति के कारण खण्डकाव्य रोचक और आकर्षक होता है । खण्डकाव्य का कथानक पौराणिक, ऐतिहासिक अथवा कल्पित हो सकता है । पौराणिक और ऐतिहासिक कथानक ही खण्डकाव्य के प्रायः कथ्य होते हैं ।

खण्डकाव्य का बाह्य अंग महाकाव्य की तरह हो सकता है, सर्गबद्धता होती है, पर महाकाव्य की तरह कथानक प्रस्तुति में सर्गबद्धता अनिवार्य नहीं होती । सर्गों की संख्या भी यहाँ महाकाव्य की तरह निश्चित तथा निर्धारित नहीं होती ।

खण्डकाव्य के प्रमुख लक्षण हैं –

* प्रभावान्विति – खण्डकाव्य में एक ही प्रभावान्विति होती है । अतः उसमें कथानक को समुचित संगठित रखना पड़ता है ।

* **निर्बाध वर्णन –** आकार में लघु होने के कारण खण्ड-काव्य अपने लक्ष्य की ओर तीव्रता से बढ़ता है । इसलिए उसमें निर्बाध वर्णन प्रवाह आवश्यक है ।

* **अवान्तर घटनाओं एवं कथाओं का परित्याग** – खण्डकाव्य में कवि कथा-क्रम के तीव्र विकास पर ही ध्यान रखता है । उसमें वह इधर-उधर की घटनाओं तथा प्रासंगिक कथाओं का सर्वथा परित्याग कर देता है ।

* **उदात्त चरित्रों का चित्रण –** खण्डकाव्य में पात्रों की संख्या सीमित होती है, किंतु जो भी चरित्र उसमें उभरते हैं, वे संपूर्ण रूप में उदात्त प्रभाव छोड़ते हैं ।

* **महत् लक्ष्य की प्राप्ति –** खण्डकाव्य का लक्ष्य किसी सामाजिक उच्च आदर्श की स्थापना करना होता है । बिना आदर्श के कोई भी काव्य पूर्णता को प्राप्त नहीं होता ।

उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर हिंदी के प्रमुख खण्डकाव्य इस प्रकार हैं-जयद्रथ वध, पंचवटी, कुरुक्षेत्र, अंधायुग, रश्मिरथी , हिडिम्बा, जयभारत, कौंतेय कथा, उत्तर जय, द्रौपदी, महाप्रस्थान, संशय की एक रात, प्रवाद पर्व, प्रार्थना पुरुष, शबरी आदि ।

काव्यशास्त्रीय दृष्टि से खण्डकाव्य में कथावस्तु, पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण, प्रकृति चित्रण, रस योजना, सर्गबद्धता, छंद योजना, संक्षिप्तता आदि तत्त्व महाकाव्य की तरह होते हैं । जैसा कि पूर्व में हमने देखा कि खण्डकाव्य में किसी एक घटना अथवा प्रसंगविशेष को लेकर ही कथावस्तु का नियोजन होता है । खण्डकाव्य में प्रायः एक ही पात्र होता है और उस पात्र के जीवन का भी सीमित चित्रण होता है । जीवन के नानाविध रूप, विविध प्रसंगों का विस्तृत वर्णन नहीं किया जाता । कवि का पूरा ध्यान पात्र के व्यक्तित्व के सर्वाधिक अंश के उद्घाटन पर केंद्रित रहता है । यहाँ प्रकृति चित्रण के लिए भी बहुत अवकाश नहीं होता । हाँ यह जरुर है कि खण्डकाव्य का कवि पात्र के साथ प्रकृति का तादात्म्य स्थापित करा देता है, जिससे पात्र का चारित्रिक विकास सुस्पष्ट हो जाता है । रस की दृष्टि से भी खण्डकाव्य में जीवन के एक ही पक्ष का चित्रण होने के कारण एक ही रस की अभिव्यंजना होती है । अनेक रसों की योजना के लिए यहाँ अवकाश नहीं रहता ।

महाकाव्य की भाँति सर्गबद्ध होना खण्डकाव्य के लिए आवश्यक नहीं है । इसलिए खण्डकाव्य सगद्ध हो सकता है और नहीं भी हो सकता है । छंद योजना की दृष्टि से भी खण्डकाव्य की छंद-योजना भावानुकूल हो सकती है अथवा पूरा काव्य एक ही छंद में हो सकता है । सबसे महत्त्वपूर्ण बात खण्डकाव्य में संक्षिप्तता महत्त्वपूर्ण तत्त्व के रूप में आता है । लंबे-लंबे वर्णनों के लिए यहाँ कोई गुंजाइश नहीं होती । केवल मार्मिक प्रसंग ही चित्रित किए जाते हैं । साथ ही खण्डकाव्य में महाकाव्य संबंधी अनेक नियमों जैसे- मंगलाचरण, सज्जोनों की प्रशंसा, दुर्जनों की निंदा आदि का पालन आवश्यक नहीं रहता । इस तरह खण्डकाव्य प्रबंधकाव्य का ही एक भेद है । जिसे 'लघुकाव्य' कह सकते हैं । किसी भी रचना की कसौटी के लिए खण्डकाव्य के एक ही कथानक,(कथ्य), एक ही प्रमुख कथा, एक ही रस, एक ही छंद, कथानक आरंभ, विकास, चरम सीमा, निश्चित उद्देश्य की एकात्मक अन्विति आवश्यक रहती है ।

ख) कथावस्तु – 'शबरी' खण्डकाव्य

नरेश मेहता द्वारा रचित 'शबरी' खण्डकाव्य है । खण्डकाव्य प्रबंध काव्य का एक रूप है । प्रबंधकाव्य में व्यवस्थित बँधी हुई कथा होती है । इस कथा में पूर्वापर संबंधनिर्वाह होता है । कथावस्तु का सुगठित विन्यास होता है और रमणीयता, रोचकता तथा प्रभावात्मकता आदि कथानक के गुण हैं ।

कथानक दो प्रकार का होता है – आधिकारिक और प्रासंगिक । खण्डकाव्य में प्रासंगिक कथाएँ अत्यल्प होती हैं । जिस तरह छोटे-छोटे झरने मिल कर छोटी नदी तैयार होती है, उसी तरह प्रासंगिक कथाएँ मिलकर खण्डकाव्य की आधिकारिक कथा पुष्ट होती है ।

कथाप्रवाह को रोचक बनाने के लिए छोटे-छोटे आकर्षक संवाद तथा प्रसंग योजना की जाती हैं । संवादों के कारण नाटकीयता और संघर्ष का आगमन होता है ।

नरेश मेहता द्वारा रचित 'शबरी' खण्डकाव्य का कथानक उपरोक्त गुणों से युक्त है ।

'शबरी' खण्डकाव्य का आधिकारिक कथानक शबरी के जीवनचरित्र को लिए हुए है । शबरी का कथानक प्रख्यात कथानक है । शबरी के कथानक का स्त्रोत वाल्मीकि ऋषि द्वारा रचित 'रामायण', गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस', श्री सुकदेवजी द्वारा रचित 'श्रीमद्भागवत' तथा सूरदासजी द्वारा रचित 'सूरसागर' है । इन सारे कथानकों के आधार से 'शबरी' 'शबर' जाति की श्रमणा नामक एक भगवद्भक्त स्त्री मानी जाती है । जिसकी भक्ति से प्रसन्न होकर श्री रामचंद्र जी ने उनकी कुटीया में जाकर शबरी द्वारा प्रदत्त जूठे बेर खाए । यहाँ बेर मीठे हैं या नहीं इसे देखने के लिए शबरी ने स्वयं चख-चख कर मीठे-मीठे बेर रामजी को दिए और भगवान ने बड़े प्रेम से इन्हें खाया । शबरी की भक्ति की रामचंद्र जी ने प्रशंसा की ।

श्रीरामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में 'शबरी' का कथानाक आया है । यह शबर जाति की श्रमणा नामक एक स्त्री है । अपने पति के द्वारा पक्षियों की हत्या देख उसका मन अशांत हो उठता था, अतः एक रात अपना घरबार छोड़ उसने जंगल की शरण ली और

चलते-चलते वह 'पम्पासर' पहुँची । यहाँ मातंग ऋषि द्वारा शिष्यों को दिए गए उपदेश सुन उसे ज्ञान हो गया और उन्हीं के आशीर्वाद से वह परम भगवत्भक्त हो गई । शबर जाति की होने कारण अन्य ऋषियों ने इसका तथा इसके आश्रयदाता मतंग ऋषि का तिरस्कार किया । फलस्वरूप पम्पासर के जल में कीड़े पड़ गए, जल रक्त के समान हो गया था । कुछ दिनों के पश्चात् सीताजी को ढूँढ़ते हुए श्रीराम और लक्ष्मण इस भीलनी की कुटिया पर पहुँचे । उनका स्वागत करते हुए उन्हें आसन पर बिठाने के उपरांत शबरी राम-लक्ष्मण के खाने के लिए जंगली बेर ले आई, और जिन्हें चख-चख कर उन्हें देती रही । श्रीराम उन जूठे बेरों को बड़ी प्रसन्नता से खा लेते हैं । इसी समय सरोवर की दुर्दशा देख लक्ष्मण ने उसका रहस्य बतलाया और शबरी के स्पर्श से पम्पासर का जल पुनः शुद्ध हो गया । श्रीराम की अनुमति से उनके ही सामने चिता में प्रविष्ट हो वह स्वर्ग सिधारी थी ।

जाने से पहले शबरी ने राम को बताया कि आप पम्पासरोवर जाइए और वहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी तभी आपको सीताजी कहाँ है इसकी खबर मिलेगी ।

शबरी के बताए मार्ग के अनुसार राम ने आगे चल कर सुग्रीव से मैत्री की और हनुमानजी से भेंट की ।

अध्यात्म रामयण में शबरी ने अपने आपको निम्न जाति की होने के कारण राम की सेवा के लिए अयोग्य बताया ।

तुलसीदास लिखित रामायण में -

''अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह मह मैं मतिमंद अधारी ।।''

अर्थात् जो अधम से भी अधम है, स्त्रियाँ उनमें भी अत्यंत अधम हैं और उनमें भी मैं मंदबुद्धि हूँ । तब राम ने कहा -

''जाति-पाति, कुलधर्म, बड़प्पन, धन, बल, परिवार, गुण, चतुरता, स्त्री-पुरुष के भेद ईश्वरप्राप्ति में बाधक नहीं हैं । भक्ति होना अत्यंत आवश्यक है ।''

इसी कथानाक को नरेश मेहता ने 'शबरी' नामक खण्डकाव्य में पाँच सर्गों में विभाजित किया हैं । जिनके नाम हैं - त्रेता, पम्पासर, तपस्या, परीक्षा, दर्शन ।

*** त्रेता - सर्ग**

शबरी की कथा त्रेतायुग की कथा है । भारतीय कालगणना में चार युग माने गए हैं । सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग । इसी त्रेतायुग में श्रीरामचंद्र और परशुराम ये दो विष्णु के अवतार हुए । त्रेतायुग में पुण्य अधिक होता है और मनुष्य की आयु अधिक होती है । इसी त्रेतायुग की अत्यंत साधारण, आदिवासी समाज की अभिशप्त नारी की जीवनगाथा अर्थात् शबरी की कथा को आधार बनाया है । दीन-हीन नारी राम कथा से जुड़ कर पावन और पवित्र हुई ।

त्रेता सर्ग में शबरी के समय का परिवेश अंकित किया गया है । सतयुग बीत जाने पर समूचा मनुष्य समाज वन-अरण्य की ग्राम-संस्कृति को छोड़ कर नागर बन गया । वनों को

काट कर खेत-खलिहान बनाए । रास्ते बना कर कस्बे - नगर की दूरियाँ खत्म की । त्रेता युग में राजा और राज्य का निर्माण हुआ । पौराणिक मान्यता के अनुसार मनु और सतरूपा के दोनों बेटे प्रियव्रत और उत्तानपाद त्रेतायुग में ही हुए जो धरती के पहले राजा थे । तत्कालीन राज्यों का विभाजन जनपद में हुआ था । मैदानों और नदियों के किनारे संस्कृति रची गई है । विंध्य, हिमालय के मध्य क्षेत्र में यदि गंगा नदी नहीं होती, तो हमारी संस्कृति और देश का निर्माण ही नहीं होता ।

अमराई, गेहूँ, गन्ने से गंगा के क्षेत्र का मैदानी भूप्रदेश - समृद्ध हुआ था । नदी के किनारे ऋषियों के पवित्र आश्रम थे । आर्य लोगों की बस्तियाँ शहरी सभ्यता लेकर पूर्व और दक्षिण की ओर फैल रही थीं । विंध्याचल में कोल, कीरात आदिवासी बसते थे । रास्ते बीहड़ वनों से गुजरते थे । रास्ते में कुछ वन्य जातियाँ थीं, जो पशु-पक्षियों का शिकार करती थीं । लूटपाट पर अपना जीवनयापन करती थीं । समाज में वर्ण-व्यवस्था थी । जिसमें तपस्या करनेवाले ब्राह्मण समाज में सिरमौर थे । क्षत्रिय रक्षक और पालक थे । वैश्य व्यापार करते थे और श्रमिक सेवक शूद्र थे । आर्य समाज की यह वर्ण व्यवस्था जिन्हें स्वीकार्य थी वे,

''आर्यजाति के होने पर भी
कहलाए राक्षसगण''

यह राक्षस लोग यज्ञों का ध्वंस करते थे । आश्रमवासियों को तकलीफें देते, रक्त-माँस से उन्हें दूषित करते थे, तो दूसरी ओर जंगल में रहनेवाली वन्य जातियाँ थीं । भक्ष्य अभक्ष्य का कोई विवेक उनमें नहीं था । छोटे-छोटे घर बना कर वे जंगल में रहते थे । इनका जीवनयापन हिंसा, लूटपाट, खून-खराबे से होता था । यह वनचर रेखा नदी से लेकर कावेरी तक फैले थे ।

ऐसी ही एक वनजाति थी शबर, जो विंध्याचल के वनों में रहती थी । इस जाति में 'श्रमणा' नाम की एक महिला थी । जो पशु हिंसा से घृणा करती थीं । उसका घर कसाईखाने जैसा था, माँस की गंध फैली थी, खाल उधेड़ी जा रही थी, हड्डियाँ इधर-उधर फैली थी । खून के रेले जमीन और दीवारों पर फैले थे । परिवार के लोग काले शरीर पर लंगोट धारण किए हत्यारे जैसे लगते थे । श्रमणा का मन इस वातावरण में नहीं रम रहा था । अचानक उसके मन मे विचार आया, क्या श्रमणा शबरी का जीवन इसी वातावरण में बीत जाएगा? --

''कौन जन्म का पुण्य जगा
श्रमणा शबरी के मन में''
''पाप-कर्म ही लिखा हुआ है
क्या मेरे जीवन में ?''

ख़ून सने हथियारों को धोते सोचा करती कि भगवान ने कितनी सुंदर चीजें बनाई ?

वन, सरिता और धरती अनुपम हैं । उसे लगता कि न जाने किस साधु ने इस शूद्रा को श्रमणा नाम दिया, क्योंकि किसी शबर लड़की का श्रमणा नाम थोड़े ही होता है? अपने इस परिवेश के प्रति उसके मन में वितृष्णा जागृत हुई, वह निर्णय लेती है – परिवार बंधन से मुक्त होकर प्रभु आराधना करने का । जीवन में यदि कुछ करना है तो परिवार के मोह को त्यागना होगा ।

वह एक दिन पक्का निर्णय ले लेती है । आधी रात को गहरी नींद में जब बच्चे सोए थे, पति की बाँह गले में थी, चरबी का दिया जल रहा था, तब वह उठी, बाहर देखा, उत्तरी दिशा में सप्तर्षि तारे खिल गये थे, क्षितिज नीला–सा दिख रहा था, पुनः मूड़ कर उसने देखा, घर के सब लोग सोए थे, खर्राटे भर रहे थे, तब वह निकल पड़ी ।

*** पम्पासर सर्ग**

'पम्पासर' नामक सरोवर का क्षेत्र प्रारंभ होता है । पम्पासर में बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों के आश्रम हैं, जो ध्यान–तपस्या और ईश्वर–आराधना में डूबे हुए थे । इनमें से एक है मतंग ऋषि का आश्रम । मतंग ऋषि के आश्रम में उसने देखा कि ब्रह्मचारी लोग यज्ञ के लिए लकड़ियाँ चुन रहे हैं । पौधे काटे जा रहे हैं, सींचे जा रहे हैं, कोई गायों को दुह रहा है, हिरन अठखेलियाँ कर रहे थे, तोते अपनी बोली सुना रहे थे । ऋषि कन्याएँ पानी ला रही थीं, यज्ञ वेदियाँ प्रज्ज्वलित हो उठी थीं, वेदपाठ हो रहे थे, यज्ञ से सुरभित धुआँ वातावरण को महका रहा था । शबरी स्नान कर आश्रम के फाटक पर आकर बैठती है । मतंग ऋषि शांतिपाठ पूर्ण कर यज्ञशाला से बाहर निकले, तो एक स्त्री को देख वे थोड़ा–सा सकुचाए, शबरी ने उनके चरणों में शीश झुकाया । मतंग ऋषि ने पूछा, –

''पूछा ऋषि ने – तुम कौन?
कौन हो और कहाँ से आयी
देखा न तपोवन में पहले
क्या नयी–नयी ही आयी?''

यह प्रश्न सुन कर शबरी की आँखें भर आयीं । कैसे बताएँ कि वह अंत्यज है । शबर जाति की है और मैं अपना उद्देश्य क्या कहूँ कि मुझे अध्यात्म पिपासा है । इसलिए वह बोल पड़ती है, मैं यहाँ सेवा करने आई हूँ ..... मैं शबर जाति की श्यामा हूँ । मैं सबको, परिजनों को तृणवत् त्यागकर आ गई हूँ । यह सुन मतंग ऋषि के मन में शंका उत्पन्न हुई कि आश्रम–समाज में अछूत कैस रह सकता है तथा यह स्त्री है, जो घर से भाग कर आई है । इससे लोग बातें बना सकते हैं । कुछ बातें बन सकती है, बातें कही जा सकती है ? इसलिए वे कहते हैं कि यहाँ तुम्हें रखने का निर्णय आश्रमवासी ही करेंगे । यह सुन शबरी बोली कि हे आश्रमवासी, मेरे प्रभु अग्नि स्वरूपा है, जो अत्यंज को भी छू कर पवित्र कर देते हैं। आगे वह प्रश्न करती है, आत्मा की उन्नति क्या केवल उच्चवर्ग तक ही मर्यादित है? भगवान् तो सब के पिता है ।

''क्या आत्मा उन्नति केवल

है उच्च वर्ग तक ही सीमित?

प्रभु तो है सबके पिता, भला

उनका आराधन क्यों सीमित?''

यह सुनकर मतंग ऋषि चकित हो गए और उन्हें लगा यह तो कीचड़ में खिला कमल है । मतंग ऋषि को वह आगे कहती है कि आपको मेरे कारण चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है । मैं पेड़ के नीचे रह लूँगी । परंतु मुझें गायों की सेवा करने का अवसर दें और मतंग ऋषि ने वरदान देते हुए कहा –

''निश्चय होगी तू भक्तश्रेष्ठ

और मैं तुझे सौंपता गोशाला

.... प्रभु नाम जाप ही आराधन ।''

शबरी ने गोशाल में पहुँच कर धौला (गोरा), कपिला, श्यामा नामक गायों को देखा । बछडों ने भी गले की घंटी बजा कर उसके आगमन की खुशी व्यक्त की और बिना डरे शबरी धौली गाय के पास पहुँची उसके बाद कपिला को सहलाया, कृष्णा का सिर सूँघा और श्यामा के गले में बाँहें डालीं । मतंग ऋषि को विश्वास हो गया कि शबरी निश्चित ही पुण्यात्मा है । शबरी के उत्थान की राह दीनबंधु, दीनानाथ अवश्य बताएंगे और शबरी को अपना लेंगे ।

*** तपस्या**

'शबरी' खण्डकाव्य का तीसरा सर्ग 'तपस्या' है । इसमें शबरीद्वारा ने तपस्विनी का रूप धारण करने का वर्णन है । पम्पासर के एक कोने में शबरी ने अपनी कुटिया बनाई और वहाँ रहने लगी । उसे अपने कबीले के जीवन की याद आती है तो उसे अचरज होता है । उसकी सहेलियाँ पेड़ों पर चढ़ कर घोंसलों से अंडे उठा कर खा जाती थीं । कटते पशुओं की आवाजें उसके मानस में गूँजने लगती, तो उसे लगता मनुष्य सबसे अधिक निर्मम है । सबकुछ वह खा जाता है, यह कैसा भूखा–दानव की तरह है –

''निर्मम तो प्रकृति भी है

पर उससे भी निर्मम मानव

सब भोजन है इसके तो

यह कैसा भूखा दानव?''

मनुष्य के जीवन में क्या सुंदरता का कोई अर्थ नहीं है? कल–कल बहती नदी, फूलों की महक, जल में खिले कमल, मंत्रस्वरों से किया गया अवगाहन, यह फैली हरी घास– कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जो इस जीवन को सुंदरता से भरती है ।

शबरी गुरुआज्ञा का पालन करती थी । संयमित और नियंत्रित जीवन जीने का व्रत अंगिकार लिया था । ब्रह्मवेला में उठ जाती, स्नान करती, ध्यान धरती । पूजन हेतु कुश–

फूल बीनती और सूर्योदय से पूर्व गुरुजी की गोशाला में पहुँच जाती । गायों को चारा-पानी देती, दूध दुहती, गोबर से आँगन लिपती, बाद में धान धूप में देती, कूटना,पीसना सारा काम करती । प्रत्येक ब्रह्मचारी शिष्य को क्या चाहिए, क्या नहीं चाहिए यह देखती । इस तरह काम में उसका दिन व्यतीत हो जाता । शाम को ऋषि जब अपने शिष्यों को कथा सुनाते, तो दूर खड़ी रह कर उसे सुनती, अर्थ जानती, आश्रम की दीया-बत्ती होने पर घर जाती । रात में भगवान की मूर्ति के सामने तन्मय होकर कीर्तन करती, पूजन-अर्चन में ही उसकी रात बीत जाती । शबरी अपने प्रभु की सेवा में इतनी लीन थी कि दिन-भर के सभी कामों को वह प्रभु का शृंगार समझती थी । भाव-विभोर होकर प्रभु को गीत सुनाती । शीतल मंद हवा में, मेघों के गर्जन में, रात की खिली चांदनियों में शबरी अपने प्रभु को ही देखती । शबरी का लक्ष्य था -

''शबरी का तो है तू ही
आराध्य और बस तप-बल

शबरी ने अपना सर्वस्व प्रभु को समर्पित कर दिया । उसके मन में दृढ़ विश्वास है कि -

''त्रैलोक्य छोड़ तब प्रभु ही
आएँगे देने दर्शन ।''

*** परीक्षा**

शबरी खण्डकाव्य का चौथा सर्ग है - परीक्षा । परीक्षा खण्डकाव्य में शबरी के परीक्षा-प्रसंग का वर्णन है । परीक्षा एक कसौटी है जिससे व्यक्तित्त्व को आँका जाता है । शबरी का व्यक्तित्त्व, शबरी के भक्तिभाव तथा उसके अछूत होने के बावजूद सच्चाई की परीक्षा है ।

शबरी की दिनचर्या, आश्रम के लिए एक अभिभावकवत् हो गई थी । इस कारण प्रसंग में बातों-व्याख्यान में शबरी का उल्लेख सती नारी की तरह होता था । घास-फूस-सी, तुच्छवत्, दया की पात्र शबरी आज आश्रम की तुलसी बन गई । शबरी को सर्वत्र प्रभु ही नजर आने लगे । कवि लिखते हैं -

''वह हँसी धूप सरीखी
शिशु-सी व्याकुल हो जाती
कोई आहट या ध्वनि सुन
तन्मय-विभोर हो जाती ।''

शबरी के इस रूप से मतंग ऋषि परिचित थे और उसके भक्तिन होने पर मन ही मन हर्षित थे ।

बात सच है कि किसी का उत्कर्ष समाज में सहा नहीं जाता । वे अपनी दृष्टि से व्यक्ति की परीक्षा लेकर उसकी सच्चाई को जानते । इसलिए वे अपमान और बदनामी की सहायता लेते । भले ही कोई वीतरागी, संत महात्मा, ऋषि-मुनि का आश्रमवासी समाज

ही क्यों न हो, ईर्ष्या होना, द्वेष उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है । उन्हें लगता यह शबरी अभी आई है, भील जाति की है, क्या वह सती हो सकती है ? क्या हम उसकी स्तुति करें? मतंग ऋषि भले ही उसके स्तुतिपरक मंत्र ही रच डालें, परंतु सामाजिक नियमों का पालन होना आवश्यक है । क्योंकि कोई शूद्र, प्रभु आराधना करने से आर्य नहीं हो सकता । यज्ञ, याग करना, पूजन करना शूद्रों का कर्म नहीं है । अपवित्र, शूद्र शबरी 'पम्पासर' नामक पवित्र सरोवर में स्नान कर उसे अपवित्र कर रही है । मतंग ऋषि की मति भ्रष्ट हो गई है । एक शूद्र महिला को आश्रम में रखा है । इतना ही नहीं वे तो अपने प्रवचन में सावित्री, अनुसूया के समकक्ष पतिव्रता नारी के रूप में शबरी का नाम लेते हैं । यह पम्पासर ऋषि समाज को स्वीकार्य नहीं है, इसलिए मतंग ऋषि या तो ऋषि समाज को स्वीकारें या शबरी को दूसरे, पम्पासर का जल अपवित्र हो गया है । नहाना तो दूर, दर्शन करना भी घोर पाप है । ऐसा विचार कर समूचा आश्रम समाज उत्तेजित हो गया था और उन्होंने दो टूक मतंग ऋषि को कह दिया –

''स्वीकार न हो यदि उनको
सारे समाज का निर्णय,
तो बहिष्कार करने का
करना ही होगा निश्चय ।''

यह सुन कर मतंग ऋषि खिन्न हुए । उन्होंने सोचा कि यह ऋषि समाज अपने मुँह से स्वयं को श्रेष्ठ कहता है, यह दम्भ और पाखण्ड नहीं तो और क्या है, क्योंकि धर्म से बढ़ कर वर्णाश्रम की मर्यादा नहीं हो सकती । जब तक शबरी वनों में थी तब तक वह वनचर थी, शूद्रा थी, अब तो वह आश्रमवासिनी है, वैराग्य लिया है इसलिए वह देवी हो गई है । पम्पासर तीर्थ है तो तीर्थ ही रहेगा क्योंकि तीर्थ का काम शूद्रता, पाप मिटा कर पवित्र करना है, लेकिन सच्चाई तो यह है कि सभी युगों में अच्छे जन के मार्ग में ही काँटे बोए जाते हैं –

''और त्यागना पड़ा तपोवन
ऋषि को, शबरी को भी
कुटी जला, सब नष्ट किया
शूद्रा की स्मृति को ।''

आगे वन में जाकर जलाशय के पास मतंग ऋषि ने पुनः आश्रम बनाया । शबरी ने अपनी नई कुटिया बनाई । मतंग ऋषि ने शबरी को योग और दर्शन की शिक्षा दी । बेर की तरह कँटीली झाडी को मतंग ऋषि ने आम्रवृक्ष में परिणित किया । गुरुजी के साथ रह कर शबरी को ज्ञानबोध हुआ । योग, अग्नि कें साथ–साथ भक्ति योग की पवित्र गंगा–जमुना वह बनी, लेकिन शबरी को एक और परीक्षा देना शेष था । आश्रमवासियों के मन में द्वेष की आग धधक रही थी । ये दोनों निर्जन वन में क्यों रहते हैं? और आश्रमवासियों की उपेक्षा क्यों करते हैं ? उलटे शबरी की कीर्ति का तेज दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा था । यह देख–सुन मुनियों की छाती पर साँप लोटता था ।

आश्रमवासियों ने शबरी के घर का पता लगाया । एक आदमी शबरी के घर भेजा गया । खबर पाते ही अपने साथियों के साथ शबरी का पति दौड़ा आया । बरसों पहले पत्नी भाग गई थी । इस स्त्री ने हमारी जाति की नाक काटी, इसलिए वह युद्ध की तैयारी के साथ आया था । ऋषियों ने समझाया, ''धीरज से काम लो । ऋषि के यहाँ से शबरी को लाना आसान नहीं है । एक उपाय है – तुम सब आधी रात में शबरी की कुटिया पर जाना । वहाँ कोई नहीं होता । यदि ऋषि को पता चला तो शाप से तुम सब भस्म हो जाओगे । इसलिए अंधरे में ही निकल जाना, आज अमावस की रात है। तुम्हारी कुलदेवी का दिन है और तुम्हें खोई पत्नी मिल रही है ।'' शबर अपने साथियों के साथ कुटिया के निकट वन में जाकर छुप कर बैठ गया । शबरी के पति ने देखा कि खिड़की से प्रकाश आ रहा है । उत्सुकतावश खिड़की से झाँक कर देखा । प्रभु के सिंहासन की प्रतिमा के आगे दीपक जल रहा था और शबरी आखें मूँदे बैठी थी । शबरी का ऐसा पवित्र रूप और सतीत्व देख शबर जनों को लगा कि –

''कभी न देखी थी पवित्रता
ऐसी उन शबरों ने
थी शबरी ही पर अजीब थी,
देखा सब शबरों ने ।''

दरवाजा धकेल कर शबर लोग अंदर आए । वे भय से काँपने लगे क्योंकि यदि शबरी चिल्लाई तो मुश्किल होगी इसलिए तन्मय अवस्था में स्थित शबरी को पकड़ कर, मुँह बाँध कर ले चलना ही उचित है, ये सोच कर वे आगे बढ़े तो देखा कि शबरी के चारों ओर आग का घेरा जल रहा है । ऐसा लगता था मानों साँपो के घेरे में बैठी है । वे लोग आगे बढ़े तो आग ने उनको झुलसा दिया वे चिल्लाने लगे, आवाज सुन कर मतंग ऋषि आए, पूछा, इतनी रात क्यों आए? सभी लोग ऋषि के चरणों में गिर पड़े, ऋषि ने सब को क्षमा कर दिया । वे सभी चले गए । शबरी को इसका जरा भी एहसास नहीं हुआ । शबरी ने पुनः अपने आराध्य की प्रतीक्षा में लीन हो गई ।

*** दर्शन**

शबरी खण्डकाव्य का अंतिम और पाँचवा सर्ग है – दर्शन । दर्शन के दो अर्थ हैं – एक है देखना, दूसरा है प्राप्त कर लेना । शबरी राम को अर्थात् ईश्वर को प्राप्त कर लेती है ।

एक ओर तो अभी भी शबरी और मतंग ऋषि को लेकर लोगों का मत प्रतिकूल था, तो दूसरी ओर लोगों ने यह भी जाना कि रावण द्वारा सीता का अपहरण हुआ है, राम पर विपदा आई है। यज्ञों के रक्षक, आर्य लोगों के त्राता राम की पत्नी का हरण हो गया । संतोष की बात इतनी थी कि भाई लक्ष्मण साथ थे । मतंग ऋषि, जो द्रष्टा थे, उन्होंने इस प्रसंग को भगवान की लीला समझा । शबरी का उद्धार करने प्रभु राम वन में आ गए है, इस बात का उन्हें एहसास हुआ ।

शाम के समय संध्या–अर्चना होने के बाद सूर्यास्त आरती हुई । पंछियों के कलरव में दूर से शोर सुनाई दिया । जब भीड़ पास आई तो मतंग ऋषि ने आश्रम के बाहर आकर

देखा, दो युवराज मतंग ऋषि के चरणों में झुके थे । यह शाम-श्वेत की जोडी राम-लक्ष्मण ही थे । सभी लोगों को उन्होंने आश्रम के भीतर बुलाया । राम-लक्ष्मण कुशासन पर बैठे । उनकी कुशल क्षेम जानी और आने का प्रयोजन पूछा । सन्नाटा छा गया । इस शांति को तोड़ते हुए राम ने धीर-गंभीर आवाज में कहा,'' इस तपोवन में आकर मेरा जीवन सार्थक हो गया । पम्पासर पहुँचने पर मुझे मतंग ऋषि और शबरी के संबंध में आपने फैलाए हुए प्रवाद को सुन कर दुख हुआ । आपने यह भी नहीं सोचा कि इनके जैसा ऋषि संपूर्ण ब्रह्मांड में नहीं है । वे ऋषियों के पूजनीय हैं । तपस्या के बल पर उन्होंने इतनी शक्ति पा ली है कि उनके स्पर्श मात्र से सभी अपवित्रता खत्म होकर जीवन स्वर्ण-सा निर्मल हो जाता है । मैंने शबरी की सुरभित तपस्या कथा को सुना है । मेरे विचार से शबरी ने भले ही निम्न कुल में जन्म लिया हो लेकिन कर्म से शिव शक्तिरूप है । मैं उनके दर्शन के लिए आया । यह मेरा विनम्र निवेदन है -

''शबरी अंत्यज है तो क्या
वह शक्ति रूप है शूद्रा,
है तेज रूप वह केवल
शिव-शक्ति रूप हैं शूद्रा ।''

इतने में किसी के आने की आहट हुई । लोगों ने देखा कि सफेद वस्त्र में लिपटी निष्कलंक शबरी थी । दोनों आँखों से आँसू झर रहे थे । वह सीधे ऋषि के सामने आई और पूजा-प्रसाद गुरु के सामने रख दिया । प्रसाद के रूप में केवल जंगली बेर थे । उसने साँवले रामचंद्रजी को देखा और साथ ही लक्ष्मणजी को । आनंद आँसू से रामजी का मुख डूबता-सा लगता -

''यह कैसी महाकृपा थी
प्रभु अपने से थे आये,
दुर्गम अरण्य-वन-चल कर
शूद्रा शबरी-घर आये ।''

शबरी के मन में प्रश्न उपस्थित हुआ कि प्रभु को कहाँ बिठाए ? कौन सा परिधान लाए?

किन मंत्रों से उनका आवाहन करे ? क्या वे मेरे वनफूलों की माला को स्वीकार करेंगे ? क्या उनके चरणों पर मैं फूलों को वारूँ? कैसे पंखा झलाऊँ? और मैं उन्हें क्या कह कर पुकारूँ ? त्रैलोक्यपति राम के आगे क्या परोसे? ऐसा सोच कर मुक्ति की अभिलाषा से राम के चरणों में श्रद्धापूर्वक झुक गई । शबरी ने अपने अश्रु जल से राम के पग धोए ।

राम ने शबरी को उठाया और आसन देकर पास बिठाया और बोले, ''इस जन को पूजा-प्रसाद नहीं मिलेगा ?'' - है बेर जंगली ये तो, शबरी के मन में संकोच उत्पन्न हुआ क्योंकि यह जंगली बेर मीठे-कडवे हो सकते हैं । इसलिए उसने निर्णय लिया कि वह चख

कर ही उन्हें देगी । प्रभु की जीभ बन कर स्वयं चखेगी, और वह बेर चख-चख कर प्रभु को देने लगी -

''वह सहज भाव से चखती
मीठे प्रभु को दे देती,
प्रभु सहज भाव से खाते
आँखों से कृपा बरसती

लक्ष्मण चकित होकर निश्छल भाव से बेर खिलाने वाली शबरी को देख रहे थे और उन्हें विश्वास हो गया कि प्रभु राम तो भक्त के द्वारा दिया हुआ हलाहल तक पी जाएंगे । शबरी की अपूर्व भक्ति को देख कर प्रभु श्रीराम बोले, शबरी तो जगज्जननी है, उसके दर्शनमात्र से मैं पावन हो गया । इस सती की गाथा मैं पहले से ही जानता था । जन्म-चक्र से ऊपर इस पर सती की कृपा बनी हुई है । मुझे लगता है इस त्रेतायुग में शबरी से श्रेष्ठ भक्त कोई नहीं है । शबरी ने अपनी तपस्या से यंत्र, यज्ञ की सिद्धि प्राप्त कर ली है । मेरे मत से

''है अन्य कौन त्रेता में
जो श्रेष्ठ भक्त शबरी से-
हे यंत्र, यज्ञ, यह सब कुछ
सब सिद्ध इसी शबरी से ।''

प्रभु कहते - शबरी का वंदन, अभिनंदन करते हुए मैं कृतार्थ हुआ । तब शबरी ने कहा, हे प्रभु, मैं आपका क्षण भर भी वियोग नहीं सह सकती और अचानक योगाग्नि की ज्वालाएँ शबरी के शरीर से निकलने लगी । वह दिव्य तेज से संपन्न हुई । धरती की पुण्यशीला शबरी स्वर्गलोक सिधार गई । सभी लोगों ने शबरी की जयकर की, उसके परम सतीत्व को अभिवादन किया । शबरी तो कृष्णकमल की तरह है जिसमें आर्य-गंध बसती है । मतंग ऋषि को यह सब देख संतोष हुआ, क्योंकि शबरी ने उर्ध्वगामी यात्रा कर उन्नति साध्य की । शूद्रा से शक्ति बनना, शबरी के जीवन में सब कुछ संभव था ।

इस तरह शबरी के कथानक में गति और प्रभाव का संगम है ।

1.2.2 **पात्र**

खण्डकाव्य प्रबंधकाव्य का एक रूप है अर्थात् खण्डकाव्य कथानक से बंधा हुआ होता है । कथानक जिस पर घटित होता है, उन्हें पात्र कहते हैं । जीवन की कोई एक विशेष घटना-प्रसंग के द्वारा पात्रों के गुणों को प्रस्तुत किया जाता है, परंतु महाकाव्य की तरह समूचा जीवन-चरित्र नायक का प्रस्तुत न होकर जीवन की प्रभावक घटना ही प्रस्तुत होती है । महाकाव्य का अंश प्रायः खण्डकाव्य होता है । 'शबरी' नामक खण्डकाव्य श्रीरामचंद्रजी के जीवन का एक प्रसंग है जो राम के दीनानाथ व्यक्तित्त्व को प्रकट करता है ।

शबरी खण्डकाव्य में पात्र हैं - शबरी, मतंग ऋषि, शबरी का पति और प्रभु

श्रीरामचंद्रजी । परिवेश के रूप में ऋषि समाज और शबर समाज अंकित हुआ है ।

शबरी

शबरी शबर जाति की महिला है । उसका नाम 'श्रमणा' है । शबर जाति वनों में रहनेवाली, आदिम अवस्था में जीनेवाली, भीलों की एक जनजाति है । इस जाति का गुजारा शिकार कर के होता है । वे अपने भोजन में अच्छे-बुरे का खयाल नहीं करते हैं । छोटी-छोटी बस्तियाँ बना कर जंगल में रहते हैं । शबरी के घर का वर्णन कवि ने किया है कि, ''मांस की गंध फैली थी, पशुओं की खाल उधेड़ी जा रही थी, खून के रेले बह रहे थे ।'' यह हिंसा शबरी के मन में संसार के प्रति वितृष्णा भर देती है । उसके मन में खयाल आते हैं ।

''श्रमणा जैसा नाम, किन्तु
रहना तो घोर नरक में
बीत जाएगा क्या यह
सारा जीवन इसी नरक में?।''

सोच में व्याकुल शबरी निर्णय लेती है, परिवार, घर का मोह त्याग कर आगे बढ़ना होगा, तभी इस दीन-हीन, आदिम, हिंसक जीवन से छुटकारा मिलेगा और एक दिन जब सारे बच्चे, पति साए हुए थे वह घर छोड़ने का निर्णय लेती है और इस पर अमल भी करती है ।

*** पम्पासर पहुँचना**

शबरी ने घर त्यागा और वह पम्पासर पहुँची, पम्पासर में मतंग ऋषि का आश्रय था । उसने मतंग ऋषि के ज्ञान, ध्यान, तप, आराधना के बारे में सुना था । शबरी आश्रम तक पहुँची पर उसे एहसास हुआ कि एक शबर जाति की महिला आश्रम में जाकर ऋषि के दर्शन कैसे ले सकती है और वह सकुचाकर दरवाजे पर ही रुक गई । उसके मन में तत्कालीन सामाजिक वर्ण-व्यवस्था का डर था इसलिए उसके कदम वहीं रुक गए ।

*** मतंग ऋषि से मुलाकात**

शबरी ने मतंग ऋषि को सामने देखा तो चरणों में सिर नवाया । मतंग ऋषि ने उससे पूछा , तुम कौन हो, कहाँ से आई हो? ये सुनकर शबरी के मन में भय उत्पन्न हुआ कि यदि मैंने उन्हें बता दिया कि मैं निम्न वर्ण की अछूत, शबर जाति की महिला हूँ तो वे मुझे आश्रम में नहीं रखेंगे और मैं उन्हें यह भी नहीं कह सकती -

'अध्यात्म पिपासा लेकर मैं आयी हूँ ।'

वह कहने लगी - ''मैं शबर जाति की शामा हूँ । मेरी इच्छा प्रभु की सेवा करना है । मैंने समाज के बंधन एवं परिवार को तृणवत् त्याग दिया है ।'' मतंग ऋषि ने जबाब दिया, 'एक अछूत आश्रम में भला कैसे रह सकती है?' इस पर शबरी बेहिचक कहती है -

क्या आत्मा की उन्नति केवल
है उच्च वर्ग तक ही सीमित ?
प्रभु तो है सबके पिता, भला

उनका आराधन क्यों सीमित ?

यहाँ शबरी के ओजस्वी, प्राणवान, और अस्तित्ववान व्यक्तित्त्व के हमें दर्शन होते हैं । यह ओजपूर्ण वाणी सुन कर मतंग ऋषि चौंक जाते हैं । उन्हें लगता है कि यह कीचड़ का कमल है, धूल-सना हीरा है । शबरी मतंग ऋषि से गोशाला की देखभाल, सफाई का काम अपना लेती है । वे उसे गुरुमंत्र देते हैं कि 'प्रभु नाम-जप, आराधना करते रहना तुम्हें प्रभु (हरि) अवश्य मिलेंगे ।' गुरूवरदान पा कर शबरी उल्लासित और हर्षित होती है ।

*** शबरी की गोशाला सेवा**

शबरी गोशाला पहुँची, वहाँ की सभी गायों के नाम उसने जान लिए । धौला, कपिला, श्यामा गाएँ तथा बछड़ें शबरी को देखते ही गर्दन हिलाने लगे, पुकारने लगे । बछड़ों ने उछलकूद आरंभ की । ऐसा लगा इन पशुओं को कोई अपना उन्हें मिल गया हो ।

*** सेवा ही तपस्या**

शबरी ने अपनी तपस्या प्रारंभ कर दी । उसकी तपस्या, आश्रम की सेवा, गो-सेवा ही थी । कर्म करती और मुँह से निरंतर हरिनाम जपती । उसने संयमित जीवन प्रारंभ किया । ब्रह्मवेला में उठ जाती, पूजा के लिए पुष्प चुनती, नहाती, ध्यान करती, सूर्योदय से पहले ही गोशाला पहुँच जाती । गायों को चारा-पानी देती, दूध दूहती, गोबर से लिपती । आश्रम की सफाई करती, कूटना-पीसना आदि काम करती । दिन ढ़ल जाता । मतंग ऋषि का प्रवचन सुनती, आश्रम में दीप लग जाने पर अपनी कुटिया में जाती । प्रभु के सामने कीर्तन करती, बातें करती, रात कब बीत जाती पता ही नहीं चलता । आदिम शबरी तपस्विनी, भक्तिन और प्रभु समर्पिता देवी बन गई । शबरी आश्रम की अभिभावक बन गई थी । ऋषिवर उसका नाम उदाहरण स्वरूप लेने लगे । वह एक आदर्श नारी बन गई ।

* सामाजिक क्रोध से सामना

शबरी का सम्मान लोगों से देखा नहीं गया । आश्रमवासी वीतरागी होने के बावजूद उनके मन में श्रेष्ठता का भाव था । अभी-अभी आई हुई आदिवासी शबरी मतंग ऋषि का एक श्रेष्ठ उदाहरण बन गई है यह देख उनके मन में ईर्ष्या जागी । उन्हें लगा कि यह ऋषि की उच्छृंखलता है । सामाजिक मर्यादा नहीं रही तो समाज टूट-बिखर जाएगा । शबरी शूद्र होने के बावजूद पम्पासर में स्नान करती है । सावित्री, अनुसूया के समकक्ष शबरी हो गई है इसलिए ऋषि शबरी को चुने या अपना आश्रम समाज ने ऋषि को और शबरी को वहाँ से निकाल दिया और ऋषि का आश्रम जला दिया ।

शबरी ने हिम्मत नहीं हारी । उसकी तपस्या निरंतर चलती रही । मतंग ऋषि ने प्रसन्न होकर उसे योग की शिक्षा दी, दर्शन-भक्ति सिखाया । उसके व्यक्तित्त्व को एक आकार दिया । शबरी का व्यक्तित्त्व आमूलाग्र बदल गया ।

''हुई गुरु-कृपा और बनी
अब अन्नपूर्णा शबरी

प्रभु की तुलसी कण्ठी थीं
तो योग-अग्नि भी शबरी ।''

* अंतिम परीक्षा

शबरी को एक और परीक्षा देना बाकी था । आश्रमवासियों ने शबरी के पति की खोज की, उसे उकसाया । शबरी के पति को लगा कि इस स्त्री ने मेरी नाक काटी, मैं बदला लूंगा । ऋषियों ने उसकी उत्तेजना को शांत किया और सलाह दी कि शबरी की कुटिया निर्जन स्थान पर है । आधी रात में जाना, आज अमावस की रात है, उसे बाँध कर अंधेरे में चुपचाप ले जाना । मतंग ऋषि को पता नहीं चलना चाहिए, अन्यथा वे तुम्हें शाप से भस्म कर देंगे ।' शबरी का पति और उसका साथी घने अंधेरे में कुटिया तक पहुँचे, दरवाजा धकेल कर खोला, शबरी पूजा में लीन थी । आँखें मूँदी हुई थी । यही अवसर उचित है यह देख वे आगे बढ़े । अचानक शबरी के चारों ओर आग की लपटें उठीं । लोग झुलसने लगे, चिल्लाने लगे । शोरगुल सुन कर ऋषि आए । ऋषि ने पूछा, इतनी रात गए, किस दुष्ट प्रयोजन से तुम आए हो?'' शाबर लोगों ने क्षमा मांगी, वे चरणों में गिरे, ऋषि को उन्होंने सारी बात बताई । सुन कर उन्हें दुख हुआ । शबरी को और कितने कष्ट झेलने होंगे यह विचार उनके मन में आया । उन्होंने उदार हृदय से सबको क्षमा किया । इतना सब कुछ हुआ पर शबरी को इस बात का कुछ भी पता नहीं चला । शबरी का तेज और निखर आया ।

* राम रूपी लक्ष्य प्राप्त

सीता की खोज में राम घूमते-घूमते पम्पासर आए । उनके साथ लक्ष्मण भी थे । दोनों मतंग ऋषि के आश्रम में आए और ऋषि को प्रणाम किया । प्रभु ने लोगों को कहा, आपने इस तरह का प्रवाद क्यों फैलाया है? मतंग जैसा ऋषि चौदह भुवनों में नहीं है । मैंने शबरी के बारे में सब कुछ सुना है । उसकी तपस्या पर सम्पूर्ण आर्यावर्त गौरव का अनुभव कर रहा है । शबरी अंत्यज है तो क्या हुआ? वह शूद्र न होकर शक्तिरूप है । मैं तो उन्हें मिलने के लिए आया हूँ । इतने में सफेद वस्त्र पहने शबरी वहाँ आ पहुँची । प्रभु को भेंट देने के लिए जंगल से बेर बीन लाई थी । शबरी के मन में उधेडबुन मच गई कि प्रभु से मैं क्या कहूँ ? उनका आतिथ्य मैं कैसे करुँ? बेर यदि खट्टे निकले तो प्रभु का स्वाद खराब हो जाएगा इसलिए बेर को चख-चख कर राम को देती गई । राम ने उन्हें प्रेमभाव से खाया । राम ने जनता को कहा, शबरी तो जगत् माता है, मैं इनसे मिल कर कृतार्थ हुआ -

''मैं तो आया हूँ केवल
करने जयकार सती का
मैं हूँ-कृतार्थ पाकर यह
स्वागत सत्कार सती का ।''

शबरी ने प्रभु से केवल इतना ही कहा, मैं अब क्षण भर भी वियोग सह नहीं सकती और उसने योग अग्नि में अपने आपको अर्पित कर दिया ।

'शबरी' पात्र के माध्यम से कवि नरेश मेहता ने नागर अर्थात् आर्य एवं वनांचल की संस्कृति के अंतर को प्रस्तुत किया है । आदिम जाति में हिंसा की वृत्ति, सामाजिक विषमता, वर्ण व्यवस्था, वर्ण को जन्म के आधार पर श्रेष्ठ मानना आदि बातों को उद्घाटित कर सिद्ध किया है कि मनुष्य जन्म से ऊँच-नीच न होकर कर्म से आदरणीय, सम्माननीय बन जाता है । कवि यह बताते हैं कि चाहे व्यक्ति अंत्यज हो, लेकिन कर्मों से श्रेष्ठ हो सकता है । शबरी नामक मुख्य पात्र के द्वारा कवि दर्शाते हैं कि वह वर्ण, वर्ग, समाज और युग से सर्वोपरि है ।

मतंग ऋषि

'शबरी' खण्डकाव्य में शबरी के गुरु के रूप में मतंग ऋषि आते हैं । शबरी के व्यक्तित्त्व का निखार उन्होंने किया । सामाजिक अवहेलना, विद्रोह सहकर अपनी शिष्या शबरी को भगवत् ज्ञान की दीक्षा दी ।

मतंग ऋषि का परिचय ब्रह्माण्ड पुराण में मिलता है । इनका आश्रम ऋष्यमुख पर्वत के निकट था । राम और लक्ष्मण सीता की खोज करते हुए यहाँ पहुँच थे ।

एक बार बालि और दुंदभि राक्षस के बीच युद्ध हुआ और राक्षस के खून की कुछ बूँदें तपस्या में लीन मतंग ऋषि पर पड़ गई । उन्हें गुस्सा आया । उन्होंने बालि को शाप दे दिया कि ऋष्यमुख पर्वत पर पैर रखते ही वह मर जाएगा । फलस्वरूप बालि का भाई सुग्रीव उसके डर से ऋष्यमुख पर्वत पर हनुमानजी के साथ रहने लगा । रामायण के अनुसार शबरी ने श्रीरामचंद्रजी को ऋष्यमुख पर्वत पर जाकर सुग्रीव से मैत्री की बात कही जिससे सीता का पता लगाने में आसानी हो ।

शबरी को अपने सांसारिक परिवेश से वितृष्णा होती है और वह अपने उत्थान हेतु घर छोड़ने का निर्णय लेकर पम्पासर में स्थित मतंग ऋषि के आश्रय में जाती है । वहाँ दरवाजे पर खड़ी रहती है । शांति पाठ हो जाने पर मतंग ऋषि जब बाहर निकलते है तो दरवाजे पर शबरी को देख कर सकुचाते हैं । शबरी उनके चरणों में शीश झुकाती है । वे शबरी से सारी बातें जानते हैं, शबरी कहती है – ''मैं शबर जाति की शामा हूँ और प्रभु सेवा करने आई हूँ ।''

मतंग ऋषि को लगता है कि ऋषि समाज की व्यवस्था के चलते एक निम्न जाति की, घर से भागी हुई, स्त्री को आश्रमवासी भला कैसे स्वीकार करेंगे? शबरी की ओजपूर्ण वाणी से ऋषि को लगता है, कि यह कोई मामूली स्त्री नहीं हैं जो अछूत, वनचर होने पर भी प्रभुसेवा की बात कर रही है, इसलिए कहते है –

''बोले मतंग – बेटी शबरी!
यदि अंत्यज तू, तो कौन श्रेष्ठ?
तुझमें तो प्रभु ही बोल रहे
निश्चय होगी तू भक्तश्रेष्ठ ।''

ऋषि ने शबरी को गोशाला सौंपी और नामजप की दीक्षा दी । शबरी लगन से, संयमित जीवन व्यतीत करती थी कारण गुरु का आदेश और उपदेश ऐसा ही था । शबरी ने गुरु की इस आज्ञा का शब्दशः पालन किया, उस पर गुरुकृपा हुई । आश्रम के जीवन से वह तद्रूप हुई, लेकिन लोगों से शबरी का यह उत्कर्ष सहा नहीं गया । वे तरह-तरह की बातें बनाने लगे । ऋषि ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया ।

''केवल मातंग थे जो इस !
शबरी-स्वरूप से परिचित,
इस दीन-हीन श्यामा के
थे महाभाव से हर्षित ।''

मतंग ऋषि के साथ लोगों का व्यवहार बदल गया । आश्रम जीवनयापन करनेवालों को लगा कि आश्रम में शूद्रा रख कर ऋषि अनाचार कर रहे हैं, इसलिए उन्होंने मतंग ऋषि का बहिष्कार करने का निर्णय लिया तथा दोनों को निष्कासित कर दिया । इतना ही नहीं, तो ऋषि की कुटिया भी जला दी, परंतु मतंग ऋषि ने हार नहीं मानी । सरोवर के पास कुटिया बनाई, पूर्ववत् अपनी दिनचर्या जारी की और शबरी को योगभक्ति में निपुण बनाया । गुरू की कृपा के कारण शबरी प्रभु की तुलसीकण्ठी बनी । शबरी को रामजी से मिला दिया । राम ने भी उसे जगत्जननी के रूप में स्वीकार किया तथा उसका उद्धार किया ।

शबरी खण्डकाव्य में मतंग ऋषि आदर्श गुरु के रूप में उपस्थित होते हैं । वे शिष्य के पारखी हैं । शिष्य के दोष निकाल कर उसे लक्ष्य तक पहुँचाने में पूरी में सहायता करनेवाले हैं । सत्य का पक्ष अड़िगता के साथ वे लेते है, लोग प्रवाद से बिना डरे उन्होंने यह कार्य किया । इसी कारण प्रभु राम ने उन्हें चौदहभुवन में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी के रूप में सराहा है ।

श्रीराम

नरेश मेहता द्वारा रचित 'शबरी' खण्डकाव्य का कथानक रामायण का प्रासंगिक कथानक है । रामायण में अन्य साधारण पात्र अपनी प्रयुक्ति के बाद रचना के गतिशील फलक पर विलीन हो जाते हैं । राम की गाथा को भव्यता प्रदान करते हैं । लेकिन शबरी एक ऐसा पात्र है जिसकी साधना की चरम अवस्था श्रीराम है और 'श्रीराम' के लिए वह एक आदर्श सती, जगत् माता, तपस्वीनी और भक्ति की पराकाष्ठा है ।

सीताहरण के बाद श्रीराम उनकी खोज के लिए वन में भटक रहे थे । शबरी के गुरू त्रिकालदर्शी मतंग ऋषि जान गए थे कि परब्रह्म भगवान दशरथनंदन राम के रुप में मनुष्यरूप में धरती पर अवतरित हुए हैं । कैकेयी के कारण उनका वनगमन हुआ । वन में रावण द्वारा सीताजी का अपहरण हुआ और अब वे खोजते-खोजते किष्किंधा के वन में आ गए हैं । शबरी को अब अवश्य ही राम की प्राप्ति होगी ।

यह प्रसंग प्रस्तुत खण्डकाव्य के 'दर्शन' सर्ग में आया है । प्रभु राम शबरी को दर्शन देने आए हैं और शबरी को जीवन का अब सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त होगा -

''युवराज - या कि रक्षक का
ही था स्वरूप जन-मन में ।
थे अति ही आज्ञाकारी
जो भटक रहे थे वन में ।''

प्रभु राम और लक्ष्मण संध्यासमय मतंग ऋषि के आश्रम में पहुँच जाते हैं । लोगों का कोलाहल सुन ऋषि आश्रम के बाहर आते हैं । उन्हें श्याम-श्वेत की जोड़ी (राम-लक्ष्मण) दिखाई देती है । दोनों ऋषि के चरणस्पर्श करते हैं । ऋषि आशीर्वाद देकर उन्हें भीतर लाते हैं । कुशल क्षेम हो जाने के बाद राम अपनी धीर-गंभीर वाणी में कहते हैं कि मैं जब पम्पासर पहुँचा तो मैंने देखा कि ऋषिवर का आश्रम सूना था । पूछताछ की । लोगों से शबरी के संदर्भ में मिथ्या प्रवाद को सुनकर दुख हुआ । मतंग ऋषि तो स्वयं धर्मस्वरूप हैं, उनसे मर्यादा कैसी टूट सकती है ? वे तो ऐसे तपस्या-पारस व्यक्तित्त्व हैं कि स्पर्श मात्र से सोना कर देते हैं और शबरी तो उनकी सर्वश्रेष्ठ शिष्या है, भक्तिन है, शिवशक्तिरूपा है ।

अकलंक तपस्या व्रत श्वेत वसना शबरी वहाँ आती है । पूजन-अर्चन के लिए जंगली बेर लिए हुए है । राम-लक्ष्मण को देख वह गद्‌गद् हो जाती है । श्यामवर्ण श्रीराम को वह पहचान लेती है -

''वह समझ गई यह प्रभु है
आये कृतार्थ करने को, ।
है यही राम-लक्ष्मण जो
आये दर्शन देने को ।''

शबरी सोचने लगी, मेरे प्रभु ने मुझ पर महाकृपा की है । वे मेरे लिए दुर्गम अरण्य को पार कर बिना खड़ाऊ के, खुले पाँव चल कर मुझ जैसी शूद्रा के घर आए हैं । सकुचा कर वह सोचती है, प्रभु को कहाँ, कैसे बिठाए? क्या खिलाए? किन मंत्रों से प्रार्थना करें ? क्या प्रभु मेरे वनफूलों की माला को स्वीकार करेंगे ? वे तो त्रैलोक्य पति है । भला मैं क्या परोसूँ ? मन ही मन शबरी अपने प्रभु से मुक्ति माँगती है और चरणकमलों में स्थायी स्थान की आकांक्षा करती है और प्रभु के चरणों में झुक जाती है, आँसुओं से उनके चरण धोती है ।

प्रभु राम सत्वर शबरी को उठा कर आदर से आसन पर बिठाते हैं और माँगते हैं, ''क्या न मिलेगा पूजा-प्रसाद इस जन को?'' यह जंगली बेर दिख रहे हैं, यही दे दो । शबरी लजा रही थी, ये कड़वे-मीठे बेर कैस भला दूँ, इसलिए वह स्वयं इन बेरों को चख कर मीठे बेर उन्हें देती हैं जैसे कोई माँ अपने बेटे को खिलाती है, ठेठ इसी भाव से प्रभु भी उन जूठे बेरों को सहजता से खा लेते हैं । लक्ष्मण शबरी का यह प्रेम देख कर अवाक् हो जाते हैं । राम को देख कर वे चकित रह जाते हैं ।

तत्पश्चात् राम लोगों के सामने घोषित करते हैं कि ''शबरी तो जगत्‌ज्जननी है । मंत्र

और यज्ञ सब कुछ शबरी ही है । इस त्रेतायुग में शबरी से बढ़ कर अन्य कोई श्रेष्ठ भक्त नहीं है । सती का स्वागत-सत्कार पा कर मैं कृतार्थ हुआ । '' राम के इन वचनों से शबरी गद्‌गद् होकर निवदेन करती है, ''अब आपका वियोग क्षणभर भी सहा नहीं जाता'' और अपने व्यक्तित्त्व को राममय बना लेती है ।

राम शबरी की भक्ति को अर्थवत्ता प्रदान करते हैं । शबरी के स्नेह-ममता को स्वीकारते हैं । लोगों के सामने परम भक्त का आदर्श उपस्थित कर धर्म और वर्ण की झूठी मर्यादाएँ, खोखलेपन को नकारकर वास्तविकता से लोगों को परिचित कराते हैं । यहाँ पर राम शबरीमय हैं और शबरी राममय है । इसी अद्‌वैत को नरेश मेहता ने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

गौण पात्रों में शबरी के पति और उसके साथी तथा आश्रम समाज का उल्लेख किया जा सकता है ।

1.2.3 **परिवेश**

नरेश मेहता द्‌वारा रचित खण्डकाव्य 'शबरी' के कथानक का परिवेश प्रकृति है जो नायिका 'शबरी' की वनजाति से संबंधित है । वनों में निवास करनेवाली यह जाति, जिसे आदिम और वनचर कहते हैं । मतंग ऋषि का आश्रम भी वन में ही है । इसलिए प्रकृति परिवेश रूप में स्वयंमेव आ गई है । शबरी के आराध्य प्रभु राम भी वनवास में हैं । सीता को खोजते हुए वे पम्पासर नामक प्राकृतिक स्थल पर आते हैं जहाँ शबरी रहती है ।

मनुष्य के भावों का प्रकृति से निकट का रिश्ता है । प्रकृति से दूर शहरों में रहने वाले भी पुनः ताजगी प्राप्त करने के लिए प्रकृति की शरण में ही जाते हैं । प्रकृति मानव मन में भावों के उद्दीपन का काम करती है और मनुष्य के भावों की अभिव्यक्ति कविता करती है । इसलिए कविता और प्रकृति का नाता अटूट है ।

नरेश मेहताद्‌वारा किया गया प्रकृति का अंकन अतिशय समृद्‌ध है । कवि की प्रतिभा, भावुकता और मानवीकरण की अद्‌भुत क्षमता से ओत-प्रोत प्रकृति चित्र हैं ।

नरेश मेहता 'त्रेता' नामक सर्ग में महत्त्वपूर्ण बात बताते हैं कि ''विंध्य और हिमालय के मध्य यदि गंगा न होती तो, न भारत देश होता न भारतीय संस्कृति होती । भारत का उत्तरी मैदानी प्रदेश आर्यों की बस्ती था । विंध्य की पहाडियों में अर्थात् मध्य भारत में आदिवासी वन जातियाँ (कोल-कीरात) रहती थी, तो दक्षिण में द्रविड रहते थे । पूर्वी क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश है ।''

आम्र-कुंज, गेहूँ गन्नों का
उपजाऊ मैदान सुहाना,
ऋषियों के वे पावन आश्रम
नदी-घाट के तीरथ नाना ।

शबरी जब अपना घर छोड़ कर बाहर निकलती है तो उसके साथ प्रकृति ही होती

है । आकाश में लाल-रंग का मंगल और आकाशगंगा ऐसी लगती थी कि सब सोए हैं, केवल कालपुरुष जाग रहा है । मंद हवा बह रही थी , कृष्णपक्ष का अंधियारा था, पेड़ हौले-हौले हिल रहे थे । इस निर्जन परिवेश में केवल नाले का शब्द ही गूँज रहा था ।

शबरी पम्पासर पहुँचती है । 'पम्पासर' क्षेत्र साल और सागोन (सागवान) के पेड़ों से भरा है । प्रातःकाल हो गया । आँगन में हिरनों के खूर के निशान दिखाई दे रहे थे । आम की डाली पर तोते चहक रहे थे । हरसिंगार, चम्पा, कनेर, कदली, कमल खिले हुए थे । इतना मनोहारी दृश्य देखकर शबरी पुलकित हो गई -

''थी विशाल कितनी हरीतिमा,
शोभित थीं पगवाटे,
था विराट वट-वृक्ष खड़ा
फैलाए वृद्ध जटाएँ ।''

शबरी को परमात्मा का एहसास भी प्रकृति के माध्यम से ही होता है । परमात्मा का एहसास सुगंध-परिमल, मलय बया में अनुभूत होता है -

कोई तो होगा नभ में
जल में, थल में या हम में,
जो गंध समीरण बन कर
है घूम रहा कण-कण में ।

शबरी को अनुभव होता है कि प्रभु के विराट स्वरूप-सा यह नभ है। नभ से बरसनेवाली ओस बूँदें आनंद स्वरूपा हैं ।

शबरी को अपनी लघुता का बोध भी प्राकृतिक उपमानों से ही होता है, वह कहती है -

''तेरी विशाल रचना में
मैं घास-पात ही केवल''

शबरी तपस्या से निखर जाती है । उसके व्यक्तित्व में आभा चमकने लगती है । प्राकृतिक उपमानों के प्रयोग से नरेश मेहता ने लिखा है -

''नभ का पवित्र नीलापन
था उसके श्याम बरन में,
चंदन सुगंध थी उसके
उस सात्विक भोलेपन में ।''

प्रभु श्रीरामचंद्रजी मतंग ऋषि के आश्रम मे आते है । शबरी उन्हें देखती है तो उसे ऐसा लगता है -

''पर अब तो सागर खुद ही
आया था चल कर द्वारे,

थी कब की यह आकांक्षा

नदिया को सिंधु पुकारे ।''

प्रकृति शबरी के ही नहीं तो हमारे जीवन का भी अटूट हिस्सा है । सतयुग का समाज वन–अरण्य और ग्राम सभ्यता का समाज है । पौराणिक मान्यता के अनुसार सतयुग में पाप की, शोषण की, ऊँच– नीच की कोई बात ही नहीं थी, सभी पुण्यवान थे । लेकिन सत्ययुग के बाद आए त्रेता से लोगों ने नागर सभ्यता विकसित की । वन काटे गए, रास्ते बनाए गए, कस्बे, नगर बसा कर राज्य और जनपद ने जन्म लिया । सूर–असुर आर्य–अनार्य, शिष्ट–ग्रामीण का भेद बढ़ा । इससे जंगलों का विनाश और नई संस्कृति का आगमन हुआ इसलिए प्रकृति की रक्षा करना, पर्यावरण को बनाए रखना हमारा पुनीत कर्तव्य है, धर्म है, नरेश मेहता इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं ।

1.2.4 भाषा–शिल्प

कवि की सबसे बड़ी कसौटी कविता में प्रयुक्त भाषा है । भाषा अभिव्यक्ति की प्राणशक्ति है । कवि भाषा के प्रति काफी सजग और निष्ठावान होता है । कवि की भाषा में प्रेषणीयता के साथ–साथ सुंदर एवं प्रभावक क्षमता भी होती है ।

नरेश मेहता भाषा के विषय में एक रचना की भूमिका में लिखते हैं –

–– ''शब्द में निहित अर्थ और संस्कार को जब तक काव्य जागृत नहीं करता, तब तक वह भाषा अथवा शब्द की ऊपरी सतह पर ही टकराता रहेगा । .... काव्य और शब्द अर्थजन्म होने पर भी न वह शब्द है न अर्थ ।'' अर्थात् काव्य में प्रयुक्त अर्थ युक्त शब्दों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है ।

शब्दविधान को तीन भागों में बाँटा जाता है – तत्सम, तद्भव और विदेशी । 'शबरी' में इन तीनों प्रकार के शब्द मिलते हैं –

* **तत्सम शब्द :–** तत्सम शब्द संस्कृत के शब्दों को कहते हैं । शबरी खण्डकाव्य में इनकी अधिकता हैं । सर्गों के नाम तत्सम ही हैं । जैसे–त्रेता. पम्पासर, तपस्या, परीक्षा, दर्शन । इनके अलावा – अरण्य, ग्राम, ऋषि, सिंधू, संहिता, रक्षक , पक्षी, प्रभु, श्रमणा, रक्त, अर्धरात्रि, मृगशावक, दिव्य, वृक्ष, अंत्यज, संध्या, प्रायः, प्रबंध, पात्र, प्रभाव, प्राकृतजन, अंधकार, स्वरूप, प्रयोजन, आनंद, अश्रु, मंत्र, प्रसाद निवेदन, धरित्री, निश्छल, वन्दन, खग, द्वार, निष्कासित आदि. ।

* **तद्भव शब्द** :– यह संस्कृत से उत्पन्न होते हैं । जैसे – घास, घर, खेत, तीरथ,जगना, हड्डी, पगवाट, अछूत, गलघंटी, धौली, छाजन, दूध, मारग, कुटिया, वसन, धरती, सूरज, आँसू, साँप, सिंग आदि ।

* **विदेशी :–** अन्य देश की भाषाओं के शब्द, विशेषकर अरबी, फारसी के शब्द, जैसे – मामूली, खून, खुद, बूचड़खाना, कदम, आफ़त, ख़बर, निगरानी, तलक आदि ।

* **देशज :–** यह ठेठ भारतीय भाषाओं के शब्द हैं –कसबा, खलिहान, लंगोटी, घाट, घोर, सुलगना, बीनना, बिचकाना, गुपचुप, झाड, पोखर आदि ।

* **विशेषण एवं युग्म शब्द :–** रक्त–लकीरें, आत्म–हनन, कुल–कुटुंब, परिवार–मोह, तप–आराधना, जिज्ञासा–वाणी, अध्यात्म–पिपासा, पद–पद्म, पशु–शबरी, मुस्कान–कुटिलता, कपिला–तन, चंदन–गंधी, योग–अग्नि, भक्ति–योग, कुशल–क्षेम आदि ।

* **बिम्बधर्मी शब्द :–** मलमल, कम्प–कम्प, मंदार पुष्प, आम्र–कुंजन, उज्ज्वल–पद–पद्म आदि ।

इस प्रकार विविध शब्दों के प्रयोग से भाषा सुबोध, सरस, प्रभावपूर्ण बनी है ।

* **मुहावरो का प्रयोग :–** डर पर साँप लोटना, नाक कटना, सिरमौर होना, अपने में ही रहना, तृणवत् त्यागना, कीचड़ में कमल खिलना, ताक –झाँक करना आदि ।

* **अलंकार :–** अलंकारों से भाव प्रभावक होते हैं – सम्प्रेषणीय होते हैं और चित्ररूप बनते हैं । अलंकार वाणी के आभूषण हैं । 'शबरी' में शब्दालंकार और प्रभावक अर्थव्यंजना के लिए अर्थालंकारों का प्रयोग किया से गेयता निर्माण हुई है – उदा.

* **अनुप्रास :–** धनधरनी से दूर नहीं थी । (<u>न</u> की आवृत्ति)

* **लाटानुप्रासास :–** पता नहीं किस साधूने,
यह नाम दिया था <u>श्रमणा</u>
भला शबर लड़की का होता
नाम कभी भी <u>श्रमणा</u> ।

पहले 'श्रमणा' का अर्थ – केवल नाम है , दूसरे 'श्रमणा' का अर्थ है साध्वी ।

* **छेकानुप्रास :–** ऋषि के उज्ज्वल पद–पद्मों पर ।

* **उत्प्रेक्षा अलंकार :–** देखा, सम्मुख भव्य व्यक्ति था
<u>माना</u> तप ही आया।

* **प्रश्नालंकार :–** पूछा ऋषि ने – तुम कौन?
कौन हो? और कहाँ से आई

* **रूपक अलंकार :–** गिर पड़ी गुरु <u>पद–पद्मों</u> पर

* **उपमा अलंकार :–** तेरी विशाल रचना में
मैं घास–पात ही केवल ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भाषा तथा शैल्पिक उपकरण बिम्ब, मुहावरे, अलंकार के प्रयोग से शबरी काव्य गतिशील, प्रभावक, मार्मिक और सुंदर बन गया है ।

1.2.5 उद्देश्य

रामायण की पौराणिक रामकथा से जुड़ी 'शबरी' की कथा को आधार बनाया है । ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कविवर नरेश मेहता ने 'शबरी' नामक खण्डकाव्य लिखा। स्वयं कवि भूमिका

में लिखते हैं, ''शबरी खण्डकाव्य की रचना सोद्देश्य हुई है । यह कथा मुख्यतः निम्न वर्ग की एक सामान्य स्त्री की आत्मीक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की कथा है ।''

वर्ण-व्यवस्था भारतीय समाज में आज भी हावी है । इसी का एक नया रूप जातिव्यवस्था है । जातिगत ऊँच-नीचता, सामाजिक प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा मान-सम्मान का कारण है । इस जाति-व्यवस्था के कारण अछूत, निम्न, आदिम जाति के लोगों का विकास, उन्नति के प्रयास नहीं हो पाते । यह प्रश्न वाल्मीकि काल से लेकर आज तक ज्यों-का-त्यों बना है और यही आज की मुख्य समस्या है । इस समस्या का हल शबरी का आचरण है । कोई व्यक्ति किस तरह अपने स्वत्व (अस्मिता) और चेतना की रक्षा करके इस जातिगत जड़ता को दूर कर सकता है, यह दर्शाया गया है । शबरी अपने वर्ण, वर्ग, समाज, युग इन सबसे ऊपर इसी प्रक्रिया द्‌वारा प्रस्थापित हुई है ।

वर्णमुक्त होने का अर्थ व्यक्ति के व्यक्तित्व को समाप्त कर देना नहीं है । स्व का विस्तार ही ''पर'' होकर व्यक्ति समाज बनता है । यही बताना 'शबरी' खण्डकाव्य का उद्देश्य है । शबरी खण्डकाव्य हमें सीख देता है कि श्रेष्ठ कर्म ही जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का मुख्य साधन है और आज का यही मानवीय मानदण्ड है ।

'शबरी' खण्डकाव्य की रचना शबरी की उन्नति को प्रस्तुत करना है । समूचा कथानक शबरी के इर्द-गिर्द ही घूमता है । शबरी के जीवन का लक्ष्य प्रभु दर्शन और प्रभु में समर्पण है जो उसे प्राप्त होता है । समाज के बंधन, परिवार के बंधन उसके लक्ष्यप्राप्ति में बाधक नहीं होते । वह प्रखर इच्छाशक्ति से अपनी राह खुद चुन कर उस पर चलती है । उसकी इस इच्छा से प्रभावित होकर मतंग ऋषि समाजभय को त्याग कर मदद करते हैं । जहाँ चाह वहाँ राह- उक्ति को शबरी प्रत्यक्ष करती है । इसलिए यह शीर्षक सोद्देश्य, संक्षिप्त, रोचक और प्रभावक है ।

1.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* शबरी खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

.....

.....

.....

* मनुष्य का श्रेष्ठत्त्व कर्म से सिद्‌ध होता है - कथन को शबरी के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

.....

.....

.....

* शबरी खण्डकाव्य की प्रासंगिकता बताइए ।.....

.....

.....

* शबरी के प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए ।

.....

.....

.....

* 'शबरी' में नरेश मेहता ने कथावस्तु को प्रकृति के विभिन्न चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया है – सोदाहरण समझाइए ।

.....

.....

.....

* शबरी खण्ड काव्य में कवि ने किन मानवीय मूल्यों का अंकन किया है – बताइए ।

.....

.....

.....

* खण्डकाव्य के तत्त्वों के आधार पर 'शबरी' का मूल्यांकन कीजिए ।

.....

.....

.....

* 'शबरी' के शिल्पपक्ष का परिचय दीजिए ।

.....

.....

.....

* शबरी खण्डकाव्य का उद्देश्य समझाइए ।

.....

.....

.....

* मांग ऋषि का चरित्र–चित्रण प्रस्तुत कीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* 'शबरी' की भाषा शैली

.....

.....

.....

* मतंग ऋषि

.....

.....

.....

* प्रभु श्रीराम की शबरी से भेंट

.....

.....

.....

* 'शबरी' का उद्देश्य

.....

.....

.....

* 'शबरी' में वर्णित वर्णव्यवस्था

.....

.....

.....

* 'शबरी' में आधुनिकता बोध

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्य में उत्तरवाले प्रश्न

* शबरी ने अपने घर–परिवार का त्याग क्यों किया ?

.....

.....

.....

* मतंग ऋषि के आश्रम में शबरी को कौनसा काम सौंपा गया ?

.....

.....

.....

* शबरी के प्रति मतंग ऋषि के विचार क्या थे ?

.....

.....

.....

* मतंग ऋषि को कुटिया क्यों जलाई गई ?

.....

.....

.....

* मतंग ऋषि को अपना आश्रम क्यों छोड़ना पड़ा ?

.....

.....

.....

* प्रभुराम को देखकर शबरी ने क्या सोचा ?

.....

.....

.....

* प्रभु का आदर-सत्कार शबरी ने कैसे किया ?

.....

.....

.....

* 'शबरी' खण्डकाव्य के पात्रों के नाम लिखिए ?

.....

.....

.....

* 'शबरी' खण्डकाव्य के सर्गों के नाम लिखिए ?

.....

.....

.....

* प्रभु राम के दर्शन से शबरी की क्या दशा हुई ?

.....

.....

.....

* प्रभु राम ने चौदह भुवन के सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी के रूप में किसे सराहा है?

.....

.....

.....

* प्रभु राम ने शबरी के संदर्भ में क्या कहा ?

.....

.....

.....

(घ) संदर्भ स्पष्टीकरण –

* सुबह तलक जो मृगशावक था
  अब था वह मृगछाला
  कहीं मनुजता का नाम नहीं
  यह कैसा जीवन काला ?

.....

.....

.....

* हर–सिंगार, चम्पा, कनेर
  कदली, केला थे फूले,
  कमलों पर टूटे पड़ते थे
  भ्रमर सभी रस भूले ।

.....

.....

.....

* कैसे शिष्या से अब यह
  थी भक्त बन रही प्रतिदिन,
  कोई क्या गुरु हो सकता

.....

.....

.....

* अपने को श्रेष्ठ समझना
  यह दम्भ नहीं तो क्या है ?
  जिसका जीवन है सात्त्विक
  वह आर्य नहीं तो क्या है ?

.....

.....

.....

* केवल मतंग थे अविचल
संतोष बड़ा था मन में,
शूद्रा से शक्ति बनी वह
सम्भव सब कुछ जीवन में ।

.....

.....

.....

1.4 सारांश

नरेश मेहता द्वारा रचित शबरी एक खण्डकाव्य है । शबरी का प्रकाशन सन् 1979 में हुआ । शबरी खण्डकाव्य का कथानक पाँच सर्गों में विभाजित हैं । त्रेता, पम्पासर, तपस्या, परीक्षा, दर्शन ।

'शबरी' की कथा त्रेता युग की दीन-हीन, अंत्यज, शबर कुल की श्रमणा नामक नारी की कथा है । शबरी के परिजन हिंसा की आदिम वृत्ति में जीवनयापन कर रहे हैं, यह शबरी को पसंद नहीं आया और वह अहिंसक, स्वाभाविक, सहज और शाकाहारी जीवन-यापन करना चाहती है । इस उद्देश्य से गृहत्याग कर पम्पासर पहुँचती है और मतंग ऋषि का शिष्यत्व स्वीकार करती है । मतंग ऋषि तपोव्रत, ज्ञानवान, द्रष्टा ऋषि प्रवर हैं । वे शबरी के लगनशील और उर्ध्वगामी व्यक्तित्व को जान लेते हैं । ऋषि को विश्वास होता है कि यह कीचड़ में खिला कमल है । वे उसे गोशाला में सेवा का काम सौंपते हैं ।

मतंग ऋषि की आज्ञा के अनुसार शबरी अपना दैनंदिन कार्य प्रभु शृंगार समझ कर करती है । संपूर्ण जगत् उसे प्रभुमय लगता है । वह अनुशासित जीवनयापन करती है । आश्रमवासी उसके आगमन से क्रुद्ध है । केवल आराधना मात्र से कोई शूद्र आर्य नहीं हो सकता । शबरी और मतंग ऋषि को लेकर प्रवाद फैलाया जाता है । आखिरकार शबरी और ऋषि को आश्रम त्यागना पड़ता है । लोग ऋषि की कुटिया जला डालते हैं ।

मतंग ऋषि हार नहीं मानते वे शबरी को योग और दर्शन सिखा कर उसके व्यक्तित्व को निखारते हैं । शबरी के बढ़ते तेज से लोग ईर्ष्या करते हैं । शबरी के पति को बुलाकर चुपचाप शबरी को उठा कर ले जाने की सलाह देते हैं । इस सलाह के अनुसार शबरी का पति अपने दलसहित शबरी की कुटिया तक पहुँचता है । कुटिया में प्रवेश कर देखता है कि शबरी आँखें मूँदकर तपस्या कर रही है । ज्यों ही वह उसे पकड़ने आगे बढ़ता है आग जल जाती है, जिसमें वह झुलस जाता है । ऋषि से क्षमा मांग कर चला जाता है ।

प्रभु राम वहाँ लक्षमणजी के साथ सीताजी को खोजते हुए पहुँचते हैं । सबके सामने लोगों को सच्चाई बताते हैं । मतंग ऋषि सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी है और शबरी तपस्विनी है । शबरी मंत्र, यज्ञ, जगज्जननी है । शबरी के मीठे-चखे बेर खाकर राम कृतार्थ होते हैं और शबरी राममय हो जाती है ।

कथानक के माध्यम से नरेश मेहता ने वर्ण-व्यवस्था और साम्प्रदायिकता के बदले मानवता को सर्वश्रेष्ठ माना है । वैचारिक संपन्नता और आध्यात्मिक विकास से मनुष्य को श्रेष्ठता मिलती है । इससे व्यक्ति आदरणीय, पूजनीय बन जाता है ।

1.5 शब्दार्थ

सिरमौर	–	सबसे श्रेष्ठ
बूचड़खाना	–	कत्तलखाना
वितृष्णा	–	विराग
आलोक	–	प्रकाश
सागौन	–	साग वृक्ष
बटुक	–	ब्रह्मचारी
पोखर	–	तालाव (डबके)
पगवाटे	–	पगडंडी
विजन	–	एकांत, वातावरण
प्रवाद	–	बतडंग बनाना , लोक प्रचलित बात
दूभर	–	कठीन
विह्वल	–	व्याकुल
निर्मम	–	कठोर
भिनसार	–	प्रभात
दुकूल	–	वस्त्र
पातक	–	पाप
कोलाहल	–	शोर
मरुथल	–	रेगिस्तान
नागर	–	शहरी
हरसिंगार	–	(पारिजात) एक फूल
धूम, धूम	–	धुँआ
अभिराम	–	सुंदर
परिमल	–	सुगंध
समीरण	–	हवा
ब्राह्मवेल	–	रात्रि का अंतिम प्रहर

श्रमणा – साध्वी
क्षारझाड – शुष्क, सूखा पेड, निष्पर्ण वृक्ष

1.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* शबरी खण्डकाव्य की समीक्षा कीजिए ।
* 'शबरी' खण्डकाव्य से आप किस को पसंद करते हैं ? क्यों ?
* खण्डकाव्य की सूची बनाकर उनके विषयों को समझाने का प्रयत्न करें ।
* इस खण्डकाव्य की कुछ पंक्तियों का गायन कीजिए ।

1.7 अतिरीक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* पाठ्यपुस्तक : शबरी : नरेश मेहता
  लोकभारती प्रकाशन, म. गांधी मार्ग, इलाहाबाद
* नई कविता में नरेश मेहता : एक अनुशीलन – डॉ. अनिता कुमारी
  लोकवाणी संस्थान, शाहदरा. दिल्ली
* नरेश मेहता के काव्य का अनुशीलन – डॉ. नारायण वैष्णव
  चिंतन प्रकाशन, कानपुर
* नरेश मेहता की वैष्णव काव्ययात्रा – डॉ. विष्णुप्रभा शर्मा

इकाई - 2
अपठित अंश
(समानार्थी एवं विलोमार्थी शब्द, पल्लवन)

अनुक्रम

2.0 **उद्देश्य**

2.1 **प्रस्तावना**

2.2 **विषय – विवरण**

2.2.1 **क) समानार्थी एवं विलोमार्थी शब्द**

2.2.2 **ख) पल्लवन**

2.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

2.4 **सारांश**

2.5 **शब्दार्थ**

2.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

2.7 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

2.2 उद्देश्य

- समानार्थी एवं विलोमार्थी शब्दों से परिचित होंगे ।
- पल्लवन के स्वरूप को समझेंगे और पल्लवन की क्षमता को विकसित कर सकेंगे ।
- समानार्थी एवं विलोमार्थी शब्दों के समुचित प्रयोग से भाषिक क्षमता को विकसित कर सकेंगे ।

2.1 प्रस्तावना

किसी भी भाषा की शक्ति उसके शब्द-सामर्थ्य, शब्द-योजना और शब्द-व्यवस्था पर आधारित होती है । शब्द ही जीवन-संबंधी भाव, विचार, अनुभव मूल्य आदि की प्रस्तुति भाषा को समृद्ध बनाते हैं । प्राचीन ग्रंथों में शब्द का महत्त्व स्पष्ट किया है – ''शब्द ब्रह्म है, शब्द शक्ति है, शब्द जीवनदायक अमृत है ।''विश्व की समस्त भाषाओं का आधार शब्द ही है । शब्दों के प्रयोग से व्यक्ति के हाव-भाव, आचार-विचार-व्यवहार का पता चलता है, अतः शब्दों का उसके अर्थों का, पूर्ण ज्ञान वक्ता या लेखक को होना अत्यावश्यक है । शब्दों की संप्रेषण शक्ति के कारण की भाषा समृद्ध एवं संपन्न होती है ।

मनुष्य सामाजिक प्राणि है, समाज में ही भाषा का निर्माण, विकास और प्रयोग होता

है, किंतु यह भी ध्यान में रखना होगा कि समाज परिवर्तनशील है । सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक मूल्यों में होनेवाले परिवर्तन, नई–नई वस्तुओं का आविष्कार आदि कारणारें से नए–नए शब्दों का निमार्ण होता है, पुराने शब्दों के अर्थ में संस्कार या परिवर्तन होता है । यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है । वास्तव में शब्द बाह्य जगत् के प्रत्यक्ष ज्ञान से संबंधित होता है और भाषा–भाषी समुदाय की चिंतन–प्रक्रिया से भी जुड़ा रहता है । इसलिए वह समाज और संस्कृति के समय–समय पर होनेवाले परिवर्तन को व्यक्त करने में सक्षम होता है ।

किसी भी भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले या हो सकनेवाले शब्दों के समूह को उस भाषा की शब्द–संपदा या शब्द–भंडार कहते हैं । शब्द–भंडार के शब्दों की सही–सही गणना करना कठिन है । अर्थ प्रयोग और इतिहास या स्त्रोत की दृष्टि शब्दों का वर्गीकरण किया जा सकता है । हिंदी की शब्द–संपदा अत्यंत समृद्ध है । अतः शब्दों के प्रयोग एवं अर्थ का सूक्ष्म ज्ञान आवश्यक है । इस इकाई में हिंदी के समानार्थी एवं विलोमार्थी शब्दों का विवेचन किया जा रहा है ।

2.2 विषय विवरण

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । भाषायी अभिव्यक्ति का मूल आधार शब्द होते हैं । शब्द ही बातचीत या कथन में आनेवाले व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं, गुणों, क्रियाओं, भावनाओं, विचारों आदि को प्रकट करते हैं । नित्य प्रयोग में आने से शब्दों के रूपों में परिवर्तन होता है, कभी शब्द हट जाते हैं तो सभ्यता के विकास के साथ ही नए–नए शब्द सम्मिलित किए जाते हैं । कभी–कभी तो पुराने शब्दों में नए–नए अर्थ बड़ी सहजता से लाए जाते हैं इसलिए शब्दों के अर्थ की दृष्टि से एकार्थी, अनेकार्थी, पर्यायवाची या समानार्थी, विलोमार्थी या विपरीतार्थी भेद बनते हैं ।

2.2.1 क) समानार्थी एवं विलोमार्थी शब्द

* **समानार्थी शब्द –** समान अर्थवाले शब्द पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं । शब्दकोश में एक–एक शब्द के लिए अनेक समानार्थी शब्द मिल जाते हैं, किंतु वे एकार्थी नहीं होते । उनमें भाव की दृष्टि से कुछ–न–कुछ अंतर अवश्य होता है ।

उदा. – अनिल, वायु, पवन, समीर आदि समानार्थी शब्दों में सूक्ष्म भेद हमेशा ही रहता है । –

'अनिल' में कोमलता और शीतलता का अनुभव होता है ।

'वायु' में निर्मलता के साथ लचीलापन है ।

'पवन' में हवा के लहराकर बहने का भाव है ।

हवा के लिए समानार्थी शब्द अनेक हैं, किंतु भाव की दृष्टि से उनमें अंतर स्पष्ट है ।

उसी प्रकार स्त्री के लिए अबला, नारी, महिला, ललना आदि समानार्थी शब्द मिलते हैं । ''किसी अबला पर अत्याचार होते देखकर किसी का भी खून खौलना स्वाभाविक ही है '' इस वाक्य में 'अबला शब्द' के स्थान पर अन्य समानार्थी शब्दों में से

नारी या महिला या ललना शब्द रख देने से आप जिस भाव की व्यंजना करना चाहते हैं वह नहीं हो सकेगी । अतः यह बात स्पष्ट है कि शब्द समानार्थी होते हुए भी उन में अंतर है। किसी लेखक या वक्ता को अर्थ-भेद और व्यंजना-भेद का ज्ञान नहीं है तो उसकी अभिव्यक्ति अस्पष्ट या अधूरी ही रहेगी । इसलिए समानार्थी शब्दों के सूक्ष्म अंतर को समझकर ही उनका वाक्य में प्रयोग करना चाहिए । उदा. -

* **समानार्थी शब्दों का अर्थ – भेद**

अनुमति	–	किसी कार्य के लिए सहमति ।
आज्ञा	–	बड़े व्यक्ति द्वारा कुछ करने के लिए कहा जाना ।
आदेश	–	वैधानिक अधिकार से कुछ करने के लिए कहना ।
अहंकार	–	घमंड (दोष है) ।
गर्व	–	किसी वस्तु का गौरव ।
गौरव	–	घमंड या गर्व (गुण है) ।
अभिमान	–	दोष के लिए प्रचलित शब्द ।
प्रेम	–	प्रणय, स्नेह, वात्सल्य के लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द ।
स्नेह	–	छोटे के प्रति बड़े का प्रेम ।
प्रणय	–	पति-पत्नी का प्रेम ।
अस्त्र	–	जिसे फेंककर मारा जाए (जैसे-बाण, गोली, बम)
शस्त्र	–	जिसे हाथ में पकड़े हुए मारा जाए (जैसे-तलवार, छुरी, लाठी, गदा)
श्रम	–	केवल शारीरिक ।
परिश्रम	–	शारीरिक और मानसिक दोनों ।
सहायता	–	एक पक्ष सक्रिय होता है ।
सहयोग	–	दोनों पक्ष सक्रिय होते हैं ।

* **समानार्थी शब्दों के कुछ नमूने –**

अनुपम	–	अपूर्व, अनोखा, अनूठा, अतुल, अद्‌वितीय, अद्‌भुत
अमृत	–	अमिय, पीयूष, सुधा
अचल	–	पहाड़, पर्वत, शैल, गिरि, नग, भूधर
असुर	–	दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, तमीचर
अश्व	–	हय, तुरंग, घोटक, घोडा, सैंधव, तुरंग
अग्नि	–	आग, पावक, अनल, ज्वाला
आकाश	–	गगन, व्योम, अंबर, नभ, आसमान, शून्य, अंतरिक्ष, अनंत

आकांक्षा	–	इच्छा, अभिलाषा, चाह, कामना, मनोरथ, ईप्सा
इंद्र	–	सुरपति, शचीपति, पुरंदर, वासव, महेंद्र, देवराज
ईश्वर	–	प्रभु, परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, हरि, जगदीश, खुदा, दीनबंधु
कमल	–	सरोज, जलज, पंकज, अरविंद, उत्पल, पद्म, कंज, राजीव, अंबुज, शतदल, कुवलय, पुंडरिक, नलिन, सरसिज, तामरस, वारिज
कामदेव	–	मदन, मन्मथ, कंदर्प, मार, अनंग, पंचशर, मनसिज, स्मर, मनोभाव, अतनु, काम, कुसुमबाण, मीनकेतु, रतिपति, मनोज
कोमल	–	मृदु, मुलायम, मसृण, सुकुमार, नरम, अपरूप
गणेश	–	गजवदन, गजानन, विनायक, गणपति, महाकाय, विघ्नराज, एकदंत, मोदकप्रिय, गौरीसुत, गिरिनंदन, लम्बोदर
गंगा	–	भागीरथी, सुरसरी, मंदाकिनी, त्रिपथगा, देवापगा, विष्णुपदी, नंदीश्वरी, जाह्नवी, देवनदी
चंद्र	–	चंद्रमा, चांद, सुधांशु, हिमांशु, विधु, सुधाकर, सुधाधर, शशि, राकेश, निशाकर, तारापति, मयंक, सोम, निशापति, कलानिधि
जल	–	उदक, नीर, पानी, सलिल, अम्बु, तोय, जीवन, वारि, अमृत, नीर, रस, अप, पय
जमुना	–	सूर्यसुता, कालिंदी, तरणिजा, कृष्णा, रविसुता, अर्कजा
तरंग	–	उर्मि, लहर, हिल्लोल, लहरी, वीचि, कल्लोल
तालाब	–	सरोवर, पुष्कर, जलाशय, पद्माकर, तड़ाग, सर, ह्रद
देवता	–	अमर, सुर, देव, विवुध, निर्जर, आदित्य, गीर्वाण
नदी	–	सरिता, तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी, आपगा, पयस्विनी
नौका	–	नाव, डोंगी, बेडा, तरी, जलपात्र, जलयान, तरिणी, पतंग
पति	–	भर्ता, स्वामी, रमण, वल्लभ, कंत, नाथ
पत्नी	–	भार्या, दारा, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, प्राणप्रिया, वल्लभा, जोरू, वामा, वामांगी, तिय, अर्धांगिनी, सहधर्मचारिणी, बीबी, कांता
पवन	–	हवा, वायु, समीर, मरूत, वात, बयार, अनिल, समीरण, प्रभंजन, गंधवह, प्रकंपन, नभप्राण

पार्वती	–	उमा, गौरी, ईश्वरी, शिवा, भवानी, रूद्राणी, अंबिका, आर्या, दुर्गा, अपर्णा, गिरिजा, सती, शैलसुता, अभया
पृथ्वी	–	इला, भू, भूमि, धरा, वसुमती, वसुधंरा, धरती, धरणी, वसुधा, श्यामा, अवनि, क्षिति, मेदिनी, जगती, धरित्री, वीरप्रसू
फूल	–	सुमन, पुष्प, कुसुम, प्रसून
बिजली	–	चपला, विद्युत, दामिनी, तड़ित, सौदामिनी, चंचला,
भ्रमर	–	मधुप, मधुकर, मिलिंद, भृंग, भौंरा, अलि, षट्पाद
महादेव	–	शिव, शंकर, नीलकंठ, महेश्वर, चंद्रशेखर, हर, गिरिजापति, कैलाशनाथ, भूतनाथ
मेघ	–	घन, जलधर, बादल, वारिद, नीरद, पयोद, अंबुज, पयोधर, जगजीवन, धाराधर, विरागी
युद्ध	–	रण, लड़ाई, समर, संग्राम
रात	–	निशा, निशि, रजनी, रात्रि, विभावरी, त्रियामा, यामिनी, रैना, क्षणदा, तमस्विनी, शर्वरी, तमी
वसंत	–	बहार, कुसुमाकर, मधुमास, माधव, ऋतुराज
विष्णु	–	जनार्दन, लक्ष्मीपति, दामोदर, हृषिकेश, विश्वंभर, चतुर्भुज
शरीर	–	अंग, काया, तनु, देह, बदन, जिस्म, कलेवर, गात
सागर	–	समुद्र, उदधि, जलधि, पयोधि, क्षीरधि, अंबुनिधि, सिंधु, रत्नाकर,
सरस्वती	–	भारती, शारदा, ईश्वरी, श्री, वीणापाणि, वागीशा, वागीश्वरी, ब्राह्मी
सर्प	–	नाग, अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, साँप, पन्नग
सिंह	–	मृगपति, हरि, पंचानन, केशरी, शेर, मृगेंद्र
सुंदर	–	मनोरम, चारु, कांत, सुषमा, मंजुल, रूचिर, सोमन
सूर्य	–	रवि, भास्कर, दिवाकर, प्रभाकर, दिनकर, दिनेश, मार्तंड, भानु, सविता, अर्क, मित्र, छायानाथ, कमलबंधु, अंशुमाली, तरणि, आदित्य
स्त्री	–	नारी, महिला, ललना, कांता, वामा, औरत, अबला, वनिता, रमणी, अंगना, कलत्र, कामिनी, प्रमदा, सुंदरी
हाथी	–	कुंजर, मतंग, गयंद, दंती, हस्ती, करि, द्विरद, वारण, कुंभी, सिंधुर, गज, नाग

* विलोमार्थी शब्द

किसी शब्द का विपरीत अर्थ बतलाने वाला शब्द विलोम या विपरीतार्थी कहलाता है । उदा. गरीब-अमीर, पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा आदि । कृष्ण कुमार गोस्वामी ने हिंदी में संरचना की दृष्टि से विलोम शब्दों के पाँच भेद माने हैं -

(1) अ, अन्, आ, नि, वि, परा, प्रति, अव, अना, ना आदि

उपसर्ग जोड़ने से बनने वाले विलोमार्थी शब्द - उदा.-

अनुलोम शब्द	-	विलोम शब्द	अनुलोम शब्द	-	विलोम शब्द
ज्ञान	-	अज्ञान	आदर	-	अनादर
सत्य	-	असत्य	आचार	-	अनाचार
धर्म	-	अधर्म	ऐश्वर्य	-	अनैश्वर्य,दरिद्र्य
स्पष्ट	-	अस्पष्ट	उचित	-	अनुचित
शुभ	-	अशुभ	उपयुक्त	-	अनुपयुक्त
लौकिक	-	अलौकिक	उपस्थित	-	अनुपस्थित
चल	-	अचल	उपकृत	-	अनुपकृत
सभ्य	-	असभ्य	आदर	-	निरादर
अर्थ	-	अनर्थ	दयालु	-	निर्दय
आर्य	-	अनार्य	चंचल	-	निश्चल
चिंतित	-	निश्चिंत	गत	-	आगत
धनी	-	निर्धन	देखा	-	अनदेखा
कपटी	-	निष्कपटी	अधिकार	-	अनधिकार
पक्षपाती	-	निष्पक्ष	अधिकृत	-	अनधिकृत
रोगी	-	निरोगी	अनुपालन	-	अननुपालन
विधि	-	निषेध	होनी	-	अनहोनी
क्रय	-	विक्रय	अपेक्षित	-	अनपेक्षित
पक्ष	-	विपक्ष	मेल	-	अनमेल
राग	-	विराग	विवाहित	-	अविवाहित
देशी	-	विदेशी	व्यक्त	-	अनभिव्यक्त, अव्यक्त
क्रिया	-	प्रतिक्रिया	चेतन	-	अवचेतन
व्यय	-	अपव्यय	अभिज्ञ	-	अनभिज्ञ
शकुन	-	अपशकुन	प्रकर्ष	-	अपकर्ष

श्वास	–	प्रश्वास	मर्द	–	नामर्द
लायक	–	नालायक	कामयाबी	–	नाकामयाबी
इन्साफ	–	नाइन्साफ	जायज	–	नाजायज
खुश	–	नाखुश	पसंद	–	नापसंद
मंजूर	–	नामंजूर	मुमकिन	–	नामुमकिन
समझ	–	नासमझ	बालिग	–	नाबालिग
पाक	–	नापाक			

(2) विरोधी उपसर्ग जोड़ने से बननेवाले विलामार्थि शब्द

आयात	–	निर्यात	उत्कृष्ट	–	निकृष्ट
अनुकूल	–	प्रतिकूल	सुगंधि	–	दुर्गंधि
उपकार	–	अपकार	सरस	–	नीरस
स्वतंत्र	–	परतंत्र	सम्मुख	–	विमुख
स्वदेश	–	विदेश	सौभाग्य	–	दुर्भाग्य
साकार	–	निराकार	साक्षर	–	निरक्षर
सपूत	–	कपूत	सच्चरित्र	–	दुश्चरित्र
सबल	–	निर्बल	सदाचारी	–	दुराचारी
स्वकीया	–	परकीया	संयोग	–	वियोग
सुरूप	–	कुरूप	सुमति	–	कुमति
सुबोध	–	दुर्बोध	सजीव	–	निर्जीव

(3) एक शब्द में प्रत्यय तो दूसरे में उपसर्ग जोड़ने से बननेवाले विलोमार्थी शब्द

धनी	–	निर्धन	ईमानदार	–	बेइमान
वफ़ादार	–	बेवफ़ा	कपटी	–	निष्कपट
हयादार	–	बेहया	स्मृति	–	विस्मृति
ऋणि	–	उऋणि			

(4) संरचना की दृष्टि से स्वतंत्र रूप से बनने वाले विलोमार्थी शब्द –

अच्छा	–	बुरा	अपना	–	पराया
अग्र	–	पश्च	अनुग्रह	–	विग्रह
अत्यधिक	–	स्वल्प	अपमान	–	सम्मान
अमृत	–	विष	अंधकार	–	प्रकाश
अनुज	–	अग्रज	अर्वाचीन	–	प्राचीन
आकाश	–	पाताल	आयात	–	निर्यात
आदान	–	प्रदान	आस्तिक	–	नास्तिक
आर्य	–	अनार्य	आरोह	–	अवरोह
आदि	–	अंत	आशा	–	निराशा

आभ्यंतर	–	बाह्य	आर्द्र	–	शुष्क
उपस्थित	–	अनुपस्थित	उदय	–	अस्त
उत्तीर्ण	–	अनुत्तीर्ण	उत्तम	–	अधम
उतार	–	चढ़ाव	उत्तर	–	दक्षिण
उदार	–	कृपण, अनुदार	उद्यमी	–	आलसी
उष्ण	–	शीत	उत्थान	–	पतन
इहलोक	–	परलोक	इहलौकिक	–	पारलौकिक
ऊँच	–	नीच	इष्ट	–	अनिष्ट
एक	–	अनेक	ऐश्वर्य	–	अनैश्वर्य, दारिद्र्य
कटु	–	मधुर	कपटी	–	निष्कपट
कड़वा	–	मीठा	कृपण	–	उदार
कृत्रिम	–	अकृत्रिम	कृश	–	स्थूल
कुटिल	–	सरल	कृतज्ञ	–	कृतघ्न
कठोर	–	कोमल	कृष्ण	–	श्वेत
खंडन	–	मंडन	गहरा	–	उथला, छिछला
गुरू	–	लघु	गुप्त	–	प्रकट
गुण	–	दोष	गमन	–	आगमन
गृहस्थ	–	संन्यासी	ग्राह्य	–	अग्राह्य
घात	–	प्रतिघात	घर	–	बाहर
चर	–	अचर	चिरंतन	–	नश्वर
चोर	–	साधु	चंचल	–	निश्चल
चपल	–	अचपल	चतुर	–	मूढ़
छलिया	–	निश्छल	जल	–	थल
जय	–	पराजय	जीवन	–	मृत्यु
जाग्रत	–	सुप्त	जागरण	–	सुषुप्ति
तटस्थ	–	पक्षपाती	तीव्र	–	मंथर
दयालु	–	निर्दय	दाता	–	सूम, भिखारी, याचक
दुर्जन	–	सज्जन	दुराचारी	–	सदाचारी
दक्षिण	–	उत्तर	धीर	–	अधीर
धर्म	–	अधर्म	ध्वंस	–	निर्माण
नवीन	–	पुरातन	नया	–	पुराना
निंदा	–	स्तुति	निंदनीय	–	अनिंद्य

नम्र	–	उद्धत	निकट	–	दूर
नगर	–	ग्राम	नैतिक	–	अनैतिक
नमकहलाल	–	नमक हराम	नूतन	–	पुरातन
परमार्थ	–	स्वार्थ	पतिव्रता	–	कुलटा
पूर्ण	–	अपूर्ण	प्रसन्न	–	अप्रसन्न
पवित्र	–	अपवित्र	प्रत्यक्ष	–	अप्रत्यक्ष
पुरस्कार	–	तिरस्कार, दंड	पूर्व	–	पश्चिम
परमार्थ	–	पौर्वत्य	प्राकृतिक	–	कृत्रिम, विकृत
फल	–	निष्फल	बुराई	–	भलाई
बंधन	–	मुक्त, मोक्ष	बलवान	–	बलहीन
भाव	–	अभाव	भूत	–	भविष्य
भद्र	–	अभद्र	भूगोल	–	खगोल
मान	–	अपमान	मलिन	–	निर्मल, स्वच्छ
मधुर	–	कटु	मौखिक	–	लिखित
मिथ्या	–	सत्य	मित्र	–	शत्रु
यश	–	अपयश	योगी	–	भोगी
योग्य	–	अयोग्य	यथार्थ	–	अयथार्थ, कल्पना
रक्षक	–	भक्षक	राजा	–	रंक
रात	–	दिन	रुग्ण	–	स्वस्थ
लाभ	–	हानि	लोभ	–	त्याग
लघु	–	गुरू, दीर्घ	लिप्त	–	अलिप्त
विधि	–	निषेध	वीर	–	कायर
विवाद	–	निर्विवाद	विश्वास	–	अविश्वास
विधवा	–	सधवा	विपुल	–	न्यून
विशाल	–	शुद्र	विरोध	–	समर्थन
विलास	–	तपस्या	व्यष्टि	–	समष्टि
शुभ	–	लाभ	शत्रु	–	मित्र
शांति	–	अशांति, क्रांति	शासक	–	शासित
शोक	–	हर्ष	शयन	–	जागरण
श्रव्य	–	दृश्य	श्रान्त	–	अश्रान्त
सजल	–	निर्जल	संधि	–	विग्रह
सच	–	झूठ	सूखा	–	गीला
सुस्त	–	चुस्त	सुर	–	असुर
स्वार्थ	–	परमार्थ	सुरूप	–	कुरूप
साक्षर	–	निरक्षर	सजल	–	निर्जल

सुबह	–	शाम	सुबोध	–	दुर्बोध
हर्ष	–	शोक	हित	–	अहित
हँसना	–	रोना	हिंसा	–	अहिंसा
हार	–	जीत	ह्रस्व	–	दीर्घ
क्षमा	–	दंड	क्षर	–	अक्षर
क्षणिक	–	शाश्वत	हेय	–	उपादेश

(5) जोड़े के रुप में प्रयुक्त विलोम शब्द –

विशेष अर्थ देते हुए विलोम–शब्द जोड़े के रूप में प्रयुक्त होकर अपना व्यापक अर्थ व्यक्त करते हैं । उदा. –

* मनुष्य अपने विचारों का हमेशा आदान–प्रदान करता है ।
* हरेक देश में आयात–निर्यात होते रहता है ।
* देश–विदेश में घूमने से मनःस्वास्थ्य अच्छा रहता है ।
* अच्छे–बुरे लोग सभी जगह होते ही हैं ।
* संसार में सज्जन–दुर्जन लोग मिलते हैं ।

कुछ विलोम शब्द एक ही अर्थ देते हैं किंतु उसमें व्यापकता आ जाती है – उदा.–

* उससे कहाना–सुनना निरर्थक है ।
* थोड़ा–बहुत मिलने से भी उसे संतोष मिलता है ।

कुछ विलोम शब्द नया अर्थ देते हैं – उदा.

* उसने रो–हँस कर कुछ नाम तो कर दिखाया है ।
* घर में तेल की कमी के कारण उसने आकाश–पाताल एक कर दिया ।
* वह दिन–रात मेहनत करता है ।
* उसे पढ़–लिखकर ही तो कुछ बनना है ।

विलोम शब्दों को प्रयोग करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना आवश्यक है –

* **एक ही शब्दा का एक ही विलोम हो, यह कोई आवश्यक नहीं होता ।** विलोम शब्दा संदर्भानुसार बदलते रहते हैं – उदा. –

* राजा – रंक, राजा – प्रजा, राजा – रानी
* सरल – कठिन (व्यक्ति), सरल – वक्र (रेखा)

लिंगवाची शब्दों को विलोम शब्दों के अंतर्गत नहीं रखा जाता – उदा.–

* दादा	–	दादी	नाना	–	नानी
मामा	–	मामी	चाचा	–	चाची
बेटा	–	बेटी	भाई	–	बहन

(*) एक शब्द में प्रत्यय तो दूसरे में उपसर्ग जोड़ने से बननेवाले विलोमार्थी शब्द

धनी	–	निर्धन	ईमानदार	–	बेईमान

2.3.2 पल्लवन

सुगठित विचार या भाव के विस्तार को 'पल्लवन' कहा जाता है । संक्षिप्त, गूढ-गंभीर विचार, भाव, सूक्ति को विस्तार से स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है । सामान्य पाठक आसानी से इन विचारों को समझ नहीं सकता अर्थात् उस उक्ति के मूल अर्थ को ठीक तरह से समझाने के लिए सरल शब्दों में विस्तार किया जाता है । किसी विषय का पल्लवन करते समय कथात्मक प्रसंगों, उपमानों, दृष्टांतों द्वारा व्यास शैली में सूत्रवाक्य में व्यक्त भावों को अधिक बोधगम्य बनाने का प्रयास किया जाता है । इससे स्पष्ट है कि पल्लवन भी एक प्रकार की कला है ।

* **पल्लवन का स्वरूप**

अनेक विद्वानों ने पल्लवन के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है । ''एक निश्चित विषय या कथ्य से संबद्ध विचार एवं भाषा को अपने ज्ञान, रचनानुभूति और कल्पना के सहारे विस्तृत कर प्रवाहमयी उन्मुक्त शैली के माध्यम से गद्य में अभिव्यक्त रचना 'पल्लवन' है ।'' अर्थात् यह सर्जनात्मक गद्य-रचना है और निबंध से अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्पष्ट करती है, क्योंकि पल्लवन में विषय का विस्तार एक निश्चित सीमा के अंतर्गत ही किया जाता है । अतः पल्लवन के लिए कुछ बातों पर ध्यान दिया जाए -

* पल्लवन के लिए किसी सूक्ति, उक्ति, कहावत, प्रसिद्ध वाक्य दिया जाता है । उसे पढ़कर उसके पूरे भाव या विचार को समझ लेना चाहिए ।
* मूल भाव के साथ अन्य गौण भावों को भी समझने का प्रयत्न करें ।
* मूल और गौण भावों का क्रम निश्चित करके, प्रत्येक भाव को अलग-अलग अनुच्छेदों में लिखा जाए ।
* भावों के समर्थन के लिए दृष्टांत, उदाहरणों आदि का प्रयोग करें ।
* भाषा सरल एवं सुबोध हो छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा भावों को मुक्त शैली में स्पष्ट करें ।
* ध्यान रखे कि मूल लेखक के भावों-विचारों का ही विस्तार एवं विश्लेषण करना है, आलोचना नहीं।
* अनावश्यक बातों का उल्लेख न करें ।
* मूल लेखक के विचारों से सहमत न भी हो तो उसका खंडन नहीं कर सकते । केवल उक्ति या कथन को विस्तार के साथ स्पष्ट किया जाए ।
* व्यास शैली अर्थात् विस्तारपूर्ण भाषा शैली का प्रयोग किया जाए ।

* **पल्लवन की विशेषताएँ -**

पल्लवन को प्रभापूर्ण आकर्षक बनाने के लिए लेखक कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को भी ध्यान में रखता है -

* **कल्पना का सहज प्रयोग -**

कल्पना के बिना उक्ति या कथन का विवेचन नीरस बन जाता है । कल्पना के सहज,

स्वाभाविक प्रयोग से लेखक किसी भी विषय को अत्यंत आकर्षक बनाता है ।

*** मौलिकता –**

मूल विषय को नवीनता से प्रस्तुत करने की क्षमता लेखक के पास हो । पल्लवन में मौलिकता से तात्पर्य है सूत्र, वाक्य या विषय के संदर्भ की जानकारी को अपनी शैली में व्यक्त करना ।

*** विश्वसनीयता –**

पल्लवन के विषय सूत्र–विचार को स्पष्ट करते समय ध्यान रखे कि जो लिखा जा रहा है वह विश्वसनीय है या नहीं । विषय के साथ तादात्म्य रहने से स्पष्टीकरण के उदाहरणों द्‌वारा पाठकों की रूचि को आरंभ से अंत तक बनाए रखा जा सकता है ।

*** ललित–मधुर भाषा–प्रयोग –**

इससे पाठक अभिव्यक्त विचारों से आनंद प्राप्त कर सकता है । इसके लिए आवश्यक है सम–सामयिक मुहावरे, नए–नए बिंबों, प्रतीकों के प्रयोग से विषय विस्तार । इन सभी उपकरणों के द्‌वारा भाषागत सौंदर्य बढता है । भाषा में सहजता, सरसता, रोचकता, लालित्य, माधुर्य निर्माण हो सकता है ।

*** वैयक्तिक शैली का प्रयोग –**

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी–अपनी रचना शैली होती है, अतःलेखक पल्लवन में स्वतंत्र या उन्मुक्त शैली का प्रयोग करता है, किंतु भावों की शृंखला को अबाधित रखता है ।

पल्लवन की रचना–प्रक्रिया और प्रविधि का भी लेखक ध्यान रखता है । विषय–चयन, चिंतन–मनन, सामग्री–संकलन, उपलब्ध सामग्री का संयोजन करके ही लेखन कार्य संपन्न किया जाता है । पल्लवन लेखन के बाद उसे एक बार पढ़ लेना आवश्यक है जिससे पता चल सकेगा कि विषयानुसार भावों का विस्तार, समुचित उदाहरण, भाषा की वर्तनी, रचना योग्य है या नहीं । कहीं कुछ बातें छूट गई हो तो सुधार किया जा सकता है अर्थात् लिखित पल्लवन का संशोधन कर लेना आवश्यक है । पल्लवन के उदा. –

*** 'परिवर्तन ही जीवन है ।'**

परिवर्तन जीवन का अटल नियम है । यह संसार परिवर्तनशील है और प्रकृति भी । मनुष्य का जीवन इस संसार और प्रकृति से जुड़ा हुआ है । वह हमेशा एक जैसा तो नहीं रहता । उसमें नित्य परिवर्तन होता है । धरती में एक बीज बोने से कुछ ही दिनों में उससे कोंपले बाहर फूट कर आने लगती हैं । कोंपलें अंकुर में, अंकुर पत्तियों में, धीरे–धीरे तूल देखें उन्हीं पुनः 'बीज' का सिलसिला परिपवर्तन का ही द्योतक है ।

आसमान की ओर देखने से पता चलता है कि दिन में सूरज की किरणों का ताप होता है, तो रात में चाँद की शीतल किरणें । कभी काले–सफेद बादल घूमते नजर आते हैं, तो कभी बादल अदृश्य हो जाते हैं । कभी पंछियों का कलरव सुनाई देता है । कभी चारों ओर हरा–भरा तो कभी शुष्कता से खालीपन आने लगता है । सृष्टि की कोई भी वस्तु हमेशा

एक जैसी नहीं रहती, उसमें परिवर्तन होता है । सर्दी गर्मी, बारिश, पतझड, वसंत ऋतु का आगमन परिवर्तन ही है ।

समय भी एक-सा नहीं रहता, उसकी गति नदी के प्रवाह के समान निरंतर है । एक क्षण में आशा तो दूसरे क्षण में निराशा, कभी सुखद तो कभी दुःख अनुभूतियाँ । कभी अकाल, हाहाकर, तो कभी राग-रागिनियों की झंकार । शैशव, बचपन, यौवन और बुढ़ापा भी तो परिवर्तन के सोपान हैं ।

हर दिन, हर वर्ष, युग में बदलते विचार, दृष्टिकोण, रीतियाँ, नीतियाँ, कायदे-कानून सबकुछ तो बदलता रहता है । पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म की संकल्पनाएँ भी, जो कल थीं, आज बिल्कुल बदल गई हैं ।

सच बात यह है कि परिवर्तन ही विकास का आधार है । प्रगति का सोपान है । कल्पना करे कि अगर परिवर्तन न हो तो जीवन की गति, विकास रूक जाएगा । जड़-निष्प्राण से हो जाएँगे । नई उमंगों, अनुभूतियों की हलचलों के कारण ही जीवन का यह चक्र अविरत शुरू है । यदि जीवन का सही आनंद लेना है तो चलते रहना है, बदलना है, क्योंकि परिवर्तन ही जीवन की संजीवनी है ।

(साभार - प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. अंबादास देशमुख)

*** सागर के समान कामना**

नदियों को पचाते हुए सीमा के बाहर न जाना यही तो ब्राह्मण का आदर्श है ।

वर्षा के मौसम में नदिया उन्मुक्त होकर छलछलाती हुई प्रवाहित होती है और ग्रीष्म ऋतु के आने पर शांत । किंतु सागर का जल प्रत्येक ऋतु एवं समय में एक समान रहता है । इसीलिए उसे 'सम+उद्र' अर्थात् समुद्र -सदैव जलवाला कहा गया है । वर्षा में न तो उसमें जलप्लावन आता है न ग्रीष्म ऋतु में उसका जल कम होता है ।

उमड़ती अनेक नदियाँ भी अगर एक साथ उसमें प्रवेश करें तो भी सागर की गंभीरता में कोई ऱ्हास नहीं होता । सच्चे ब्राह्मण का व्यक्तित्व समुंदर के समान विशाल होता है । बड़े-बड़े प्रलोभनों के कारण भी ब्राह्मण अपनी मर्यादा का अतिक्रमण नहीं करता । जयशंकर प्रसाद लिखित 'चंद्रगुप्त' नाटक के चाणक्य नामक पात्र के व्यक्तित्व में यही आदर्श दिखाई देता है ।

चाणक्य आपनी कामनाओं को अपने वश में रखते हैं और वे सम्राट अशोक के सहायक बनते हैं। अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए वे अपनी बचपन की प्रिया-सुवासिनी के प्रणय सूत्र में बंध सकते हैं या सम्राट भी बन सकते हैं । लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया । उनका गरिमामय व्यक्तित्व तो ब्राह्मणत्व की इच्छाओं को समुद्र की तरह आत्मसात् कर लेता है । वर्षाकालिन उमड़ती हुई नदियों के जल को ग्रहण कर सागर जिस प्रकार निश्चित, स्थिर, शांत, गंभीर बन रहता है, उसी प्रकार अनेक कामनाएँ ब्राह्मणत्व कीं महिमा से पूर्ण, चाणक्य को अपने मार्ग से विचलित नहीं करती हैं । यही तो ब्राह्मणों का आदर्श है ।

* **आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है ।**

आत्मविश्वास के बलपर ही मनुष्य अनेक संकटों का सामना करने में समर्थ होता है । स्वामी विवेकानंद ने कहा कि ''सर्वप्रथम आत्मविश्वास करना सीखें'' सफलता का मिलना निश्चित है । जिनमें अटूट और अड़िग आत्मविश्वास होता है, उनके लिए कोई पथ दुर्गम नहीं होता । आत्मविश्वास के अभाव में बलवान व्यक्ति भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता । आत्मविश्वास जीवन और मन को अपूर्व शक्ति प्रदान करता है । यह एक ऐसी अनुपम और विलक्षण शक्ति है, जो हमे लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है । हमारी असफलताओं के पीछे मूल में आत्मविश्वास की कमी ही है । आत्मविश्वास के बल पर निर्बल व्यक्ति भी अकेला ही विपत्तियों का डटकर मुकाबला कर उन्हें परास्त कर सकता है और सफलता उसके गले में माला डालती है । अतः आत्माविश्वास ही सफलता की कुंजी है ।

(साभार – प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. अंबादास देशमुख)

* **पल्लवन के लिए कुछ विषय**
* कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है ।
* दरिद्रता सब पापों की जननी है ।
* निंदक नियरे राखिए ।
* सद्गुरू समान को सगा ।
* जहाँ चाह वहाँ राह ।
* राष्ट्र के लिए जो मरता है, वही जीता है ।
* मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान होता है ।
* संतोष ही सच्चा धन है ।
* सुनिए, सब की, करिए मन की ।
* नेता नहीं, नागरिक चाहिए ।
* अविद्या सबसे बड़ा रोग है ।
* आराम हराम है ।
* समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता ।
* चरित्र–गठन का स्त्रोत माता है ।
* अर्थ ही अनर्थ का कारण है ।
* जहाँ फूल है, वहाँ काँटा भी है ।
* समरथ को नहीं दोष गुसाँई ।
* जीवन एक रंगमंच है ।
* जो सोता है सो खोता है ।
* अधजल गगरी छलकत जाय ।

* मजहब नहीं सिखता आपस में बैर रखना ।
* नाच न जाने आंगन टेढ़ा ।
* होनहार बिरवान के होत चिकने पात ।
* भूखे भजन न होत गोपाला ।
* लोभ सभी पापों का मूल है ।
* गरीबी से मृत्यु भली ।
* आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है ।
* 'प्रतिभा' श्रम और अभ्यास के तटों में बंधकर बहती है ।
* क्रोध एक तरह का रोग है ।
* बुद्धिमान लोग गुरू का ऋण बहुत बड़ा मानते हैं, क्योंकि अन्य ऋण तो आसानी से लौटाए जा सकते हैं – ज्ञानदान का ऋण सबके लिए लौटाना संभव नहीं है ।
* नर करनी करे तो नर का नारायण हो जाता है ।

2.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* समानार्थी शब्दों का तात्पर्य समझाकर उदाहरण लिखिए ।

.....

.....

.....

* पाँच समानार्थी शब्दों को बताकर उनके सूक्ष्म अंतर को समझाइए ।

.....

.....

.....

* पाँच समानार्थी शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उदाहरण लिखिए ।

.....

.....

.....

* विलोमार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उदाहरण लिखिए ।

.....

.....

.....

* संरचना की दृष्टि से विलोम शब्दों के भेदों का संक्षिप्त विवरण दीजिए ।

.....

.....

.....

* 'पल्लवन' लेखन कीजिए--- * 'सब दिन होत न एक समान ।'

* नेता नहीं, नागरिक चाहिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* समानार्थी शब्दों की आवश्यकता ।

.....

.....

.....

* 'हवा' शब्द के समानार्थी शब्दों का वाक्य में प्रयोग ।

.....

.....

.....

* विलोमार्थी चार शब्दों के जोड़े और वाक्य में प्रयोग ।

.....

.....

.....

* अ, अन, वि, नि, ना उपसर्गों को जोड़ कर विलोमार्थी दो-दो शब्द ।

.....

.....

.....

* पल्लवन का स्वरूप ।

.....

.....

.....

* 'शबरी' में आधुनिकता बोध

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* समानार्थी शब्द के प्रयुक्त दूसरे शब्द को लिखिए ।

.....

.....

.....

* समानार्थी शब्दों में भाव की दृष्टि से अंतर स्पष्ट करनेवाला एक उदाहरण लिखिए ।

.....

.....

.....

* 'सूर्य' के लिए दो समानार्थी शब्द बताइए ।

.....

.....

.....

* विरोधी उपसर्ग जोड़ने से बनने वाला एक विलोमार्थी शब्द लिखिए ।

.....

.....

.....

* 'आदान- प्रदान' 'देश-विदेश' विलोम शब्द किस रूप में प्रयुक्त होते हैं ?
* पल्लवन किसे कहते है ?

.....

.....

.....

2.4 सारांश

मनुष्य अपने भावों-विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा का प्रयोग करता है । भाषा का मुख्य आधार शब्द होते हैं । शब्दों में अर्थ की अपार शक्ति होती है, अतः शब्द

और उसके अर्थ को समझ लेना अत्यावश्यक होता है । शब्दों की संप्रेषण शक्ति के कारण ही भाषा समृद्ध एवं संपन्न होती है । भाषा में प्रयुक्त शब्दों के समूह को उस भाषा की 'शब्द-संपदा' माना जाता है । नित्य प्रयोग में आने से कभी शब्दों के रूपों में तो कभी अर्थ में परिवर्तन होता है, कभी-कभी तो उसके अर्थ को समझाने के लिए पर्यायी शब्द प्रचलित होते हैं । शब्दों के अर्थ की दृष्टि से एकार्थी, समानार्थी, अनेकार्थी, विपरीतार्थी भेद बनते हैं । इन शब्दों के सूक्ष्म अर्थ को समझ लेना महत्वपूर्ण है, इससे सही शब्दों के प्रयोग से भावों, विचारों के संप्रेषण में बाधा नहीं आ सकती ।

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द एकार्थी नहीं होते उनमें भाव की दृष्टि से अंतर होता है । उदा. अनिल, वायु, पवन, समीर आदि हवा के लिए प्रयुक्त शब्दों में सूक्ष्म अंतर है । अच्छे-बुरे भावों या दोषों आदि को व्यक्त करने के लिए विलोमार्थी शब्दों का ज्ञान भी आवश्यक है ।

भाषा पर अधिकार प्राप्त कर लेने से लेखक- मनुष्य अपने भावों विचारों के बड़ी सहजता से व्यक्त कर सकता है । उक्ति, सूक्ति, गूढ़-गंभीर विचारों को भी 'पल्लवन' के द्वारा विस्तारपूर्वक बताने की क्षमता व्यक्ति में आ सकती है और वह विविध विषयों के उदाहरणों द्वारा सूक्ति, उक्ति को विस्तार पूर्ण रूप से समझाता है । अतः भाषिक अभिव्यक्ति में पल्लवन का महत्त्व है ।

2.5 शब्दार्थ

संप्रेषण	–	(समाचारादि) भेजना, पहुँचाना-एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक
विलोम	–	विपरीत, विरूद्ध
सम्मिलित	–	समाविष्ट
खून खौलना	–	क्रौध, गुरस्सा आना
व्यास शैली	–	विस्तारपूर्ण कथन
उन्मुक्त	–	स्वतंत्र
सूक्ति	–	सुंदर उक्ति, पद्य, चमत्कारपूर्ण वाक्य
उक्ति	–	कथन, वाक्य, कवित्वमय वचन
तादात्म्य	–	अभिन्नता
सिलसिला	–	क्रम, पंक्ति, शृंखला
उमड़ना	–	बढ़कर फैलना, जोश में आना
अड़िग	–	अटल, स्थिर
डटकर	–	अपनी जगह से न हटना, स्थिर रहना
परास्त करना	–	पराभूत करना, नष्ट करना, हराना

2.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* समानार्थी शब्दों के उदाहरण और उनके सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट कीजिए ।
* विलोमार्थी शब्दों को वाक्य में प्रयोग करके समझाइए ।
* 'पल्लवन ' करते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ।
* दस समानार्थी शब्दों की सूची तैयार कीजिए ।
* उपसर्ग लगाकर बीस, विलोमार्थी शब्दों का संकलन कीजिए ।
* 'परिवर्तन' ही जीवन है ---- पल्लवन कीजिए ।
* पल्लवन के विविध विषयों का संकलन कीजिए ।

2.7 संदर्भ – अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम – डॉ. अम्बादास देशमुख
  शैलजा प्रकाशन, कानपुर
* प्रयोजनमूलक हिंदी पत्रलेखन एवं टिप्पण – डॉ उर्मिला पाटील
  अतुल प्रकाशन, कानपुर
* मानक व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना – श्यामजी गोकुल वर्मा
  आर्य बुक डिपो. नई दिल्ली
* व्यावहारिक हिंदी और रचना – कृष्णकुमार गोस्वामी
  वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

इकाई – 3
पत्रलेखन –हिंदी वर्तनीःनियम

अनुक्रम

3.0 **उद्देश्य**

3.1 **प्रस्तावना**

3.2 **विषय – विवरण**

3.2.1 **ग) पत्रलेखन –**

अ) शुभकामना पत्र –

* जन्मदिन
* दीपावली
* नववर्ष

ब) आवेदन पत्र –

* नौकरी
* छुट्टी
* शुल्क में रिआयत

क) केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वर्तनी संबंधी नियमावली

3.3 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न**

3.4 **सारांश**

3.5 **शब्दार्थ**

3.6 **स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य**

3.7 **संदर्भ – अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें**

3.0 उद्देश्य

* पत्रलेखन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
* पत्रलेखन की क्षमता विकसित करेंगे ।
* हिंदी भाषा की वर्तनी का ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
* शुद्धलेखन की क्षमता विकसित करेंगे

3.1 प्रस्तावना

दूर स्थित अपने परिचितों एवं रिश्तेदारों से संबंध स्थापित करने के लिए पत्र एक

महत्त्वपूर्ण साधन है । उसीप्रकार विचार-विमर्श, विवाह, शुभ कार्य, अभिनंदन, बधाई, शुभ-संदेश, निमंत्रण-आमंत्रण, नौकरी, छुट्‌टी आदि अनेक कारणों से पत्रों के विविध प्रकार बनते हैं और उनके लेखन का स्वरूप भी भिन्न-भिन्न होता है । अतः पत्रलेखन पद्‌धति की जानकारी आवश्यक है । इस इकाई में पत्र-लेखन के विविध प्रकारों का एवं उनके लेखन-पद्‌धति का ज्ञान प्राप्त होगा ।

पत्र-लेखन एवं अन्य बातों की अभिव्यक्ति के लिए शुद्‌ध जानकारी भी होनी चाहिए । हिंदी की वर्तनी एवं उसके निर्धारित नियमों का परिचय इसी इकाई में किया जानेवाला है ।

3.2 विषय-विवरण

1. ग) पत्रलेखन

मनुष्य आपने भावों, विचारों, ज्ञान आदि का संप्रेषण करने के लिए तत्पर रहता है । अभिव्यक्ति के लिए वह भाषा का उपयोग करता है । विविध कार्य, संदेश आदि के लिए वह अनेक बार पत्र भेजता है । मित्र, रिश्तेदार, अफसर आदि को दिए गए पत्रलेखन के स्वरूप को समझना आवश्यक है । अर्थात् पत्र के विविध प्रकार बनते हैं । सामान्यतः पत्र के दो भेद हैं - ✻ सामान्य पत्र, ✻ कार्यालयीन पत्र ।

* **सामान्य पत्र -** इसके अंतर्गत अपने सगे-संबंधियों, मित्रों को लिखे गए पत्र, विवाहादि में उपस्थित होने के लिए निमंत्रण, शुभ-कार्य, अभिनंदन, बधाई आदि का अंतर्भाव होता है । इसके दो भेद हैं -

अ) घरेलू या पारिवारिक पत्र - ऐसे पत्रों के माध्यम से हम दूरस्थ सगे, संबंधियों, परिवार के सदस्यों के निकट का संबंध स्थापित करते हैं । पारिवारिक पत्र-लेखन में निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है ।

✻ कागज के दाहिनी ओर प्रेषक का पूरा पता और तारीख लिखें ।

✻ बायीं ओर हाशिया छोड़कर संबोधन लिखकर अल्पविराम दें ।

✻ संबोधन के नीचे अभिवादन-शब्द (नमस्कार, प्रणाम) लिखकर पूर्ण विराम लगाइए, उसके बाद अगली पंक्ति में विषय आरंभ करें ।

✻ अलग, अलग बातों के लिए अनुच्छेद बनाए ।

✻ अंतिम अनुच्छेद में खास लोगों के नाम का उल्लेख और उनके प्रति अभिवादनपरक शब्द लिखें ।

✻ समापन शब्दों के बाद नीचे हस्ताक्षर करें ।

✻ पत्र या लिफाफे पर प्रेषित का पूरा नाम-पता और भेजनेवाले का पता लिखें ।

ब) सामाजिक पत्र - इसके अंतर्गत निमंत्रण, बधाई, समवेदना आदि विषय आते हैं । मान्यवर, महोदय, माननीय आदि संबोधनों का प्रयोग किया जाता है । समारोप में विनीत, कृपाभिलाषी, भवदीय आदि संबोधनों का प्रयोग किया जाता है । अन्य बातें पारिवारिक

पत्रों के समान ही ध्यान में रखें ।

* **कार्यालयीन पत्र –** स्कूल, महाविद्यालय, सरकारी कार्यालयों के कर्मचारी, अधिकारी आदि से किया गया पत्राचार कार्यालयीन पत्राचार है । नौकरी में छुट्टी, वेतनवृद्धि, शुल्क में रिआयत, तबादला आदि से संबंधित विषय इसमें आते हैं । प्रत्येक विषय भिन्न होने के कारण उनके लेखन का स्वरूप एक-दूसरे से भिन्न होता है ।

इस इकाई में क्रमशः शुभकामना-बधाई, आवेदन पत्र के नमूने एवं वर्तनी के नियमों की जानकारी दी जा रही है –

अ) शुभकामना पत्र –

मनुष्य विविध प्रसंगों में सहभागी होता है, किंतु कभी-कभी कार्यव्यस्तता के कारण उत्सव, पर्व जैसे कार्यक्रमों में वह सम्मिलित नहीं हो सकता । इसलिए वह पत्र के द्वारा अपनी शुभ कामना, बधाई, अभिनंदन, निमंत्रण देता है ।

किसी कार्य का आरंभ, जन्मदिन, दीपावली, नववर्ष आदि के लिए शुभकामनापरक पत्र लिखे जाते हैं –

*** जन्म दिन के उपलक्ष्य में –**

अभिलाष सरकार,

मैसूर-मानस गंगोत्री,

मैसूर - 5

ता. 12-8-2012

बहन रंजना,

विश्वविद्यालय के अनसंधान कार्य में काफी समय तक व्यस्त रहने के कारण संपर्क नहीं कर सका । 12 अगस्त को तुम्हारा 11 वाँ जन्मदिन, किंतु मैं अब नहीं आ सकता । तुम्हारी राखी मुझे बहुत पहले मिली । अतः राखी का उपहार और जन्मदिन का उपहार तुम्हारे लिए भेज रहा हूँ । जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामना करता हूँ । 'तुम जिओ हजारो साला... ।' की कामना करता हूँ । जन्मदिन धूमधाम से मनाना मत भूलना अपनी अन्य सहेलियों के साथ मौज-मस्ती करना ।

दुबारा तुम्हारे जन्म दिन पर बधाई देता हूँ । माँ, बापू एवं आनंद को प्रणाम तथा नमस्कार ।

सिर्फ तुम्हारा भैया,

अभी

पता

रंजना मणिलाल सरकार,

हरिश्चंद्र कॉलनी, वाराणसी - 1

द्वारा

अभिलाष सरकार

मैसूर - 5

* **जन्म दिन के उपलक्ष्य में –** 2

दिपाली मिश्रा,
8 अनूप नगर, 4 लेन पार्क,
आनंदनगर, गुजरात
ता. 13-8-2012

प्रिय अरविंद,

तुम्हारे पत्र से पता चला कि तुम लंदन में आप अपना जन्मदिन 31 अगस्त को मनाने जा रहे हो । भैया सच, मुझे लगता है कि मैं भी वहाँ पहुँचकर कार्यक्रम में सम्मिलित हो जाऊँ । लेकिन यह बात अब असंभव है । तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें लाख-लाख बधाई । हम सब अपने परिवार के साथ आनंदनगर में ही तुम्हारा जन्मदिन मनाएँगे । तुम्हारे जन्मदिन पर ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपने जीवन में सफलता ही सफलता प्राप्त करो ।

बहन,
दिप्पू

पता

अरविंद सुरेश मिश्रा,

लंदन

द्वारा

दिपाली मिश्रा,

आनंदनगर, गुजरात

* **दीपावली – 1**

तिलोत्तमा सुर्यवंशी,

एकनाथ पाटील सोसायटी,
पंचवटी, नाशिक – 2
ता. 11-11-2012

प्रिय स्नेहा

नमस्कार ।

दीपावली की आपको शुभ कामना । दीपावली का शुभ अवसर आपको और परिवार के सभी सदस्यों को अनंतकाल तक सुख–संपदा दे । आप सब का जीवन हँसी–खुशी से फले–फूले । इस शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई ।

प्यारी सहेली,
तिलोत्तमा

पता

प्रति,
स्नेहा माणिक शर्मा
73, कोहली नगर, चंदीगड

द्वारा

तिलोत्तमा सुर्यवंशी
नाशिक –2

* **दीपावली – 2**

मनोज कुमार सिंह,
12, लक्ष्मीनगर,
नई दिल्ली –6
ता. 1-8-2012

प्यारे दोस्त महेश.

नमस्कार ।

दीपावली के शुभ अवसर पर शुभकामना । दीपावली के दीपकों की रोशनी–सा तुम्हारा जीवन प्रकाशमान बना रहे । साथ–साथ परिवार के सभी सदस्यों को अनंतकाल तक

सुख–संपन्नता मिलती रहे । जीवन का हर पल तुम्हारे जीवन में खुशहाली लाता रहे और आप सबका स्वास्थ भी बनाए रखे । आप सभी को दीपावली की बधाई ।

केवल तुम्हारा दोस्त,

मन्नू

पता

प्रति,

महेश कोठार

कोपरगाँव 0 4

द्वारा

मनोज कुमार सिंह

12, लक्ष्मीनगर, नई दिल्ली – 6

* **नव वर्ष के उपलक्ष्य में – 1**

कृष्णाजी पटेल,

25, पुलिस लेन नं. 02

भुसावल – 5

ता. 8-6-2011

प्रिय बंधु दुर्गेश,

नमस्कार ।

नव वर्ष पर शुभ कामना । नव वर्ष आप सब को सुख, संपन्नता और समृद्धि प्रदान करें । नव वर्ष में आपकी तरक्की हुई यह भी खुशी की बात है । ऐसी तरक्की ही व्यक्ति को, मनोबल बढाने में, उसकी गरिमा बढ़ने में सार्थक बनाती है । अतः हार्दिक अभिनंदन ।

आपका मित्र,

कन्नू

पता

प्रति,

दुर्गेश कुमार खन्ना

रेसकोर्स 2/3, राजकोट -1

द्वारा

कृष्णाजी पटेल.

25, पुलिस लेन नं. 02, भुसावल – 5

* **नव वर्ष के उपलक्ष्य में – 2**

संगीता ललवाणी,
275 पारीख मेन्शन, बाजार गेट
मुंबई – 1

प्रिय लाजो,

नमस्कार ।

गत वर्ष हम सबने मिलकर नव वर्ष का बड़ी धूमधाम से स्वागत किया था किंतु इस वर्ष में दिसंबर मैं डाक्टरी की फायनल परीक्षा की तैयारी में हूँ । अतः नववर्ष पर आप सभी को शुभ कामनाएँ दे रही हूँ । आप सभी को आनेवाला नया वर्ष सुख–संपदा, स्वास्थ प्रदान करे । नई–नई योजनाएँ बनाने की शक्ति और क्षमता को वृद्धिंगत करें ।

धन्यवाद ।

सहेली,
संगीता

पता

प्रति,
लाजवंती मोहनकुमार खन्ना
117 सेक्टर– अहमदनगर
बी–विभाग

द्वारा
संगीता ललवाणी,
पारीख मेन्शन, मुबई – 1

ब) आवेदन पत्र

किसी विद्यालय, दफ्तरों में नियुक्ति के लिए; कार्यरत स्थान से पदोन्नति, स्थानांतरण, तबादला, आवास प्राप्ति, छुट्टी, शुल्क में रिआयत के लिए प्रार्थना करते हुए आवदेन पत्र लिखे जाते हैं । विषयानुसार आवेदन–पत्र का स्वरूप बदलता है । विविध नमूनों के अध्ययन से आप यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

* **नौकरी के संबंध में – 1**

सुनिल गायकवाड,
13, पंचवटी
नाशिक – 1
ता. 16-6-2003

मा. प्राचार्य,
विद्यावर्धिनी कला वाणिज्य,
एवं विज्ञान महाविद्यालय,
साक्री रोड, धुलिया।

संदर्भ – आपका विज्ञापन दैनिक लोकसत्ता
दिनांक – 06-6-2013
विषय – व्याख्याता पद के लिए आवेदन पत्र

महोदय,

उक्त विज्ञापन के उत्तर में अपना आवेदन पत्र आपकी सेवा में विचारार्थ भेज रहा हूँ।
मेरी योग्यता और अनुभव निम्न लिखित है –

1) शिक्षा – एम.ए. (संस्कृत) पुना विश्वविद्यालय
एम.ए. (हिंदी) पुना विश्वविद्यालय
पीएच्.डी. (हिंदी) उ.म.वि. जलगाँव
2) अनुभव – नाहटा महाविद्यालय, भुसावल 03 वर्ष
मराठा महाविद्यालय, नाशिक –05 वर्ष
3) प्रकाशन – दो कहानी संग्रह, दो उपन्यास, तीन नाटक, निबंध संग्रह आदि ।

विश्वास है मेरे आवदेन पत्र पर आप सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और मुझे सेवा का मौका देंगे ।

धन्यवाद ।

भवदीय,
सुनिल गायकवाड

संलग्न है –

1) **योग्यता प्रमाण पत्र**
2) **अनुभव प्रमाण पत्र**

पता –

प्रति,

मा. प्राचार्य,

विद्यावर्धिनी कला वाणिज्य,

एवं विज्ञान महाविद्यालय,

साक्री रोड, धुलिया ।

द्वारा

सुनिल गायकवाड,

13, पंचवटी, नाशिक – 1

* **नौकरी के संबंध में** – 2

श्रीराम निकम,

13, राजा बादशाह नगर

औरंगाबाद

ता. 15-9-1999.

सेवा में,

मा. व्यवस्थापक

भारतीय ग्रंथ निकेतन,

खार, मुंबई – 57

संदर्भ – **आपका विज्ञापन संख्या** 45/1005

'जनसत्ता' दैनिक दिनांक 15 **जून** 1999.

विषय – प्रकाशन अधिकारी पद के लिए आवदेन पत्र

महोदय,

उक्त विज्ञापन के उत्तर में अपना आवेदन पत्र आपकी सेवा में विचारार्थ भेज रहा हूँ। मेरी योग्यता और अनुभव निम्नलिखित है ।

1) शिक्षा – एम.ए. (हिंदी) बनारस विश्वविद्यालय
एम.फिल. (हिंदी) बनारस विश्वविद्यालय
पीएच्.डी. (हिंदी) इलाहाबाद विश्वविद्यालय

2) अनुभव – व्यवस्थापक – प्रेम प्रकाशन – बंबई 2 वर्ष
व्यवस्थापक – विनय प्रकाशन – कानपुर 3 वर्ष

3) प्रकाशन – पाँच कहानी संग्रह, पाँच उपन्यास, दो समालोचना, तीन नाटक आदि ।

विश्वास है मेरे आवदेन पत्र पर आप सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे ।

धन्यवाद ।

भवदीय,
श्रीराम निकम
औरंगाबाद

संलग्न है –

1) **योग्यता प्रमाण पत्र**

2) **अनुभव प्रमाण पत्र**

पता –
प्रति,
मा. भारतीय ग्रंथ निकेतन.
खार, मुंबई – 57

द्वारा
श्रीराम निकम,
औरंगाबाद

* **छुट्टी के लिए** – 1

सेवा में,
उपसचिव
भारत सरकार
नई दिल्ली – 2

विषय – छुट्टी मिलने हेतु

महोदय,

निवेदन है कि मेरी सुपुत्री का विवाह समारोह मेरे 'शांतिनिकेतन' निवास स्थान पर आयोजित किया जा रहा है । इसकी तैयारी हेतु विविध सामग्री जुटानी होगी । इसलिए मुझे एक महीने की छुट्टी की आवश्यकता है । अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे 15 अप्रैल से 14 मई 2011 तक छुट्टी प्रदान करें और उक्त अवधि के दौरान मुझे नई दिल्ली मुख्यालय से बाहर जाने की अनुमति प्रदान करें ।

छुट्टी के दौरान मेरा पता निम्न होगा ।

अभिषेक कुलकर्णी,
साक्री रोड, हनुमान टेकडी,
धुलिया (महाराष्ट्र)

धन्यवाद ।

दिनांक 15 मार्च 2001
नई दिल्ली

भवदीय,
अभिषेक कुलकर्णी,
सहायक निदेशक

पता –

प्रति,
मा. उपसचिव
भारत सरकार, नई दिल्ली –2

द्वारा

अभिषक कुलकणी,
सहायक निदेशक
नई दिल्ली

* **छुट्टी के लिए** – 2

सेवा में,
प्रशासनिक अधिकारी,
सामान्य प्रशासन विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय,
जलगाँव 1

विषय – छुट्टी मिलने हेतु

महोदय,

निवेदन है कि पिछले दिनों एक कार दुर्घटना में मैं गंभीर रूप से घायल हो गया हूँ और नई दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती हूँ । डॉक्टरों की सलाह है कि मुझे पूर्ण स्वस्थ होने में एक महीने का समय लग सकता है । अतः आपसे अनुरोध है कि दिनांक 14 फरवरी

से 15 मार्च 2001 तक मुझे बीमारी की छुट्टी मंजूर करने की कृपा करें ।

डॉक्टर का आवश्यक प्रमाणपत्र इस पत्र के साथ संलग्न है ।

धन्यवाद

दिनांक 14 फरवारी 2011

स्थान - जलगाँव ।

भवदीय,

अ.ब. कुलकर्णी

लिपिक, प्रशासन विभाग

उ.म.वि. जलगाँव 425001

संलग्न - डॉक्टर का प्रमाणपत्र

पता -

प्रति,

मा. प्रशासानिक अधिकार

सामान्य प्रशासन

उ.म.वि. जलगाँव

द्वारा

अनंत बळीराम कुलकर्णी,

उ.म.वि. जलगाँव

*** शुल्क में रिआयत के लिए - 1**

सेवा में,

माननीय प्राचार्य,

इंदिरा गाँधी कन्या महाविद्यालय,

चेन्नई - 2

विषय - शुल्क में रिआयत

महोदय,

मैंने इस वर्ष प्रथम वर्ष विज्ञान में प्रवेश लिया है । 12 वीं कक्षा में मैंने 95 % अंक प्राप्त कि एक हैं । घर में केवल कमानेवाले पिताजी ही हैं, फिर भी वे मुझे और अन्य दो

बहनों को पढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं । घर की स्थिति साधारण है । अतः आप महाविद्यालयीन शुल्क में मुझे कुछ रिआयत दें तो मेरी पढ़ाई पूरी हो सकती है और एम्.एस.सी. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने का सपना भी पूरा हो सकता है, नहीं तो मुझे अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ेगी ।

मेरी योग्यता और आर्थिक परिस्थिति की विपन्नता देखते हुए मुझे शुल्क में रिआयत देकर अनुगृहीत करें ।

आज्ञाकारी छात्रा,

विहा

ता. 11-8-2012

स्थान – अन्नानगर, चेन्नई

पता

प्रति,

माननीय प्राचार्य,

इंदिरा गांधी कन्या महाविद्यालय,

चेन्नई – 2

द्वारा

विहा संतोषकुमार,

4 अन्ननगर, चेन्नई–2

*** शुल्क मे रिआयत के लिए** – 2

सेवा में,

माननीय प्राचार्य,

करियर इंजिनियरिंग कॉलेज

नागपूर – 2

विषय – शुल्क में रिआयत – मुक्ति

महोदय,

मैं गत दो वर्षों से मेकॅनिकल विभाग में दूसरे वर्ष की परीक्षा पास करके इस वर्ष तीसरे वर्ष में प्रवेश लेना चाहता हूँ । गत दो वर्षों में मैं टेबल–टेनिस राष्ट्रीय स्तर तक खेल चुका हूँ।

व्यक्तिगत एवं कॉलेज के लिए मुझे पुरस्कार भी मिले हैं । प्रथम वर्ष में 'आदर्श-छात्र' उपाधि से मुझे सम्मानित किया गया है ।

मेरे पिताजी सेवानिवृत्त अध्यापक हैं, उन्हें मिलनेवाली पेन्शन से मेरे अन्य दो भाई-बहन और मेरी पढ़ाई के लिए पैसा खर्च करना कठिन है । बड़ी कठिनाई से घर का खर्चा चलाया जाता है ।

आप इस वर्ष की पढ़ाई के लिए शुल्क में अधिकाधिक रिआयत दे तो मैं बड़ी लगन से अपना लक्ष्य पूर्ण कर सकूंगा । आपको विश्वास दिलाता हूँ कि परीक्षा में अव्वल आकर कॉलेज का नाम उजागर करुंगा ।

आशा है मेरे अनुरोध पर आप निश्चित ही सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे ।

विनीत,
भाग्येश मेनन

ता. 12-8-2012
स्थान - रामबाग -30, नागपूर

पता

प्रति,
माननीय प्राचार्य,
करियर इंजिनियरिंग कॉलेज
नागपुर - 2

द्वारा
भाग्येश मेनन
30 रामबाग, नागपुर

3. आ) 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वर्तनी संबंधी नियमावली का ज्ञान'

भाषा में वर्तनी का काफी महत्त्व है । वर्तनी की अशुद्धता लेखन में अनेक समस्याएँ निर्माण करती है । देवनागरी लिपि हिंदी भाषा के लिए स्वीकार की गई है । हिंदी भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के कारण उसका मानक रूप निर्धारित करने की आवश्यकता थी । वर्णमाला में एकरुपता और आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेक रुपता बाधक न हो, इसलिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा अनेक विद्वानों के विचार-विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला और अंकों का मानक रुप निर्धारित किया गया है । वह निम्न प्रकार का है -

मानक हिंदी वर्णमाला –

स्वर	–	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
मात्राएँ	–	ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ
अनुस्वार	–	ं (अं)
अनुनासिकता चिह्न	–	ँ
व्यंजन	–	क् ख् ग् घ् ङ्
		च् छ् ज् झ् ञ्
		ट् ठ् ड् ढ् ण् ड़ ढ़
		त् थ् द् ध् न्
		प् फ् ब् भ् म्
		य् र् ल् व्
		श् ष् स् ह्
संयुक्त व्यंजन	–	क्ष् त्र् ज्ञ् श्र्
हल् चिह्न	–	् (ङ्)
गृहीत स्वन	–	ॲ, ऑ, (ॉ) ख़ ज़ फ़
देवनागरी अंक	–	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ०
भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रुप	–	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0

संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला में तो ऋ तथा लृ भी सम्मिलित हैं, किंतु हिंदी में इन वर्णों का प्रयोग न होने के कारण इन्हें हिंदी मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है ।

किसी भी भाषा के सीखने–सिखाने में सहायक या बाधक बनानेवाले दो प्रमुख तत्त्व हैं । व्याकरण और लिपि । लिपि का एक पक्ष है, सामान्य और विशिष्ट स्वनों के पृथक् प्रतीक–वर्णों की समृद्धि, उनका परस्पर स्पष्ट आकार–भेद, लिखावट में सरलता तथा स्थान–लाघव एवं प्रयत्न–लाघव।

लिपि का दूसरा पक्ष है वर्तनी । एक ही स्वन के लिए विविध वर्णों के प्रयोग से कुछ कठिनाइयाँ आती हैं । इन्हें दूर करना और हिंदी वर्तनी में एकरुपता लाना भारत सरकार का उद्देश्य है । इसलिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने विशेषज्ञ–समिति तय की थी । जिनके द्वारा कुछ सिफारिशें प्रस्तुत की गई, जिन्हें भारत सरकार ने मान्यता दी । अतः भारत सरकार द्वारा हिंदी वर्तनी संबंधी नियम इस प्रकार बने हैं –

1) **संयुक्त वर्ण**

(अ) खड़ी पाई वाले व्यंजन – इनका संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए यथा –

ध्वनि, न्यास, राष्ट्रीय, स्वीकृत, त्र्यंबक, यक्ष्मा, श्लोक, पथ्य, कुत्ता, व्यास, नगण्य, ख्याति, प्यास, सभ्य, डिब्बा, रम्य, लग्न, शय्या, विघ्न, कच्चा, छज्जा, उल्लेख, न्यास आदि

(ब) अन्य व्यंजन

(i) **'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर –** संयुक्त, पक्का, दफ्तर की तरह बनाए जाएँ ।

(ii) ङ्, छ्, ट्, ठ्, ड्,ह्वद्, और ह्, के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ । जैसे वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढ़ा, विद्या, ब्रह्मा

(iii) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रुप यथावत् रहेंगे –
प्रकार , धर्म, राष्ट्र

(iv) 'श्र' का प्रचलित रुप ही मान्य होगा । जैसे श्रम, अश्रु, 'त्र' त् दोनों रुपों में से किसी एक के प्रयोग की छूट होनी – किंतु 'क्र' को 'क्र ' के रुप में लिखा नहीं जाएगा ।

(v) हल् चिह्न युक्त वर्ण से बननेवाले संयुक्ताक्षर के द्वितिय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा – जैसे–द्वितिय, बुद्धिमान् चिह्नित ।

(vi) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे – संयुक्त चिह्न, विद्या, चञ्चल, विद्वान, वृद्ध, बुद्धि आदि ।

2) **विभक्ति चिह्न**

(i) हिंदी के विभक्ति- चिह्न सभी प्रकार के शब्दों में पृथक् लिखे जाएँ – जैसे राम ने, राम को, राम से आदि ।
सर्वनामों में ये चिह्न साथ मिलकर लिखे जाएँ –जैसे–उससे, उसने, उसको, उसपर आदि ।

(ii) सर्वनामों के साथ यदि विभक्ति चिह्न हो तो उनमें से पहला मिलकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए – जैसे – उसके लिए, इसमें से ।

(iii) सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही' 'तक' आदि का निपात् हो तो विभक्ति को पृथक् लिखा जाए – आप ही के लिए, मुझ तक । आप ही के आदि ।

3) **क्रियापद –**

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक पृथक् लिखें उदा. पढ़ा करता है, खाया करता है, कर सकता है, खेल करेगा आदि ।

4) **हाइफन**

इसका प्रयोग विधान स्पष्टता के लिए किया जाता है –

(i) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाएँ – जैसे – राम–सीता, शिव–पार्वती–संवाद, देख–रेख, चाल–चलन, खाना–पीना, रोना–धोना, राम–कृष्ण, राधा–कृष्ण आदि ।

(ii) सा, जैसा आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए – तुम–सा, राम–जैसा, चाकू–से, चंद्र–सा, गुलाम–जैसा आदि ।

(iii) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाएँ, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो ।

भ् – तत्व (पृथ्वी–तत्व) भूतत्त्व (भूत होने का भाव)

अ – नख (बिना नख का), अनख (क्रोध)

अ – नति (नम्रता का अभाव) अनति (थोड़ा)

(iv) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जाता है । जैसे दिव्–अक्षर, दिव्–अर्थक ।

5) **अव्यय –**

तक, साथ आदि अव्यय सदा पृथक् लिखें जाएँ – आपके साथ, यहाँ तक । हिंदी में आह, ओह, तो, भी, न, जब, तब, कब, कहाँ, यहाँ, श्री, जी, मात्र, कि, किंतु, मगर, लेकिन, अथवा, यथा, तथा आदि अनेक प्रकार के अव्यय भाव–बोध कराते हैं ।

कुछ अव्ययों के आगे विभक्ति चिह्न भी आते हैं, जैसे – अब से, जब से, वहाँ से आदि ।

सम्मानार्थक 'श्री' और 'जी' अव्यय भी पृथक् लिखे जाएँ । जैसे – श्री श्रीराम, कन्हैयालाल जी, महात्मा जी आदि ।

6) **श्रुतिमूलक 'य' 'व' प्रयोग –**

इनका प्रयोग विकल्प से होता है । किंतु किए–किये, नई–नयी, हुआ–हुवा आदि में से पहलेवाले (स्वरात्मक) रुपों का ही प्रयोग किया जाएँ । क्रिया विशेषण अव्यय आदि में भी : जैसे – दिखाए–गए, राम के लिए, पुस्तक के लिए, नई दिल्ली ।

जहाँ 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो, वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है । जैसे–स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व ।

7) **अनुस्वार तथा अनुनासिकता चिह्न (चंद्र बिंदु) दोनों प्रचलित रहेंगे । –**

* संयुक्त व्यंजन के रुप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णो में से कोई वर्ण हो तो एकरुपता और मुद्रण–लेखन की सुविधा के अनुसार ही प्रयोग करना चाहिए । जैसे – गंगा, चंचल, ठंडा, संपादक । पंचमाक्षर के बाद कोई अनुस्वार आए या वही

पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रुप में परिवर्तित नहीं होगा । जैसे – वाङ्मय, अन्य, सम्मेलन, चिन्मय, उन्मुख आदि ।

* चंद्र बिंदु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है । जैसे हंस – हँस, अंगना– अँगना ।

8) हल् चिह्न–

संस्कृत के कुछ शब्द हिंदी में हलन्त लगाकर लिखे जाते हैं । हलन्त लगाने का अर्थ है उस व्यंजन से स्वर–पृथक् या ध्वनि का लोप करना है । जैसे – जगत्, सत्, असत्, बृहत् । हिंदी में कुछ – शब्दों में हलन्त लुप्त हो चुका है । उनमें फिर से हलन्त लगाने का प्रयत्न न किया जाएँ । जैसे महान, विद्वान ।

9) स्वन परिवर्तन –

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए । अतः ब्रह्मा को ब्रम्ह, चिह्न को चिन्ह में बदलना उचित नहीं है । इसी प्रकार ग्रहीत–गृहीत, दृष्टव्य–द्रष्टव्य, अत्याधिक–अत्यधिक ही लिखना चाहिए । कुछ तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग से द्वित्यमूलक व्यंजन लुप्त हुआ है उसे लिखने की छूट है । जैसे– उज्ज्वल–उज्वल, तत्त्व–तत्व आदि ।

10) विसर्ग –

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे तत्सम रुप में प्रयुक्त हो तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए – स्वान्तः सुखाय, दुःखानुभूति । यदि उस शब्द के तद्भव रुप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रुप में विसर्ग के बिना काम चल जाएगा । जैसे–दुख–सुख के साथी, दुस्वप्न आदि ।

11) ऐ और औ का प्रयोग –

हिंदी में ऐ, औ का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है । पहले प्रकार की ध्वनियाँ (हैं और) आदि में हैं तथा दूसरे प्रकार की गवैया, कौआ आदि में ।

12) पूर्वकालिक प्रत्यय –

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया को मिलाकर लिखा जाए – जैसे – मिलकर, खाकर, खा, पीकर, रो–रोकर, सोचकर, पढ़कर, लिखकर, आकर, सुँघकर आदि ।

13) विदेशी ध्वनियाँ –

(i) अरबी–फारसी के वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रुपांतरण हो चुका है, उन्हें हिंदी रुप में ही स्वीकार किए जा सकता है । जैसे–कलम, किला दाग आदि । यहाँ इनका शुद्ध विदेशी रुप या उच्चारण भेद बताना आवश्यक है । उनके हिंदी में प्रचलित रुपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ – ख़ाना–खाना, राज़–राज, फ़न–फन । अरबी–फारसी की पाँच ध्वनियाँ (क़, ग़, ख़, ज़, फ़) हिंदी

में आई हैं । उनमें से ज़, फ़ अपने रुप को बनाए रखने में संघर्ष रत हैं । शेष हिंदी में परिवर्तित हो गई है ।

(ii) अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत्त 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उसके शुद्‌ध रुप का हिंदी में प्रयोग करते समय आ की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए । जैसे - डॉक्टर, कॉलेज, हॉल, हॉस्पिटल आदि ।

(iii) हिंदी के कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके दो-दो रुप बराबर चल रहे हैं । जैसे- गरदन-गर्दन, गरमी-गर्मी, बरफ-बर्फ, बिलकुल-बिल्कुल, सरदी-सर्दी, फुरसत-फुर्सत आदि ।

14) **विराम चिह्न -**

भाषा द्‌वारा अभिव्यक्त भावों का बोध कराने के लिए विराम चिह्नों की आवश्यकता होती है । हिंदी में प्रयुक्त होने वाले विराम चिह्न निम्नलिखित हैं -

* पूर्ण विराम - (।) रात का समय था ।
* अल्प विराम - (,) जहाँ धुआँ है, वहाँ अग्नि है ।
* अर्ध विराम - (;) फलों में आम राजा है; फूलों में गुलाब सम्राट है ।
* उपविराम - (:) तुलसी ग्रंथावली : काशी नागरी प्रचारणी सभा ।
* विस्मय चिह्न - (!) अरे, रामू तुम !
* समासक या योजक चिन्ह - (-) अच्छा-बुरा, रुप-रंग
* उद्‌धरण चिह्न - ("   ") कालिदास कृत "मेघदूत" एक संदेश काव्य है ।
* बिंदु संक्षेप चिह्न - (.या.) बी. ए. (बैचेलर ऑफ आर्टस)
* लोप चिह्न - (.....) अरे हाँ ...... अब याद आया ।
* कोष्ठक - () [   ] गोदान (प्रेमचंद) [सरस्वती प्रेस वाराणसी]
* अन्य नियम -
  * शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा ।
  * फुलस्टॉप को छोड़कर शेष विराम आदि चिह्नों का प्रयोग होगा, जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं, यथा - (- --   , ;   ? । : आदि)
  * पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए ।

* संख्याओं का लेखन

हिंदी प्रदेशों में संख्यावाचक शब्दों के उच्चारण और लेखन में एकरूपता का अभाव

दिखाई देता है । केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा संख्याओं का मानक रूप निम्न प्रकार का स्वीकृत किया गया है –

एक	छब्बीस	इक्कावन	छिहत्तर
दो	सत्ताईस	बावन	सतहत्तर
तीन	अट्ठाईस	तिरपन	अठहत्तर
चार	उनतीस	चौवन	उनस्सी
पाँच	तीस	पचपन	अस्सी
छह	इकतीस	छप्पन	इक्यासी
सात	बत्तीस	सत्तावन	बयासी
आठ	तैंतीस	अठ्ठावन	तिरासी
नौ	चौतीस	उनसाठ	चौरासी
दस	पैंतीस	साठ	पचासी
ग्यारह	छत्तीस	इकसठ	छियासी
बारह	सैंतीस	बासठ	सत्तासी
तेरह	अड़तीस	तिरसठ	अठासी
चौदह	उनतालीस	चौसठ	नवासी
पंद्रह	चालीस	पैंसठ	नब्बे
सोलह	इकतालीस	छियासठ	इक्यानबे
सत्रह	बयालिस	सड़सठ	बानबे
अठारह	तैंतालीस	अड़सठ	तिरानबे
उन्नीस	चवालीस	उनहत्तर	चौरानबे
बीस	पैंतालीस	सत्तर	पिचानबे
इक्कीस	छियालीस	इकहत्तर	छियानबे
बाईस	सैंतालीस	बहत्तर	सतानबे
तेईस	अड़तालीस	तिहत्तर	अठानबे
चौबीस	उनचास	चौहत्तर	निन्यानबे
पच्चीस	पचास	पचहत्तर	सौ

* उसी प्रकार हजार, लाख, करोड़, अब्ज, खर्ब आदि लेखन किया जाता है ।
* अपूर्णांक लेखन – 1/2 एक बटा दो (आधा)
  1/4 एक बटा चार (चौथाई)
  3/4 तीन बटा चार (पौना)

* दशमलब - 0 दो दशमलव, 5 पाँचदशमलब आदि ।

गुना (x), जमा (+), नफ़ी (-) (घटाना), तकसीम (ह्न) (भागाकार) आदि का गणित के लिए उपयोग किया जाता है ।

3.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(क) दीर्घोत्तरी प्रश्न

* दीपावली के शुभ अवसर पर अपने मित्र को पत्र लिखिए ।

.....

.....

.....

* जन्मदिन पर अपनी छोटी बहन को शुभकामनापरक पत्र लिखिए ।

.....

.....

.....

* नौकरी के लिए आवेदन पत्र का नमूना तैयार कीजिए ।

.....

.....

.....

* भाई के विवाह के लिए चार दिन की छुट्टी की मांग करनेवाला पत्र तैयार कीजिए ।

.....

.....

.....

* मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, नाशिक को नौकरी के लिए पत्र का नमूना तैयार कीजिए ।

.....

.....

.....

* हिंदी मानक वर्णमाला को प्रस्तुत करते हुए विराम चिह्नों का सोदाहरण परिचय दीजिए ।

.....

.....

.....

(ख) टिप्पणियाँ –

* सामान्य पत्र

.....

.....

.....

* कार्यालयीन पत्र

.....

.....

.....

* पत्र–लेखन की महत्त्वपूर्ण बातें

.....

.....

.....

* पत्र–लेखन के विविध प्रकार

.....

.....

.....

* संयुक्त वर्ण लेखन पद्धति

.....

.....

.....

* हाइफन का प्रयोग

.....

.....

.....

* अनुस्वार और चंद्रबिंदु का प्रयोग

.....

.....

.....

(ग) एक वाक्यीय उत्तरवाले प्रश्न

* मित्र के पत्र में किस संबोधनपरक शब्द का प्रयोग किया जाता है ?

.....

.....

.....

* नव वर्ष, दीपावली की शुभकामना के पत्र में समापन किस शब्द से किया जाता है ?

.....

.....

.....

* कार्यालयीन पत्र के दो विषय लिखिए ?

.....

.....

.....

* पत्र की समाप्ति के बाद किस बात की आवश्यकता होती है ?

.....

.....

.....

* गरदन, सरप का सही रूप लिखिए ।

.....

.....

.....

* र के विविध रूप लिखिए ।

.....

.....

.....

3.4 सारांश

भाव, विचार आदि संप्रेषण का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है पत्र । पत्राचार लेखन की विविध पद्धतियों का ज्ञान आवश्यक है । सामान्यतः पत्र के प्रमुख दो भेद हैं । सामान्य पत्र एवं कार्यालयीन पत्र । सामान्य पत्र के पारिवारिक एवं सामाजिक भेद माने गए हैं । दूरस्थ मित्र, रिश्तेदार , सगे-संबंधियों को निमंत्रण, अभिनंदन, बधाई आदि अनेक कारणों से पत्र लिखे जाते हैं । उसी प्रकार कार्यालय, स्कूल, महाविद्यालयों में कार्यरत कर्मचारी, अधिकारी छुट्टी, वेतनवृद्ध आदि के लिए अपने कार्यालय के मुख्य अधिकारी, मुख्याध्यापक, प्राचार्य को पत्र लिखा जाता है । विषय के कारण पत्र-लेखन का स्वरूप बदलता है । पत्र में संबोधन, समापन के शब्द प्रयोग पर ध्यान देना आवश्यक है ।

पत्र-लेखन के साथ-साथ हिंदी भाषा की वर्तनी के नियमों की जानकारी से शब्द प्रयोग-शब्दों के स्वरूप को समझकर समुचित भाषा-शैली की क्षमता प्राप्त की जा सकती

है । मानक हिंदी वर्तनी के संदर्भ में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की नियमावली पर ध्यान दिया जाए ।

3.5 शब्दार्थ

दूरस्थ	–	दूर रहनेवाले
प्रेषक	–	भेजनेवाला (पत्रादि)
प्रेषित	–	जिसको भेजा जाने वाला है ।
हाशिया	–	कोर, पृष्ठ के चारों ओर का किनारा (म.समास)
अभिवादन	–	प्रणाम करना, नमस्कार
वेतन वृद्धि	–	वेतन में बढ़ती
रिआयत	–	रहम, छूट, सहूलियत
तबादला	–	परिवर्तन,(कर्मचारी आदि) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।
तरक्की	–	पदोन्नति, बढ़ती
आवेदन	–	अर्ज, निवेदन, प्रार्थना
अनुगृहीत	–	उपकृत, जिसपर कृपा–अनुग्रह किया गया हो,
मानक	–	आदर्श, परिनिष्ठित
श्रुतिमूलक	–	सुननेलायक

3.6 स्वाध्याय – क्षेत्रीय कार्य

* मानक हिंदी वर्णमाला और अंग्रेजी वर्णमाला के अंतर को समझाइए ।
* भारतीय अंकों का हिंदी में (१ से १०० तक) लेखन कीजिए ।
* विदेशी ध्वनियों के उदाहरणों की सूची तैयार कीजिए ।
* विराम चिह्नों की उदाहरणोसहित तालिका तैयार कीजिए ।
* भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' कहानी पढकर सुनाइए ।

3.7 संदर्भ अतिरिक्ति अध्ययन के लिए पुस्तकें –

* प्रयोजनमूलक हिंदी पत्रलेखन एवं टिप्पण – डॉ. उर्मिला पाटील, अतुल प्रकाशन, कानपुर ।
* देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण –केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली ।
* हिंदी आलेखन एवं टिप्पण – ओमप्रकाश शर्मा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली ।